प्रेमलता

करणीदान बारहठ



सूर्य प्रकाशन मन्दिर
बीकानेर

प्रथम संस्करण अक्टूबर '६६

प्रकाशक
बारहठ प्रकाशन
पेफाना
(नोहर श्रीगंगानगर)

वितरक
सूर्य प्रकाशन मन्दिर
बिस्सों का चौक
बीकानेर।

मूल्य सात रुपया मात्र

मुद्रक
सत्यम् शिवम् सुन्दरम प्रिंटस
बिस्सों का चौक,
बीकानेर।

PREMLATA—A Novel by Karni Dan Barhat
PRICE Rs 7 00

सभी सत्य हैं और सभी असत्य, यथार्थ भी है और काल्पनिक भी। कितना निकट पहुँच पाया हूँ, यह आप निर्णय लें।

—करणीदान बारहठ

लेखक की अन्य कृतिया

- **हिन्दी साहित्य —**

  १ कलाई का धागा (उपन्यास)
  स्वातन्त्र्योत्तर भारत के राजनीतिक जीवन की कुटिलता एवं धूर्तता का सजीव चित्र--मधुमती उदयपुर।

  २ बडवानल (कविता)
  सभी कविताओं में व्यवस्था, जीवन स्तर का अन्तर, विद्याम, शिक्षक की दशा पर व्यंग घुली अभिव्यक्तियाँ हुई हैं--वातायन बीकानेर कलकत्ता।

- **राजस्थानी साहित्य —**

  १ झर झर कथा
  देश प्रेम री भावना री स्फुरणा ,नारी जाति री प्रेरणा शक्ति, प्रम भक्ति अर कृष्ण-मूर्ति रा दर्शन--आलोचना दिल्ली।

  २ झिंडियो--
  बाल-साहित्य की दृष्टि से बारहठ जी की अपने प्रकार की यह पहली पुस्तक है--शोध पत्रिका उदयपुर।

  ३ शकुन्तला राजस्थानी मे महाकाव्य--

मोहिनी और लता को

प्रेमलता

प्रेमलता

१

मैं जिस गाव को चचा करना चाहता हू वह पजाब और राजस्थान की सीमा पर बसा हुआ है ऐसा मैंने यही पर मालूम कर लिया था। नाम है जसपुरा। मुझे अपने नय पद की बडी खुशी थी। थोडासा दु ख था कि मैं शहर को छोडकर गाव म जा रहा था। आदेश पत्र लेकर घर आया तो महसूस हुआ कि जिन वस्तुओ से मुझे विशेष प्रेम था उनकी विरक्ति मेरे मन को सतप्त करगी। टबल फन' जिसका मैंने गत वर्ष ही खरीदा था बिजली का रडियो जा मेरी इस साल की देन थी विशेष हृदय विदारक थी क्योकि गाव म बिजली नही थी। इनसे मिलने वाली सुविधाओ की चिन्ता जागी। किन्तु मासिक वतन में पूरे सौ रुपये क अतर न गाव मे जाने को प्रेरित किया। टबल फैन तो मैंने अपने एक मित्र को दे दिया। रेडियो बिक नही सका, अत साथ ही ले लिया। अय सामान मुझे छोडकर कहा जाता ?

राज कमचारी का सम्मान उसकी बौद्धिक क्षमता से नही किन्तु उसके पद की महत्ता तथा वतन स्तर से होता है। इसम भी वतन-स्तर स पद की महत्ता का स्थान ऊचा है। मैं यहा पर साधारण क्लक था जिसका

केवल 'डिस्पैच' का काम दे रखा था किन्तु अब मैं जिस पद पर जा रहा था उसके आगे 'आफीसर' तो लगा हुआ था और वेतन में भी अन्तर, अतः मुझे खुशी न होने का कारण ही नहीं था।

मेरे सारे सामान आठ दस नग तो हो ही गये थे। मुझे बताया गया कि मुझे भादरा नामक स्टेशन पर उतरना होगा जहां से उक्त गाव निकटतम था केवल दस मील दूर। वहां से गाव तक बसें जाती हैं। आने जाने की असुविधा नहीं है। रात का नौ बजे वहां गाडी पहुची। इस पद की प्राप्ति से मेरे दिमाग की सुई कुछ घूम गई थी। मेरे उठने बठने तथा बोलने का लहजा भी बदल गया था। कुछ अफसराना सा लहजा ही कहिए आ गया था एक दो दिन मे एक ही व्यक्ति मे इस प्रकार का अन्तर क्यो? यह उस समय मेरे भी समझ मे नही आया था। भादरा स्टेशन पर गाडी ठहरी और मैं उतरा। मैंने आवाज दी कुली! कुली! स्टेशन पर कुली कहा? रोशनी भी पूरी नहीं थी। दो तीन मिट्टी के तेल की बत्तिया टिम टिमा रही थी। गाडी में घुसते हुए एक मुसाफिर ने कहा बाबूजी यहा कुली उली नही मिलेगा। अपने आप ही सामान ढोना पडेगा। आपका सामान कौनसा है? लाओ मैं मदद कर दू। गाडी काफी ठहरती। यहा इंजिन पानी लेता है। सामान गाडी से जैसे तैसे नीचे उतर गया किन्तु यह सामान स्टेशन से बाहर कैसे जायेगा और कहा जायगा यह चिन्ता घर कर गई। मैंने इधर उधर पूछा भी लेकिन कहीं किसी प्रकार का सहारा नही मिला। गाडी निकलने के बाद स्टेशन मास्टर की विशेष कृपा से मेरा सामान स्टेशन के बाहर धर्मशाला में पहुचा। छोटे स्थान पर इन्सान इन्सान के अधिक निकट होता है। मैंने स्टेशन मास्टर के आदमी को आठ

आने दिए। धमशाला के पडित से एक कमरा लेकर रात काटी।

सुबह के समय एक टक्मी मिल गई और म टक्मी स जसपुरा पहुच गया। टक्मी एक लम्बी चौडी इमारत के आगे ठहरी जिम पर 'राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जसपुरा' लिखा हुआ था। यह विद्यालय सडक के दाहिनी ओर था और बाई आर थी दो चाय की दुकान जिनको यहा की भाषा म ढाबा' कहते है। मैंने अपना सामान उतारा। टैक्सी वाले ने मेरे से दस आने लिए मेरी टिकट के और दस आने मेरे सामान के। टक्मी वाले से रास्ते मे सारी जानकारी ले ली थी। उसने मुझे ढाबे पर ही सामान रखने की सलाह दी। ढाबे वाले ने मुझ ऊपर से नीचे तक देखकर जानने की कोशिश की। उसका पहला प्रश्न था, आप स्कूल मास्टर बन कर आए हो क्या ?' यह प्रश्न उसके एक दो साल के अनुभव के आधार पर ही था। मैंने नही मे उत्तर दिया। उसने दूसरा प्रश्न करने की हिम्मत नहीं की। ढाबे पर रखी हुई एक बैंच के पास सामान व्यवस्थित-सा करके जेब से रुमाल निकाला बच को साफ किया और बठ गया। कुछ आराम की सास आई और मैंने एक कप चाय के लिए आडर दिया।

चाय वाले ने पानी चढाया और मेरे सम्बन्ध मे जाने की उत्सुकता से एक सवाल और कर लिया, बाबूजी, आप यहीं आए है या आगे जाना है ?' में समझता था कि यह मेरे बारे मे पूरी जानकारी करना चाहता था, किन्तु मने प्रश्न के अनुसार ही उत्तर दे दिया कि मैं यहो आया था। पानी को उबलता हुआ देखकर उसने पत्ती डाल दी और एक और प्रश्न कर डाला, तो आप कौन से ओहदे पर आये हो ?' यह उसका असली

प्रश्न था जिसका मुझे उत्तर गुर मे ही देना चाहिए था।

मैने कहा फिल्ड ग्राफिसर'

यह नाम उसके लिए बिल्कुल नया था। चाय वाला वैसे उम्र म अधिक नही था केवल २५–३० वर्ष के बीच म होगा किन्तु उसके सामने कितने ही महकमे और अहलकार आए थे। उसके लिए यह कोई नई बात नही थी। वह इतना जरूर जान गया था कि है तो यह अफसर जसा कि मेरे ओहदे के नाम से पता चलता था किन्तु वह यह नही समझ सका कि यह अफसर कौनसे महकमे का है।

उसकी चाय उफन गई। उसने दूध डाल दिया। दूध डालते ही उसको थोडा अवकाश और मिला। उसने इस अवकाश का भी लाभ उठाना ठीक समझा। एक प्रश्न और कर लिया क्या आप नहर के महकमे म आए है? मैं इस सवाल से इतना और जान पाया कि इस गांव म स्कूल के अलावा नहरी विभाग भी था किन्तु मुझे तो चाय वाले का उत्तर देना था। मैने उसे बतलाया कि मैं बीमा कम्पनी का अफसर हू। इसी समय मुझे आभास हुआ कि मेरा पद नहर रेवेन्यू तथा पुलिस क से अफसर का सा नही है। यह तो ऐसा पद है जिसमे मुझे घर–घर पहुचना है जन–जन को समझाना है और बीमे का महत्व बतलाना है। इसलिए अपने काय का यही से प्रारम्भ करना ठीक समझा। चाय तयार थी। मैंने प्याला हाथ म ले लिया और बीमे की परिभाषा उसका महत्व और उसके सुपरिणामो पर प्रकाश डाला। चाय की चुस्किया मुझे अपने महत्वपूर्ण काय म प्ररणा देती रही। बीच–बीच म म चाय की भी प्रशसा करता रहा। मने अपने कॉटरक्ट'

प्रमसता

के लिए इस 'टैक्ट' की भी आवश्यकता समझी।

'टन् टन् टन्' स्कूल की घंटी बजी। घण्टे के बजते ही स्कूल के छात्र भागे जैसे मुक्ति से आह्लाद की लहरें साकार हो उठी हों। छोटे बच्चे खेलने में मस्त हो गए और बड़ों में से कुछ सीधे ढाबे पर आ गये। कुछ बालकों ने बीड़ा के बदले मानो किसी ने सिगरेट और चुपचाप लेकर चलते बने। कुछ छात्र वहीं बैठ गए और चाय बनाने का आदेश दिया। वे कभी कभी तिरछी नजर से मुझे देख भी जाते और साथ में अपने अपने अध्यापकों की समालोचना भी करते जाते। मैं किसी भी नाम से परिचित नहीं था अतः मेरे लिए तो वह बौखलाहट ही था। चाय पीने में विद्यार्थियों ने इसलिए शीघ्रता की कि कुछ ही समय बाद अध्यापकों के आने की आशंका थी। अध्यापकों के आने से पूर्व ही छात्र अपने काम से निवृत्त हो गए। इतने में ही कुछ कुछ पैंट कोट पहने हुए आने से ही साथियों की एक टोली नजर आई जो सीधी ढाबे पर ही आ रही थी। समीप आने पर सबने प्रश्नवाचक दृष्टि से मेरी ओर देखा और फिर मेरे पड़े हुए सामान के ढेर की ओर। मेरा पैंट और कोट व शहरी लिबास और फिर ढेर सा सामान देख कर एक दृष्टि में ही वे यह तो निर्णय ले ही चुके थे कि मैं भी इनकी [illegible] भूमि पर कुछ समय बिताने आया था जिसका आभास [illegible] अध्यापक की उक्ति से हुआ जो इस प्रकार थी, '[illegible] फंसे हैं।' मैं इस उक्ति से असमंजस में पड़ गया कि [illegible] की नौबत कैसे आ गई। मेरे इस आने के पीछे बड़ी [illegible] आशायें थीं जिनको मैं इस सामान के समान [illegible]

उनके हमने मुस्कराते चेहरे से तो कहीं यह आभास नहीं हो रहा था कि वे भी यहां फंसे हुए थे, किन्तु इस अट्टहास के नीचे एक लम्बी फैली हुई मुश्किलों की एक परत थी जिसको मैं उस समय नहीं देख पाया था क्योंकि वह समूह की मस्ती के नीचे गहरी दबी पड़ी थी। चाय के आर्डर के साथ वे उसी बेंच पर बैठ गए जिस पर मैं बैठा था। उन्होंने भी मेरे पर प्रश्नों की बौछार कर दी। उससे मुझे यह अवश्य प्रतीत हुआ कि मेरे जैसे व्यक्ति के आने पर उनके हृदय में कितनी उत्सुकता और प्रसन्नता थी जैसे कि उन्हीं की टोली का एक व्यक्ति उनसे अनजाने से बिछुड़ा हुआ था जिसे उसमें सम्मिलित होने का अवसर मिला हो।

अध्यापक वर्ग में मेरे प्रति पूर्ण सहानुभूति हुई। मेरे दिल में अनेकों प्रश्न थे उस छात्र की तरह जो घर बैठकर तैयारी करता है जिसका कोई अध्यापक नहीं है और उसके हल के लिए सुदूर प्रदेश में जाकर किसी कोने में छिपे हुए सुविज्ञ गुरु से समाधान करके सन्तोष प्राप्त करता है। ये सभी गुरु एक समय के लिए मेरे भी गुरु बन गए। मैंने अपने सभी प्रश्नों के उत्तर पा लिए जो अब तक सैकड़ों मीलों के रास्ते तक हल नहीं हो पाये थे। मुझे ज्ञात हो गया कि यहां रहने के लिए पक्के मकान नहीं मिलेंगे। लगभग सभी मकान कच्चे थे। पानी की व्यवस्था एक कुएं से होती है जो गांव के बीच में है। खाना खाने के लिए खाना बनाने वाला नौकर मिलना केवल कठिन नहीं किन्तु असम्भव है। रोटी स्वयं ही पकाना पड़ेगा। हरी साग-सब्जी नहीं मिलती। सब्जी की एक दो दुकानें हैं जहां कभी कभी सब्जी महीने में एक दो बार आती है जिस पर अध्यापकगण टूट कर पड़ते हैं उसमें

प्रेममना

से बच कर रह गई तो मुझे भी मिल जायगी। धोबी का प्रश्न ही नहीं पैदा होता। कोट, पैंट पहनना छोड़ ही देना पड़ता है। यदि पहनना है तो बारह मील दूर शहर में धुलवा कर मगवाई जाय। बाजी या गन्दे रंग का पैंट पहनने पर कुत्ते पीछे पड़ने का डर रहता है क्योंकि इस गाव के कुत्ते अभी ग्रामीण हैं जो शहरी जीव के देखने के अभ्यस्त नहीं हुए है। डाक सप्ताह में तीन दिन आता है। चिट्ठियां के पहुचने मे दो सप्ताह लगना आसान बात है। डाक बांटने वाला लाने वाला यदि रूठ जाय तो बड़ी मुसीबत है। तार और पोस्टकार्ड में कोई भेद-भाव नही बरता जा रहा। इसमें साम्यवादी आदर्श ही माना जाता रहा है।

उपर्युक्त कठिनाइयों से मैं भयभीत तो हो गया किन्तु मैंने छोड़ने की नहीं सोची। तात्कालिक उपचार के लिए मुझे सुझाव अवश्य दे दिया गया कि दो छात्र अभी आपके पास भेज दिए जायेंगे जिसकी सहायता से मैं सम्पच के यहां पहुच जाऊं जिससे कुछ आगे की व्यवस्था में कुछ सहारा मिल सके। यह इस गाव की परम्परा बताई गई।

टन टन्, टन् टन् फिर घण्टी बजी। मेरे चारों ओर की भीड़ ऐसे उड़ गई जैसे कि एक जगह बैठे हुए पक्षियों में पत्थर फेंक दिया हो। केवल रह गए दो छात्र जिनको मेरे साथ जाने मेरा सामान पहुचाने का कार्यभार सौंप दिया गया था। देहाती छात्रों और शहरी छात्रों का अन्तर उनकी वेश-भूषा तथा आकृति से स्पष्टतः दृष्टिगोचर हो रहा था।

कुछ सामान उठा लिया गया और मुझे बिना सामान ही चलने का अनुरोध किया गया। सड़क पर आते ही हम गाव की ओर चले। यह गाव का पश्चिमी किनारा था। ज्योंही मैंने गाव की ओर दृष्टि डाली मुझे एक विशालकाय गगन चुम्बी चारों ओर परकोटे से घिरी हुई इमारत दिखाई दी। मेरी जिज्ञासा ने प्रतीक्षा का अवसर नहीं दिया। मैंने छात्रों से इस इमारत के लिए प्रश्न किया। उन्होंने बताया कि यह गढ है। यह रावसाहब का गढ है। आज कल रावसाहब यहाँ नहीं रहते हैं। उन्होंने जयपुर में ही अपनी कोठी बनवाली है। इसमें तो केवल उनकी बूढ़ी मा दो चार गोले गोल्यिा (दास दासियाँ) रहती हैं जो बूढ़ी ठकुरानी की सेवा सुश्रूषा करती हैं। उस गढ को देखकर राजस्थान तथा राजपूतों के पुरातन इतिहास का चित्र एकदम मेरे सामने आ गया। वीर, शौर्य का प्रतीक राजपूत मा की आन और शान के लिए प्राण देने वाला राजपूत राणा प्रताप सागा अमरसिंह पृथ्वीराज जैसा राजपूत, हाड़ी राणी, महामाया, किरण का त्याग मूर्ति राजपूत जिन्होंने अपना माथा कटवाया किन्तु माथा नहीं झुकाया और फिर सुरा और सुन्दरी में झूमने वाला राजपूत, अपनी रिआया की बहू बेटियों की इज्जत लूटनेवाला राजपूत प्रजा पर अत्याचार अनाचार करने वाला राजपूत और एक दिन कांग्रेस की कलम से समाप्त हो गया यह शौर्य और वीर्य का बाना पहनने वाला तलवारी राजपूत। मैं आगे बढ़ता रहा और गढ मेरे अधिक समीप आता गया। गढ ऐसा मालूम हो रहा था जैसे उसके शरीर पर बुढ़ापे की काली काली रेखायें अंकित हो गई हैं। यह अडिग, अजर दुर्ग एक दिन इस मिट्टी में मिल जायगा। कई युगों की आंधियां और तूफान की मार्टी

मोटी मिट्टी की चादरें इसको ढक लेंगी और बहुत ऊचा टीला बन जायेगा। फिर इसकी खुदाई होगी। इतिहास वाले यहा आयगे और इसमे से पत्थर निकालेंगे। इसमे दो तरह के पत्थर निकलेंगे। एक पत्थर होगा—लाल सुख जो इसके वैभव और ऐश्वर्य की गाथा कहेगा और दूसरा पत्थर होगा—काला टूटा जो इनके व्यभिचारो की बात बतायेगा और फिर इतिहासकारो को एक डिग्री मिलेगी पी०एच०डी०।

गढ मेरे पास से निकल गया और हम उससे थोडी ही दूर पर सरपच के घर जा पहुचे।

२

सरपच का घर प्राचीन तथा अर्वाचीन का समन्वय था। भीतर के समस्त कमरे प्राचीनता के द्योतक थ जिनम न कही खिड़की, न रोशनदान, नितान्त अन्धेरगुप और बाहर के दो कमरे नवीन ढग से बने हुए थे जिनम खिड़किया रोशनदान बरामदा आदि सब कुछ थे। म एक दिन बाहर के कमरे मे रहा। सामान उसी ढग स अस्थायी तौर पर एक ढेर के रूप म रखा रहा। खाना सरपच के घर से आ गया चाय भी आ गई। थोडा बहुत आने जाने वालो से परिचय भी हुआ। सरपच साहब कही बाहर गए हुए थ। में ज्योत्यो उन्ही की प्रतीक्षा म था। मुझे एक ही आशा थी कि व ही स्थायी तौर पर मेरी यवस्था कर देंगे। मैं अकेला बठा बठा ऊब गया था मैंने साप्ताहिक हिन्दुस्तान का अक निकाला जो मैंने स्टेशन पर स्टाल स खरीद लिया था पढने लगा। इतने मे ही एक बूढी औरत घर के अन्दर से आई। उसके हाथ म कुछ ऊन थी जिसको वह सुलझा रही थी। मुझे चुपचाप पढते देखकर इधर उधर झाकने लगी। फिर वह पास एक खाली पड़ी कुर्सी पर बठ गई। मुझे कुछ ऐसा आभास हुआ कि बुढ़िया भी मरे से परिचय करना चाहती थी। उसने मुझ पूछा बेटा, कहा से आए हो ?'

मने कहा, माँजी, म तो शहर से आया हू। यहा बामा कम्पनी

ा अफसर हू ।

मन इतनी बात उसके अन्य प्रश्नो की प्रतीक्षा से पहले ही कह दी। बुढिया मेरे पद का अर्थ नही समझ सकी। वह कुछ सोच ही रही थी कि मैंने बीमा पर अपना छोटा–सा व्याख्यान उसी की भाषा म दे दिया बुढिया समझ गई। उसने इस सम्बध मे दूसरे प्रश्न नही किए। उसने केवल इतना ही कहा कि वह सरपच की मां थी। मुझे और भी खुशी हुई और मैंने चट अपनी समस्या प्रस्तुत की, मुझे तो रहने का एक मकान चाहिए ताकि मैं टिक कर रह सकू ।

माजी ने मेरी समस्या के साथ सारे गाव मे आने वाले कर्मचारियों का समस्या जोड दी बेटा क्या बताऊ ? यहा तो अहलकार बहुत आ रहे हैं। मेरा बेटा दो साल से सरपच है। रोज एक दो आते ही रहते है। सभी कहते हैं कि रहने के लिए मकान दो। इस गावडे मे मकान कहा ? लोगो के पास पशु बाधने के नोहरे है। सभी अप–टू–डेट बाबू आते है पेंट पहनते है। इनकी औरतें भी धोती जरूर पहननी है। अभी–अभी कल परसों खेतो म दवाई डालने वाला एक आया था। क्या कहते है उसे ? मने बीच ही मे बताया, ग्राम सेवक । माजी आगे कहती गई मुझे इनके नाम ही बोलने नही आते। उसने घर मागा, उसको बडी मुश्किल स हरदत्त के घर टिकाया। एक ही कमरा है उसके पास। कुछ दिन पहले वह एक बुखार की गोली देने वाला आया। वह भी यही पास ही रहता है। मास्टर तो पचीसा है। क्या करें बेचारे ? राज भेज देता है। आना भी पडता है। पेट भूखा है बेटा, इस पेट का रोना है। बेचारे पाच–पाच सौ कोस से आते है। सबके लिए कहीं न कही

जगह करनी ही पडती है।'

माजी के चेहरे पर कुछ विचारो की रेखाये चित्रित हुई। मुझे ऐसा अनुभव होने लगा कि माँजी मेरे लिए ही सोच रही थी। वह कुछ सोचती हुई छत की ओर देखने लगी। फिर उसने एकाएक प्रश्न कर लिया तू अकेला है या बाल बच्चे लायेगा?

मुझे इस प्रश्न के अनेको बार जवाब देने पडे। सत्य को भी घुमाव देकर कहने मे बुद्धिमत्ता है। इसलिए मुझे इसको विचारने की आवश्यकता नही पड़ी। मैने वैसे ही उत्तर दिया जैसा कि उत्तर दिया करता था 'माजी मैं अपनी मा को लाऊगा। वह भी आपकी ही उमर की है। बडी अच्छी है माजी।

माजी शायद इस उत्तर से सतुष्ट हो गई। वह मुझे ऊपर ले गई और उसने चौबारा दिखलाया और कहा तू कुछ दिन यहा टिक जा। तेरी मा आ गई तो हम पीछे का मकान दे देंगे। वहाँ पहले एक मास्टर रहता था। बडा भला आदमी था वह। अब किसी शहर मे चला गया। अच्छा मुझे तो अब काम करना है। भैसे आने वाली है। तू अपना सामान ले आ। परदेशी आदमी है भाई। वक्त तो गुजारना है। इस प्रकार कहती हुई माजी नीचे आ गई।

मैने जल्दी जल्दी अपना सामान ऊपर कमरे मे व्यवस्थित किया। दो आलमारिया थी। उनमे मैने अपना कीमती सामान रख दिया। एक मेज पहले से ही पडी थी। उस पर कुछ पुस्तकें काच कधा जमा दिया। पलग पर बिस्तर बिछाकर रजाई, कम्बल ठीक लगा दिए। पाच सात तस्वीरें जो मै अपने साथ लाया था कीलो पर गाड

दी। इस प्रकार मैंने अपना कमरा अच्छी तरह सजा कर जमा लिया। मैं एक चिंता से मुक्त हो गया।

मैं शाम को गाव के बाजार मे गया। बाजार क्या था, केवल चार दुकानें। मुझे अध्यापक बन्धुओ की बातें याद आ गई। आटा, सब्जी कुछ भी नही। मुझे मालूम हुआ कि आटा चक्की पर मिलता है। यह चक्की भी तीन चार सालो से लगी है। इससे पूर्व स्त्रिया घर की चक्की से ही पीसती थी। चक्की से दो सेर आटा ले आया। एक दुकान म कुछ आलू मिले। दो आने के आलू ले लिए। उसी दुकान से मिट्टी का तेल मिल गया। कुछ मिर्च मसाला भी ले लिया। यह मेरे शाम के खाने की व्यवस्था थी। स्टोव मेरे पास था ही। इस काम में मुझे दो घण्टा लग गया। सामान लेकर मैं घर पहुचा। अब इस घर मे मेरा अपनत्व स्थापित हो गया। इस समय घर भरा पूरा था। बच्चे, स्त्रिया गायें भैसे ऊट सभी की उपस्थिति इस समय थी। केवल पुरुष अब तक नही आ पाये थे। मैंने स्वभावत नीचा मुह करके सीढिया के सहारे ऊपर चला गया। स्टोव म तेल डाला हवा दी तेल बाहर आया। दियासलाई लगाई और स्टोव सू सू करके अपने कर्त्तव्य म लग गया। स्टोव की आदत है कि वह केवल अपने तक ही सीमित रखता है। किसी दूसरे की सुनने नही देता।

सूर्य की अंतिम किरणो ने मेरी ओर झाका और लुप्त हो गई।

मैं आटा गूद चुका था। सब्जी मेरी तैयार हो गई। तवा ऊपर रख चुका था। इतने म दरवाजे से एक आवाज आई, 'बुद्दू'।

मैने दरवाजे की ओर झाका। बिग्ररेवालों की एक नवयुवती

नीचे आती हुई नजर आई। केवल उसके हाथ और बाल दिखाई दिए। दोनों शरीर पर हल्के नीले रंग की साधारण धोती थी। मैं केवल पीठ ही देख सका अतः ठीक ठीक अनुमान नहीं लगा सका, किन्तु मैं 'बुड्ढ' का अर्थ नहीं समझ सका मैं एक अजनबी, अजनबी देश और अजनबी लोग बाग और फिर यह अजनबी शब्द जो मैं इस आयु में सुनने का अभ्यस्त नहीं था आज इस नवयुवती से सम्भवतः नवयुवती ही था, क्योंकि मैं उसे पूरा नहीं देख सका था 'बुड्ढ' शब्द कैसे सुन रहा हूं ? मैं अपने अनुमान ही लगाता रहा। कोई भी समझ पाया हुआ पुरुष या स्त्री एक समझ पाये हुए पुरुष या स्त्री को इस नाम से कैसे पुकार सकता है ? यह बात समझ में नहीं आ रही थी। फिर मैं इस निर्णय पर पहुंचा कि शायद सुनने में भ्रम हुआ होगा।

मैं अपने काम मे व्यस्त हो गया। पहले दरवाजे की ओर मेरी पीठ थी। अब मैंने दरवाजे की ओर करीब करीब मुंह कर लिया। इतने में वही नवयौवना पुनः आई और मेरी ओर झांककर ये शब्द फिर कह गई बुड्ढ तेरी बुढ़िया कहां गई ? तू खुद हाथ से रोटी पका रहा है।

उसने अपने प्रश्न के उत्तर की प्रतीक्षा नहीं की और चौबारे के दूसरी ओर चली गई। वैसे यह चौबारा अर्थात् चार द्वारों का नहीं था किन्तु यहां के लोग छत के एक कमरे को चौबारा कहने के आदि हैं अतः मैं भी चौबारा ही कहूंगा। मैं उसे इस बार ठीक ठीक देख चुका था। रंग गोरा, अधिक गोरा नहीं गेहुंआ कहिये आँखें बड़ी बड़ी नाक नुकीला पतले पतले होठ, भरा हुआ चेहरा और शरीर भी भरा हुआ यानी मन भावना शक्ल सूरत। कान नाक कुछ भी दिखाई नहीं दिया। हाथों में दो चार चूड़ियां होंगी। इस थोड़ी सी झलक में इतना ही अनुमान लगा सका था।

किन्तु रह रह' और फिर एक बार 'बुन्निया जोड़ गई', यह माजरा क्या था? यह समझ में नहीं आ रहा था।

मेरा [illegible] राग ठौर था। वह आई और कमरे में घुस गई। [illegible] के पास बैठ गया। वह मेरे निकट बैठ गई और यह कहते हुए 'हट, [illegible]', [illegible] आटा मेरे हाथ से छीन लिया और आटे को दो भागों में विभक्त कर दिया। मुझे बड़ा अचम्भा-सा लगा, किन्तु मैं सतर्क होकर देखता रहा। उसने उस आटे की एक पुरुषाकार मूर्ति बनाई और [illegible] के आकार का और उस पर हाथ रख 'हा, हा हा हा' का [illegible] करती चली गई। मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। मैंने उन [illegible] का आकार लिया और रानी [illegible]।

नीचे जाती हुई नमर भाई। केवल उसके हाथ और कान दिखाई दिए। शेष शरीर पर हल्के नील रग की साधारण धोती थी। मैं केवल पीठ ही देख सका अत ठीक ठीक अनुमान नही लगा सका किन्तु मैं 'बुढू' का मत नही समझ सका मे एक अजनबी अजनबी देश और अजनबी स्थान आप और फिर यह अजनबी शब्द जो मे इस आयु म सुनने का अभ्यस्त नही था आज इस नवयुवती से सम्भवत नवयुवती ही थी, क्योकि मैं उसे पूरा नही देख सका था 'बुढू' शब्द कैसे सुन रहा हू ? मैं अपने अनुमान ही लगाता रहा। कोई भी समझ पाया हुआ पुरुष या स्त्री एक समझ पाये हुए पुरुष या स्त्री को इस नाम म कसे पुकार सकता है ? यह बात समझ म नही आ रहा थी। फिर मैं इस निर्णय पर पहुचा कि शायद सुनने म भ्रम हुआ होगा।

मै अपने काय मे व्यस्त हो गया। पहले दरवाजे की ओर मेरी पीठ थी। अब मैंने दरवाजे की ओर करीब करीब मुह कर लिया। इतने म वही नवयौवना पुन आई और मेरी ओर झाककर य शब्द फिर कह गई बुढू, तेरी बुढिया कहा गई ? तू खुद हाथ स रोटी पका रहा है।

उसने अपने प्रश्न के उत्तर की प्रतीक्षा नही की और चौबारे के दूसरी ओर चली गई। वैसे यह चौबारा अर्थात् चार द्वारो का नही था, किन्तु यहा के लोग छत के एक कमरे को चौबारा कहने के आदि है अत म भी चौबारा ही कहूगा। मैं उसे इस बार ठीक ठाक देख चुका था। रग गोरा अधिक गोरा नही गेहुआ कहिए, आँखें बडी बडी नाक नुकीला, पतले पतले होठ भरा हुआ चेहरा और शरीर भी भरा हुआ मानो मन भावनी शकल सूरत। कान, नाक कुछ भी दिखाई नही दिया। हाथो में दो चार चूडिया हाथी। इस थोडा सी झलक में इतना ही अनुमान लगा सका था।

किन्तु यह 'बुड्ढू' और फिर इस बार 'बुढिया जोड़ गई, यह माजरा क्या था ? यह समझ में नही आ रहा था।

मेरी अंतिम रोटी शेष थी। वह आई और कमरे में घुस गई। मैं चक्कर में पड़ गया। वह मेरे निकट बैठ गई और यह कहते हुए हठ ले मैं बनाती हूं आटा मेरे हाथ से छीन लिया और आटे को दो भागो में विभक्त कर लिया। मुझे बड़ा अजीब सा लगा, किन्तु मैं खड़ा होकर पलग पर बैठ गया। उसने उस आटे की एक पुरुषाकार मूर्ति बनाई और एक मूर्ति स्त्री के आकार की और तवे पर डाल कर 'हा हा हा हा' का अट्टहास करके चल गई। मेरे आश्चय का ठिकाना नही रहा। मैंने उन आकृतियो को पुन रोटी का आकार दिया और रोटी सेकी।

प्रेमलता

३

निस्तब्ध रात्रि

धवल चन्द्रिका

चारों ओर सन्नाटा

धरती सो रही थी। मुझे नींद नहीं आई। करवट बदल बदल कर सतत प्रयास कर रहा था किन्तु सफलता नहीं मिल रही थी। प्रत्येक की नींद का उचित स्थान होता है। परिवर्तित स्थान पर उसको आने में विलम्ब होता है सम्भवतः वह ढूंढती रह जाती है। इस अनजान स्थान पर मेरी भी यही स्थिति थी। दरवाजा बन्द कर चुका था। सर्दी इतनी घनी नहीं थी। मैंने खिड़की खोली। सामने गढ़ की इमारत अपनी विशाल काया को पावनता का पावन चान्दनी से धो रही थी। मैं उसको एकटक देखता रहा किन्तु मुझे उस युवती के कहे हुए शब्द रह रह कर याद आ रहे थे— बुड्ढ़ 'बुढ़िया'। इन शब्दों का एक वृत्ताकार अविराम गति से मस्तक में घूमने लगा। यह चक्र चलता चलता दुर्ग की दीवारों पर जा अटका बुड्ढ़ा, बुढ़िया। क्या यह दुर्ग भी बुड्ढ़ा है जो अपनी सत्ता के समाप्त होने पर व्यंग्य का आधार बन रहा है। एक युग था जब यह गौरव और पुरुषार्थ का प्रतीक था और दूसरा युग आया तब यह आतंक और भय का द्योतक बना

और आज इस युग म दशक इम पर थूकता है व्यग कसता है, इसे घणा करता है फिर भी यह खडा है—वुद्ध । इसके अग प्रत्यग शिथिल हो गय है । इसके मनोभाव वद्ध हो गए है । काली काली भुरिया से इसकी काया बदरग हा गई है—वुड्ढा ।

मैंने अपनी खिडकी बद करली । दो चार करवट लेकर निद्रा का निमत्रण दिया, कोई प्रत्युत्तर नही । मने अपना लम्प जलाया और फिर 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' को लेकर बैठ गया किन्तु पक्तिया म वही वुद्ध और वुढिया । जो कुछ पढ रहा था समझ मे नही आया ।

इतन म बाहर जीप के घरघराहट की आवाज आई । जीप दरवाज पर ठहरा । कुछ धीर धीर बालन की आवाज भी सुनाई दी । बाहरक दरवाज का खट खट, खट खडकाया गया । द्वार खुला । सोई हुई नीद जाग गई । घर म हल्की हल्की चहल पहल सुनाइ दी । मुझे कुछ एसा आभास हुआ कि जीप से दो तीन आदमी उतरे थे । घर की औरतें जाग गई थी । खाने पीने की तयारिया हा रही थी । खाना बन चुका था । खाना खाया जा रहा था । साथ साथ म बातें चीतें भी हो रही थी । इतने म किसी ने आगन म जोर मे पूछा— ऊपर रोशनी कैसे है ?

किसी न उत्तर दिया—कोई अफसर है । माजी ने ठहराया है ।

फिर प्रश्न उठा—कितने दिन के लिए ठहरा है ?

फिर उत्तर—जब तक उसकी मा नहीं आ जाती ।

फिर दूसरी बातें शुरू हो गई जो मरे समझ म बाहर थी । मैंन प्रयास अवश्य किया किन्तु वे इतनी मन्द स्वर म थी कि मैं सुन नही सका । मुझे भय था कि कही मरे ही सम्बन्ध में तो टीका टिप्पणी नही हा रही

हो। मुझे ऐसा कुछ प्रतीत नही हुआ। मेरा अनुमान था कि शायद सरपच आया था और उसके साथ दो चार आदमी और होगे। इसी उधेडबुन म मुझे कब नीद आई मुझे ज्ञात नही। मैं सो गया।

मेरा अदाजा ठीक निकला। जब मैं चाय पी रहा था एक खद्दरधारी सफेदपोश गले म पिस्तोल डाले एक पुरुष ने मेरे कमरे मे प्रवश किया। यह सरपच ही था। गाव का मुखिया जिस पर समस्त गाव का उत्तरदायित्व इनके अधिकारो और कत यो के सम्ब व मे बहुत कुछ पढा था। मेरे हृदय मे इस जाति के प्रति बडा सम्मान था। फिर इस पुरुष के प्रति इसके साथ अपनत्व का भी मिश्रण हो गया था क्योकि मं इसके मकान म था। मैंने उठकर उसका अभिवादन और एक कप चाय स आवभगत की। चाय की चुस्की लेते हुए सरपच ने मेरा परिचय लिया। मने सरपच को भी अपने पद का महत्व बतलाया। बातो ही बाता मे उसने मुझे बतला दिया कि वह इतने दिना मडी मे था। पचायत समिति की मीटिंग थी। इसम बहुत स निणय लेने थे। आते समय कुछ सीमट के कट्टे भी ले आया। प्रधानाध्यापक का क्वाटर बन रहा था। स्कूल में एक दो कमरे और बनाने थे। स्कूल म सादम खुल रही थी। प्राइमरी हैल्थ सण्टर खुल चुका था। इस प्रकार को विकास कार्यों की बात बतलाई और व्यवस्था का एक कृत्रिम-सा रुप प्रदर्शित करके सरपच चलता बना। उसके जाने के बाद मने अनुमान लगाया कि सरपच अधिक शिक्षित नही था। वह जो कुछ जानता था वह केवल अनुभव के आधार पर ही था। अवस्था म भी पतीस चालीस से अधिक का नही था। गाधी और नेहरू क नामा से अधिक परीचित था।

छोटे मोटे कांग्रेस के सिद्धान्त भी जानता था। विशेषज्ञ था वह केवल राजस्थान की वर्तमान राजनीति का और वह भी बाजारू। स्वभाव से मुझे आदमी बहुत अच्छा और उदार लगा जिससे मेरे रहने के व्यवस्था के सम्बन्ध मे अंतिम चिन्ता भी मिट गई।

आज मेरा काम करने का 'मूड' बना। स्नानादि से निवृत होकर मैंने कपडे पहिने और बीमा की फाइल लेकर चला। यह बीमा की फाइल नही बीमा का एन्साइक्लोपीडिया था। इसमे क्या नही था ? बीमा की भूमिका से लेकर उपसंहार तक, जीवन से लेकर मृत्यु के बाद तक, जीवन की महत्ता से लेकर मृत्यु की महत्ता देने तक। यह थी इस फाइल की विशेषता। मैं गाव की गलियो से निकलता हुआ स्कूल की ओर चला। मुझे परिचय करना था इतना परिचय कि समस्त गाव के व्यस्क स्त्री-पुरुष मेरी बीमा की डोरी से जकड जायें और मृत्यु के उपरांत भी इसमे जकडे रहे। मेरी कंपनी मे जीवन का महत्व नही, मृत्यु का था। किन्तु यह बात किसी को कहने का नही थी। थोडा-सा संकेत देने को ही थी और उस संकेत से ही एक भयावह वातावरण पैदा होता था। जीवन तो जीवन है किन्तु हम उसको मृत्यु कहते हैं और हम मृत्यु को ही जीवन कहते हैं। इन संकेतो से कुछ तो हमारे चुंगल मे आ जाते हैं और कुछ पलायन कर जाते हैं। यह क्रम है क्रम मे गति है और इस गति का ही नाम जीवन है और फिर आगे को कौन जानता है ?

हां, तो मैं गलियों मे से चल रहा था। गलिया से मिलन हो रहा था मेरा विशेषज्ञ कुत्ता से जो गुर्राकर मुझे परदेसी होने का संकेत दत थे और पानी की पनिहारिनो को जो घूंघट के वातायन से मुझे झांक लेती थी और उनके साथ कुछ नवबालाओ का जो घडे के भार

की उपेक्षा करती हुई खुले उन्नत उरोजा से दर्शक का अभिनन्दन करती थी। बहुत कम बुढ़िया मिली जो बोझ से मुक्त होने की नियत से रास्ता नाप रही थी। गलियों को पार करके मैं स्कूल पहुंचा।

मैं स्कूल की चारदीवारी के भीतर था। यह सरस्वती का सम्माननीय मंदिर था। एक समय था जब इन ग्रामों में कहीं कहीं स्कूल होता था और वह भी प्राइमरी जिसमें एक ही अध्यापक होता था जो सुबह से शाम तक गांव के इने गिने छोकरों को घेर कर अकेला ऊंघता रहता था। चिलम की सुट से अपनी ऊंघ को खोलता और पांच दस मिनट दो चार प्रश्न बतला कर फिर ऊंघने लगता। फिर उंघ खुलती तो दो चार छोकरों को खेत से मतीरे लाने भेज देता दो चार को घर में पानी भरने और एक दो को घर में इंधन की व्यवस्था करने भेज देता। कच्चे बिना खिड़की और रोशनदान के कमरे में ही सारी कक्षायें होती एक से चार तक। पांच छः महीनों से एक डिप्टी साहब आते और सभी का इम्तिहान लेते। इम्तिहान क्या लेते ? उस दिन सारे घरों से दूध आता खीर बनती खोमा निकलता और डिप्टीसाहब घी, चने बाजरी खोए का पूरा सामान करके गांव से बिदा लेते, जैसे बेटी अपने बाप के घर से बिदा ले रही हो। उसी स्थान पर यह उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का भवन खड़ा है। उस प्राइमरी स्कूल की इमारत के अवशेष अब भी अपने पुरातन गाथा की स्मृति लिये विद्यमान थे। विद्यालय के कक्षा की मैंने गणना की। पूरे पन्द्रह कमरे और उनके मध्य में एक सभा-भवन। इमारत बड़ी रमणीय लग रही थी और गांव के कच्चे घरों में अपनी सुषमा पर गर्व से मस्तक उन्नत किए हुए खड़ी थी। मैंने बरामदे में प्रवेश किया। उसके आगे ही 'प्रधानाध्यापक' हिन्दी

म लिखा हुआ था।

● ● ● ●

प्रधानाध्यापक का कक्ष,

आगे लटकी हुई चिक,

मैंने भीतर प्रवेश किया। मेज पर झुके हुए प्रधानाध्यापक, आंखों पर चश्मा, शेव किया हुआ चेहरा, न भरा हुआ न डूबा हुआ, शरीर ठीक-ठीक। पेंट और कोट का रंग अलग-अलग, बूट काले उतारे हुए। मैंने नमस्ते किया। थोड़े से खड़े हुए, चश्मा उतारा और हाथ मिला कर बैठ गए और बैठने के लिए कहा।

मैं बैठ गया। मनीबैग से कुछ फाइलें निकाली और अपना संक्षिप्त परिचय दिया। सुनकर उन्होंने प्रसन्नता प्रकट की और बीमे के महत्व पर सहमति भी। मैंने दो प्रस्ताव रक्खे। पहला—कुछ काम करने वाले एजेंट चाहिए विशेषतः जिनकी धर्मपत्नियां शिक्षित हों या साक्षर, क्योंकि राजकीय कर्मचारी अपनी धर्मपत्नी के नाम से ही कार्य कर सकते हैं। दूसरा—वे जो बीमा कराने के इच्छुक हों।

प्रधानाध्यापक वयोवृद्ध होने के बावजूद भी बात करने में पटु और चुस्त थे। उन्होंने तुरंत उत्तर दिया—मैं आपके दूसरे प्रस्ताव का पहले उत्तर देता हूं। सबसे पहले मैं अपना प्रश्न लेता हूं, क्योंकि आप सीधे मेरे पास आए हैं। मैं सात बच्चों का बाप हूं। मेरा वेतन इस समय चार सौ के लगभग है। उसमें से सरकार कुछ बीमें का काट लेती है। शेष राशि में मैं सौ रुपये अपने एक लड़के के लिए भेजता हूं जो अलवर में ओवरसियर की ट्रेनिंग ले रहा है और दूसरे को सौ

रुपये और भेजता हू जो बीकानेर में शाईस पढ रहा है। अब रह गए केवल एक सौ पच्चत्तर। अब बताइये मैं इस तुच्छ राशि म स क्या बचाऊँ आप शायद आश्चर्य करेंगे कि मैं किस प्रकार खर्चा चला रहा हूँ।

मुझे प्रधानाध्यापक की विवशता पर तरस आया। मुझे अपने प्रश्नो के चौथाई हिस्से का उत्तर मिल चुका था किन्तु वे अपनी ही परिस्थिति पर बोलते गए शायद इस विषय पर उनको बोलने म मजा आ रहा था। वे बोले देखिये साहब मैं तीन साल से इस शाला म हू। मेरी शाला का परीक्षा फल इस जिले म प्रथम या द्वितीय स्थान पर आता है। मैं दो बार बीकानेर गया और अपनी सारी परिस्थिति अपने साहब के सामने खोल कर रख दी किन्तु उनके कानो पर जू तक नहीं रेंगी। मजा साहब काम किसका बनता है ? उनका जिनकी बडी-बडी सिफारिशें हो मंत्री से नीची नही या बाबू को देने को पैसा हो। मैंने अब कसम खाली है कि उनके पास जाना ही नही।

म इस बडप्पन के नीचे दबे खोखलेपन से घबरा गया और चुपचाप सुनता रहा। व अपनी व्यक्तिगत बातो पर आगे नही बोले और दूसरे प्रश्न के अग्रिम भाग पर आए। कहने लगे—रही मेरे अध्यापको के सम्बन्ध म। सो बात कुछ ऐसी है कि मेरे यहा चार पाच वरिष्ठ अध्यापक हैं। जिनका वेतन स्तर ठीक है। उनमे से कुछ बोम में फसे हुए अवश्य होगे, क्योकि आज कल आपके साथी छोडते किसको हैं ? नही फसे है तो आपके जाल म अवश्य ही फस जायेंगे, जायेंगे कहा ? अब रहे बारह अध्यापक और सम्भवत वे इन्स्योड' नही हैं। होगा तो एक दो। सरकार बीमा के

सबसे पैसा काट लेती है। किन्तु प्राइवेट मेरी दृष्टि में नहीं हैं। आप स्वयं बात चीत करलें। और अब रहा आपका पहला प्रश्न तो इसके लिये आप हमारे बाबूजी से बात चीत करें। वे नवयुवक हैं और उनकी धमपत्नी मैट्रिक पास है और आपको क्या चाहिये ?

मैं प्रधानाध्यापक के बाला के लहजे तथा उनकी स्पष्टवादिता से बहुत प्रभावित हुआ और मैंने उनके बाबूजी से बात चीत कराने का प्रस्ताव रक्खा।

प्रधानाध्यापक ने जोर से आवाज दी बाबूजी और कक्ष के पार्टीशन के दूसरी ओर आवाज आई हां जी।

प्रधानाध्यापक ने बाबूजी से बात चीत करने का संकेत किया।

बाबू और प्रधान के बीच का पार्टीशन लकड़ी की आलमारियां का बना हुआ था। आलमारियों की नवीनता को देखकर विद्यालय के नये पन का अन्दाजा लगाया जा सकता था। मैंने अपने फार्म ज्यों के त्यों अन्दर रक्खे और पार्टीशन के बीच के छोटे से द्वार से बाबूजी की तरफ गया। कुर्सी पर बैठा हुआ बाबू सचमुच बाबू दुबला पतला शरीर गौरवर्ण का चेहरा, आंखों पर काली फ्रेम का चश्मा, सामने मेज मेज पर घण्टी कलम दवात हाथ में पैन और सामने बैंच की दो कुर्सियां। मेरे अन्दर प्रवेश करने का खर खर का भी उनको आभास नहीं हुआ कि कोई अन्दर आया था। वे यथावत काम में व्यस्त रहे। संभवतः रीकॉर्ड में कुछ ऐन्ट्रियां कर रहे थे।

मैं जाकर सामने बैठ गया। उन्होंने एकाएक मुंह ऊँचा किया

ठहरने का भी प्रश्न आ गया। मैंने बतलाया कि मैं सरपंच के यहाँ ऊपर के कमरे में जम गया था। साथ में भलमनसाहत की बातें आ गयीं। सभी ने सरपंच की और विनायक मास्टर जी की बड़ी प्रशंसा की। मैंने बतलाया कि मैं भी ऐसा अनुभव कर रहा था। इतने में दो अध्यापक और आ गए। उनसे मेरा परिचय नहीं था। पहले से उपस्थित अध्यापकों ने मेरा उनसे परिचय करवाया। वे भी आ बैठ गए। अब सीधी बात मेरे काम के विषय में चल पड़ी जिस उद्देश्य से मैं आया था। मैंने बीमे की महत्ता पर प्रकाश डाला। बुद्धिजीवी वर्ग पर तर्क के आधार पर मनवाना बड़ा कठिन काम होता है। मेरा यही कहना उचित समझा कि पैसा तो आया हुआ खर्च हो ही जाता है। कुछ बचा लिया जाय तो बच जाता है। और कोई रास्ता नहीं है। इस बहाने से बचत हो ही जाती है।

एक अध्यापक जो वरिष्ठ ही थे कहने लगे आप बचत की बात करते हैं। मुझे यहाँ आए हुए दो वर्ष हो गए। पहले मैं स्कूल में था। वहाँ मैं सहायक अध्यापक था। आप ठीक मानना कि मेरी पूरी तीन सौ की मासिक आय थी। मैं इस वरिष्ठ अध्यापक बनने के लोभ में यहाँ फँस गया। आपको मैं ठीक कह रहा हूँ कि मैं यहाँ एक महान् संकट में हूँ। रहने के लिए जो मकान है उसमें न रोशनी आने का

चौधरी के चक्कर काटने पर लकडी के लिए हा' भरी जाती है और फिर किसी का ऊंट मागा जाये। पानी के लिए एक चपरासी को महीने के दस रुपये देता हूँ तब कही जाकर नोन घड पानी रखता है और उस पर भी खुशामद और नखरे अलग इससे तो भारतीय सकट कानून ही बहत्तर है। यह तो पूवज म के कर्मों का ही फल है।'

उपरोक्त भाषण समाप्त हो ही पाया था कि दूसरे अध्यापक ने दूसरा भाषण प्रारम्भ किया सभी लोग यहा पर तग है, साहब। हम हर साल अपने अफसरो के आगे भीख मागते हैं किन्तु हमारी कोई सुनता ही नही। यहा तो पसो की खीर है। इस सरकार की तो अक्ल ही मारी गई कि ऐसे स्थानो पर हायर सकण्डरी खोल दिए गए। निकट के शहर मे तो हाई स्कूल और इन वाहियात गावो म हायर सैकण्डरी। इन निकटवर्ती गावो म तीन हायर सकण्डरी ह। छात्रो की सख्या कितनी? कही डेढ सौ कही पौन दो सौ और कही कही पर केवल सौ ही है। अब आप ही बतलाइये कि इतने लडको पर इतने पैसे खच करना बेवकूफी नही तो क्या है?'

इन भाषणो के बीच मेरा विषय पता नही कहाँ लुप्त हो गया था? मुझे इस विषय पर विचार ही नही करना था कि बुद्धिजीवियो को इन निबुद्धियो म क्या फर्क किया गया? मुझे अपने काम से काम था। मै चाहता यह था कि इन भाषणो का मोड किसी प्रकार अपने विषय पर लाऊ, किन्तु काय कठिन था। मैने भाषण की धारा को तोडने के प्रयास से एक प्रश्न की बाधा डाली। मैने पूछा आप लोगो के बीमे के सरकार की ओर से भी पसे काटे जा रहे हैं न।'

'हाँ सा्हब करीब करीब सभी के, एक अध्यापक बन्धु ने जवाब दिया।

व्याख्यान की धारा टूट गयी और अवसर पर मैंने काबू पा लिया। बचत के लाभ म आकर चार अध्यापकों का बीमा – प्रस्ताव हुआ। दो दो हजार के हिसाब से आठ हजार का हिसाब बन गया। म प्रसन्न था। चाय मगवाई गई। सबने चाय पी। मैंने पसे दिए। यह मेरे काय का प्रथम चरण था।

४

उसी दिन खाने खाने से निवृत्त होकर पलग पर लेटा ही था कि माजी आ गई। कमरे म प्रकाश सजीव होकर फल रहा था। माजी ने कुर्सी ली और बठ गई। वह आज प्रसन्न मुद्रा म थी और काय से भी निवृत्त होकर आई थी। मेरा मूड भी आज अच्छा था। माजी ने बैठते ही कहा, बेटा तेरा नाम तो बताया ही नही।

मन कहा, माजी मुझ प्रकाश कहते हैं।

माजी– नाम तो अच्छा है। अच्छा कितने भाई बहन हो ?'

मने कहा– दो भाई दो बहन।'

माजी–'किते बड किते छोटे।'

म– एक बडा भाई, एक बडी बहन और दो छोटे।'

माजी– पढते है ?'

म––'बडा भाई नौकरी मे है, बिजली के महकमे में। बड़ी बहन दिल्ली ब्याही हुई है। दोनो छोटे पढ रहे है।

माजी–– पढाई बडी अच्छी है, बेटा। मरे तीन लडके और दो लडकियाँ है। बडा ही बडा तेरे सामने यह सरपच है। यह चार

ही बनारस पढ़ा था। नाम है रनोराय। इसमें छोटा खेती करता है। नाम है हरीसिंह। हरीसिंह से छोटा रामसिंह हिसार में पढ़ रहा है। फेरा, दो लड़कियाँ हैं। बड़ी का नाम रखा है और एक उससे छोटी है—पुष्पा। दोनों ही ब्याह दी है।'

माजी ने इस प्रकार अपने सारे परिवार का विवरण दे दिया। इस सूचा में दो के बारे में पूछने की जिज्ञासा हुई किन्तु एक के विषय में मुझे पूछने में संकोच नहीं हुआ। मैंने पूछा माता रामसिंह कौनसी कक्षा में पढ़ता है?'

माजी ने लम्बी सांस खींचते हुए कहा मेरी तो दो चिन्ताएं बाकी रही हैं। एक तो चिंता इस रामसिंह की और दूसरी इस पुष्पा की। रामसिंह तीन साल से बी० ए० में फेल हो रहा है और पुष्पा बावली सी रहती है। पुष्पा भी आठ पास है। रामसिंह की भी शादी करनी है। वह कहता है मुझे बहू पसन्द नहीं। यह पुष्पा तो चलो छोरी की जात है लेकिन यह रामसिंह पास नहीं होता। क्या करूं? अब इम्तिहान देने गया है। पांच दस दिन में आ जायगा।

पुष्पा का नाम आते ही मेरे मस्तक में वही विचार चक्कर काटने लगा – बुद्धू और बुद्धिया। इतने में पुष्पा भी कमरे में आ गई। बाल उसके अब बिखरे हुए नहीं थे। दो चोटियां कर रखी थीं। सल-वार और जम्फर पहने हुए थी। लड़की सयानी और सुरूप लग रही थी। उसके पागलपन का चिन्ह कहीं भी नजर नहीं आ रहा था। वह चुप-चाप मेरी मेज पर जाकर बैठ गई और साप्ताहिक हिंदुस्तान देखने लगी।

माजी और मैं बातों में व्यस्त थे। पुष्पा के आते ही माजी एक बार तो चुप हो गई थीं। उसके बढ़ते ही माजी ने कहना शुरू किया—यह है बेटा पुष्पा। कभी कभी यू ग बिलखती है। मैं इसे बहुत समझाती हूँ। लेकिन यह मानती ही नहीं। जब यह अपने पर आती है तो बस सारे घर वालों के नाक में दम कर लेती है। शादी हो गया है इसकी। घर बहुत अच्छा है। अच्छी जमीन है। इसका आदमी पटवारी है। बड़ी कमाई करता है। घर में कोई कमी नहीं। गायें भैंसें, दूध दही, घोड़ी ऊँट सभी कुछ है। लेकिन ।

माजी का गला भर आया। उसने अपनी आखें अपनी ओढ़नी के पल्ले से पूछी और फिर चुप हो गई। किन्तु पुष्पा मौन उसी प्रकार साप्ताहिक में लीन थी जैसे कोई छात्रा परीक्षा की तैयारी में लीन हो।

माजी की स्थिति देखकर मैंने विषय को बदलना उचित समझा। मैंने पूछा 'माजी आज सरपंच जी नहीं दिखाई दिए।

माजी के चेहरे की स्थिति सामान्य हो गई। उसने कहा 'सरपंच तो बेटा आज फिर मंडी गया।'

कोई काम गये होंगे ?' मैंने कहा।

'क्या काम है ? प्रकाश दिन भर मारा मारा फिरता है माजी ने उत्तर दिया।

मैं—सरपंच की इज्जत तो बहुत है माजी।'

माजी—अरे बेटा, यह भी कोई इज्जत है। इसके तो लत लग गई है। हजारों रुपये चुनाव में लगते हैं। फिर कभी इधर और कभी

प्रमन्ता

उपर । सेना एक न देना नो । बेग, पर से पता खराब करना खराब करना और काम खराब करना । मैं तो इसको प्रकी बार सदा नहीं होने दूगी । मुझे नहीं पता था कि ऐसा पता है । कभी चार आए कभी पांच । खैर । जहां पर है वहां आया ही करता है । लेकिन बस बेकार ख्याल ही नहीं करते ।

मैं—'माजी आपका बेटा है तो बहुत अच्छा ।

माजी का मुर्झाया चेहरा खिल उठा । उस मुस्कराहट से भुरियों की वृद्धि के साथ गहराई भी आ गयी और आगे के बचे हुए दांत बाहर निकल आए ।

माजी ने कहा अपना क्या है प्रकाश । सभी उस मालिक का है । मैं तो मालिक से यही कहती हूं कि तू ही इज्जत रखने वाला है । अच्छा बेटा चलू तू तो दिन भर काम करता है । सो जा ।

माजी ने पुष्पा को भी उठने का संकेत किया और दोनों उठ-कर चल गए । उठती हुई पुष्पा की गम्भीरता से किसी प्रकार का अनु-मान लगाना कठिन था । मुझे आश्चर्य अवश्य हुआ कि आज वह इतने समय पर किस प्रकार मौन होकर बैठी रही ।

रजनी धीरे धीरे मौन होती जा रही थी । कहीं कहीं मानवीय आवाज कानों में पड़ रही थी । मैंने साप्ताहिक उठाया ताकि लघुकहानी समाप्त करलू दो तीन पृष्ठ खोलने के बाद मैंने देखा कि एक चित्र कटा हुआ था । मैंने स्मरण किया कि पहले तो ऐसा नहीं था । मैंने फिर आगे और पन्ने पल्टे । आगे एक चित्र और काटा हुआ नजर आया । मैंने मेज

प्रभलता

के पास आकर देखा कि दीवार पर दो चित्र टंगे हुए थे – एक सुन्दर नारी का और दूसरा बन्दर छाप दन्तमंजन के विज्ञापन का जो ढोल पीट रहा था। मुझे एकान्त में ही हंसी आने लगी। मैं जोर से हंस पड़ा। मैंने अपने मन में कहा – नये चांद को राम राम। यह और लो।

इन तीन घटनाओं से मेरे मस्तक में तरह तरह से विचार घूमने लगे। पुरुषों की मनोदशाओं से उत्पन्न विभिन्न स्थितियों के चित्र मेरे सामने घूमने लगे। समक्ष आए हुए क्रियाकलापों को आधार मान कर इस विचित्र लड़की के मनोविकारों के विश्लेषण करने के असफल प्रयास में मैं करवट बदलता रहा। मुझे दूर कुछ ग्रामीण स्त्रियों के समूहगान की आवाज आई। आवाज में मिठास था और गायन में रसभरी मादकता। ये गीत घरों में राजस्थानी महिलायें सम्मिलित होकर *दामाद के आने पर उसके मनोरंजन के लिए गाती है। मैं भी गायन के* माधुर्य में डूब गया। निद्रा ने मुझे बाहुओं में जकड़ लिया।

ताम्रो से सम्पर्क बन गया। भूमि सम्बन्धी कानून कायदा से अच्छा ाकिफ था। जसपुरा के मुसलमानो को बहकाकर पाकिस्तान भगा दिया ौर उनकी जमीन को गिरदावरी पटवारी से मिल मिलाकर अपने नाम ो करवाली। उनके निकल जाने के बाद सारी जमीन पर अपना कब्जा र लिया। पतराम मन्त्रियो के प्रभाव स बडे से बडे अफसरो से मेलजोल रखना था और उनकी अच्छी आवभगत करता था। इस मेलजोल से ही उसने इस सडक और नहर के मेल पर अपनी सारी जमीन करली और यहा अपनी कोठी भी बनाली।

मैंने यह भी सुना था कि उसके कोइ औलाद नही थी। एक भतीजा ले रक्खा था। सूय रश्मियों क दशन के साथ ही मेरी तीव्र कामना हुई कि क्यो नही आज चौधरी जी से मिल लिया जाय। म उठा और चौधरी की काठी की ओर चल पडा। कोठी के आगे जीप खडी थी। मैने अनुमान लगाया कि चौधरी है तो ठाठदार आदमी। चौधरी की कोठी निमजली थी। सामने वरामदे के पास ही कमरा था। कमरा बन्द था। मने दरवाजा खटखटाया। एक नौकर ने दरवाजा खोला। नौकर देहाती था किन्तु अतिथि क स्वागत के नियमो से परिचित था। उसने मुझे मे बठने को कुर्सी दी। मैं बठ गया और चारो ओर नजर डाली। कमरे के अन्दर बीच म मेज दी और चारो ओर बेंत की बनी नये फैशन की कुसियां। कमरे का फर्श दरी से आच्छादित था। कमरे मे चारो ओर वारनिश की हुई आलमारियाँ थी। एक कोन पर छोटी मेज पर रेडियो सुशोभित था। मने कहा, चौधरी जी से मिलना है।

नौकर ने कहा वे तो अभी घूमने गए हैं। आध घण्टे म आयेंगे।

नौकर की बातचीत से आश्चय हुआ कि राजनीति का प्रसार अब इस श्रेणी तक भी पहुँच चुका था।

इतने मे बाहर से आवाज आई मगनू'। मगलू नाम था इस नौकर का और 'आया जी कहकर वह बाहर भागा। उसके पीछे मै भी बाहर आ गया। मैने देखा—चौ० पतराम—लम्बा तगडा आदमी नख से शिखा तक खद्दरमय। सिर पर खद्दर का साफा, सफेदचट कमीज और सफेद ही धोती। दनो जूता पैरो म था। रग सावला मूँछे कटी हुई सी सफाचट नही। एक अल्सेशियन कुत्ता साथ म था।

मैने नमस्ते' किया। चौधरी ने थोडा-सा हाथ हिलाकर मेरे अभिवादन को स्वीकारा। चेहरे पर एक कृत्रिम मुस्कान तथा ओढा गाभीर्य। चौधरी पतराम ने 'आइये' कहकर अपने साथ ही मुझे कमरे मे प्रवेश दिया।

चाय ला भई कहकर पतराम बैठ गया। मगनू चाय लेने चला गया।

मैने अपना परिचय दिया। और बातें शुरु हुई। चौधरी ने कहा, प्रकाशजी मै तो कुछ विरक्त सा हो गया हूँ। कुछ घर की परिस्थिति भी ऐसी हो गई है और कुछ राजनीति म अब मजा नही रहा। सभी जगह स्वार्थ इतना प्रबल हो गया है कि बस इस धधे से घृणा सी हो गई है।'

प्रकाश का राजनीति से कोई सम्बध नही था किन्तु रुचि अवश्य थी और फिर बीमा और राजनीति के अस्त्र-शस्त्र एक ही हैं। मैने प्रकाश ने भी चौधरी के विचारो की व्यावहारिक ढग से सहमति दी किन्तु चौधरी अपनी राजनीति से सीधा गृहनीति पर उतर आया क्योकि बीमा क

अधिक सम्बन्ध सहानुभूति से होता है।

चौधरी ने कहा—आज मैं भी लगातार अच्छा काम कर रहा हूँ, किन्तु प्रकाश जी मैं सोना किसका कराऊँ? मैं और मेरा परिवार सोना की सीमा को पार कर गये हैं। अब कमानी हमारे लिए जरूर नहीं लगा। फिर चौधरी ने लम्बी सांस खींची।

इतने में मगनू चाय लेकर आ गया और समाचार दिया कि उसकी पत्नी की तबियत खराब थी। चाय को बीच में छोड़ कर चौधरी यह कह कर अभी आ रहा हूँ अन्दर चले गये।

चौधरी की मुझे अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। वह पुनः आ गये। उदासी की रेखायें और गहरी हो गई थी। मैंने पूछा अब क्या हाल चाल है?

चौधरी ने फिर एक सांस खींची। मनुष्य स्वयं में बहुत बड़ा है किन्तु परिस्थिति जब उसे झकझोरने लगती है तो सर्वोच्चसत्ता में ईश्वर और निम्नतम स्तर में नौकर याद आते हैं। चौधरी ने भगवान का नाम लिया उस मालिक की मर्जी है और फिर मगनू से कहा तू जा थोड़ा ध्यान रख। इस समय दोनों समान थे। ईश्वरत्व और मनुष्यत्व में यही मुझे तारतम्य नजर आया।

चाय की चुस्की लेते हुए चौधरी ने कहा प्रकाशजी मालिक जब नाराज होता है तब सोना भी राख बन जाता है और जब उसकी कृपा होती है तो जहां हाथ डालो वही सोना बन जाता है। मैंने अपने जीवन में बड़ी उथलपुथल देखी है और मामूली सी मुसीबत की कभी परवाह ही नहीं

प्रमलता

ी। मैंने जेन देखा पुलिस का चोट सही फिर वह भी जमाना आया कि श्री मेरे आगे नाक रगड़ा करते थे लेकिन आज घर की मजबूरियों ने मुझे चकना चूर कर दिया है।

मैं तब तक चौधरी की मजबूरी की सीमा उसकी पत्नी की बीमारी तक ही समझ रहा था किन्तु उसके पीछे एक गहरा रहस्य छिपा था। मैं उस समय तक नहीं समझ सका। चौधरी ने बतलाया—मेरे बच्चा नहीं था। मेरी स्त्री इसी दुख में घुलती रहती थी। फलत मैं बड़ा बेचैन रहता। मैं किसी प्रकार प्रयत्न करके अपने भतीजे को ले आया उसकी अवस्था उस समय पाँच बरस की थी। मैंने उसे पाला पोसा। मेरे घर में उस समय भी कोई कमी नहीं थी। मेरी पत्नी कमला ने उसको प्यार दिया हर प्रकार का मातृप्यार जो उसके पास था। पढ़ता रहा पढ़ता रहा और पढ़कर बी ए हो गया। मैंने उसकी एक अच्छे घर में शादी कर दी। पढ़ी लिखी लड़की, सुन्दर और स्वस्थ सुसंस्कृत घर उत्तरप्रदेश के चौधरी जो रतन के मान ताने अफसर। इस भतीजे की मा नहीं थी। कमला उसकी मा बनी। उसका बाप दूसरी पत्नी से छीन लिया गया था। मैं उसका बाप बना। अब उसको इसी स्कूल में बाबू की नौकरी दिलवाई है। वह अपनी पत्नी को लेकर अलग चला गया है। हमसे बोलता नहीं और दूसरे के सामने हमें गालियाँ निकालता है। हमें धन की जरूरत नहीं प्यार की जरूरत है और प्रकाश जी, इतना करने पर भी मा बाप को बेटे का प्यार नहीं मिला। मैं तो इस दर्द को पी सकता हूँ लेकिन वह नहीं पी सकी। शरीर आगे भी ठीक नहीं था। जब तक युद्ध नहीं हुआ, औषधियों ने उसके शरीर को गला दिया। अब यह दर्द सहन नहीं होता और वह

बेहोश हो जाती है। अब वह बहोश है। उसको होश आयगा कि तु ग्वार ही। डाक्टर इस हिस्टीरिया की बीमारी कहते है। मैं इस बीमारी को जानता हूँ कि यह प्यार की बीमारी है। जिस प्यार की खोज म वह जीवन भर तडफती रही और वह उसे नही मिला।

इतना कहने पर चौधरी एक बार फिर ऊपर गया और थोड़ा ही नीचे आ गया। कमला होश म आ गई थी। आगे की बातें सावजनिक कार्यो पर आ गई। इस सम्ब म उसने बतलाया कि यह स्कूल प्राइमरी हैल्थ सैंटर कन्या-विद्यालय आदि खुलवाने म कितने प्रयास किए गए।

बातो के उपस ह र मे इस प्रकार किया गया—किन्तु प्रकाश, काम करने का अब मजा नही रहा। काम की कदर न ी। गाव दो दलो म बट गया। एक दल मेरा समर्थक है तो दूसरा दल आपके चौ० दयोराम का जिनके यहाँ आप रहते है। चुनाव म मेरा दल हार गुरा था। यह मेरी मान्यता है कि सावजनिक कार्यो म यह भेद भाव नही रखना चाहि य। यदि ऐसा होगा तो गावो का विकास ठप्प हो जायेगा। खर ! छोडो इन बातो को। आओ म तुमको अपना खेत दिखाऊ।

म चौधरी के साथ उठकर बाहर आया। मैंने चौधरी का खत देखा। दूर तक फला हुआ खत कही गेहू कही चना कही सरसा कही कमाद, कही तारा मीरा। इस हरियाली को देखकर बडी सतुष्टि हुई। मने अनुभव किया कि वास्तव म देश का निर्माण हो रहा है। यह वह भूमि है जहा का किसान पीने का पानी लाने के लिये कोसो तक चार घडे ऊट पर लाया करता था और अपने घर पर सुरक्षित रखता था। गावो म

पानी प्राय खारा होता था। पानी के दो विभाजन थे—मीठा पानी और खारा पानी। अतिथि को पिलाने के लिये घी दिया जा सकता था किन्तु मीठा पानी नहीं। अब उसी धरती पर जल की कल-कल की लहरें हिलोरें ले रही हैं। धरती का किसान बदल रहा है।

मैंने चौधरी से फिर मिलूंगा कहकर विदाई ली। रास्ता लम्बा था। सड़क के दोनों ओर की हरियाली मनोहारिणी थी। किन्तु मेरे मस्तक में था चौ० पतराम उसकी बीमार पत्नी और स्कूल का बाबू और उसकी पत्नी। यह क्या है? मनुष्य सब कुछ पाकर भी सन्तुष्ट नहीं है। उसके बाद मैं सोचने लगा पुष्पा के बारे में। यह क्या नाटक है? ये सब मनोविकारों के द्वन्द्व हैं जहां प्यार की प्यास है और वह मिट नहीं पा रही। संसार में सब कुछ सुलभ है किन्तु प्यार प्यार इतना सस्ता होते हुए भी इतना महंगा है कि किसी बाजार में नहीं मिलता और किसी कीमत पर नहीं मिलता।

स्कूल आ गया, नाबा निकल गया। गांव भी आ गया गलियां भी धीरे धीरे सब निकल गईं, किन्तु मन में इन विचारों के भंवर जो निरन्तर चक्कर लगा रहे थे नहीं निकल पाए। घर में पहुँच गया और घर में ऊपर कमरे में।

५

रविवार का दिन था । सभी बच्चा की छुट्टी थी । िन भर घर म कालाहल रहा । घर म बच्चो की अच्छी सेना थी । उनमे किसी मे भेद करना सम्भव नही था । कुछ बच्चे सरपच के कुछ उससे छोटे भाई हरिसिंह के । इस कुहराम म माँजी की आवाज तीक्ष्णतम थी । बच्चो पर निर तर गालियो की बौछार तथा साथ म अध्यापको को भी अनावश्यक घसीटा जाना कि तु बच्चे माँजी की इन धमकिया क आदी थ । उसकी आवाज न समझने वाले लाउडस्पीकर के गाने क समान थी। धीरे धीरे यह कोहराम भी शात हो गया । स्त्रियाँ खेता म चली गई । पुरुष सुबह स ही घर से बाहर थे । बच्चे एक एक करक घर से निकल गए ।

यह अप्रिय शान्ति मरे लिए असह्य हो गई । कुछ काम करने की धुन थी । मुझे भी रविवार का एक सदुपयोग याद आ गया । मैं सीधा बाबूजी की ओर चला । बाबूजी के जीवन की भूमिका मुझे मिल ही चुकी थी । अत इस मिलन मे कुछ रोचकता आ गई । मुझ उनका पता – ठिकाना याद था– गढ के सामने चौ पतराम का मकान । मन अनुमान लगाया कि यह नेता पतराम का ही पुराना मकान होगा ।

मेरा अनुमान ठीक निकला। गढ के विशालकाय द्वार के सम्मुख पहुँचा तो मुझे बाबूजी के मकान को ढूँढने म देर नही लगी।

एक टूटा फूटा मकान जिसमे कुछ कमरे गिर चुके थे और कुछ गिरने वाले हो रहे थे। शायद इनकी मरम्मत नही हुई वरना यहाँ के कच्चे मकान भी हिफाजत रखने पर काफी चलाऊ होते है। गाँव मे इस दुपहरी म मिलने जुलने वाले आदमियो की सख्या कम होती है। चबूतरे पर अकेल बैठे एक बूढे से मैने पूछा, क्या बाबूजी यहा मिल सकते है?'

वह बाबूजी के नाम से नही समझा। कुछ देर असमन्जस में पडकर उसने कुछ स्पष्टीकरण किया क्या पतराम का बेटा?'

मैने कहा, 'हाँ जी।

उसने सोचकर उत्तर दिया, घर ही होगा अभी तो बाहर खडा था। ऐसा करो कि आप यह कूटा खटखटाओ। अन्दर होगा, आ जायेगा।'

मैने इस वृद्ध की सम्मति के अनुसार काम किया। कूटा खट–खटाया। अन्दर से एक पतली सी आवाज आई, कौन है?'

मैने सयत स्वर में कहा, मैं हूँ प्रकाश, फौरेस्ट आफिसर।'

मेरे उत्तर का कोई प्रत्युत्तर न था। मैंने बाबूजी की अनुपस्थिति का अनुमान लगाया। बाबूजी होते तो विलम्ब न करते। फिर भी थोडी प्रतीक्षा म आगे पीछे होता रहा। इतने मे द्वार खुला और एक महिला साडी पहने खडी दिखाई दी। मेरा पूछना स्वाभाविक ही था, बाबूजी नही है क्या?'

यह बोली, अभी आ हो रहे हैं। पानी लाने गए हैं। आइये बठिए।

इस ग्रामीण वातावरण म एक नहरी निवास म एक शिष्ट एव शिक्षित महिला देखकर मेरे हृदय म उथल-पुथल होने लगी।

व्यावहारिक दृष्टि से तो नही कितु व्यावसायिक दृष्टिकोण से मने महिला का अनुनय स्वीकार करना उचित समझा। मुझे अन्दर एक कमरे म बैठने का स्थान दिया गया। कमरा ठीक ढग से व्यवस्थित था। यद्यपि उसम स्थान कम था किन्तु सामान की साज-सज्जा म किसी कुशल हाथ की कारीगरी प्रतीत होती थी। मुझे अधिक समय तक विलम्ब नहीं करना पडा। बाबूजी सिर पर घडा हाथ म बरी' (पानी निकालने की रस्सी) और डोल (पानी निकालने का बतन) लिए मकान म प्रविष्ट हुए। पानी का घडा रखते ही वे सीधे मेरे पास आये और क्षमा-याचना का-सा भाव लेकर बोले, क्षमा करना साहब मुझे देरी हो गई।

बाबूजी की भाव-व्यजना देख कर मुझे दफ्तर के बाबू और घर के बाबू म स्पष्ट अतर दिखाई दिया। अभी हाजिर हुआ कहकर वे पुन अन्दर चले गए। कपडे बदल कर तुरत वापिस आ गए और बठकर बोल 'माफ करना साहब उस दिन मैं बहुत व्यस्त था। कही रोकड के हिसाब मे गडबडी थी।

काय-व्यस्तता में ऐसा हो ही जाता है और हिसाब-किताब के मामले म ऐसी बातें अस्वाभाविक नही है। मैंने कहा।

बाबूजी बोले, 'कई दिनो से दिखाई नही दिए कही चले गए थ क्या ?

'नहीं, मैं तो यही था। कुछ इधर उधर मिलने म रहा। मैं दो दिन पहले कोठी चला गया था। आपके पिताजी स मिला। मने कहा।

अतिम श ो से उत्पन्न हुई प्रतिक्रिया बावूजी के चेहरे पर स्पष्ट हो गई और कुछ गम्भीर हुए कि इतने म बावूजी की श्रीमती एक ट्रे म चाय लेकर आ गई।

चाय को ट्रे रखकर वह महिला भी एक कुर्सी पर बैठ गई। चाय बिल्कुल नये ढग से तयार की गई थी। सभी साज-सज्जा आधुनिक थी। एक मोटी प्लेट मे बिस्कुट थे। तब तक मैं श्रीमतीजी के नाम से परिचित नही था। बावूजी ने परिचय दिया, आप है मेरी धमपत्नी सुधा रानी, मट्रिक मे सैकण्ड डिवीजन।

सुधारानी हल्की-सी मुस्कान से बोली, कौन सी मट्रिक हूँ जी, ऐसे ही किसी प्रकार निकल गई। नाम हो गया।

'आजकल अपने राजस्थान मे मट्रिक का भी बडा महत्त्व है। स्त्रिया कहाँ पढी लिखी मिलती है। मैंने कहा।

सुधा ने चाय तयार करत हुए कहा इस गांव मे बेकार जीवन बिता रही हू। किसी शहर मे होती तो मेरा आगे पढने का विचार था। पिताजी तो इस वप ही कालेज मे प्रवेश दिलवा रहे थे, किन्तु ये माने नहीं।'

मने बावूजी को सम्बोधित करत हुए कहा, 'आप किसी शहर म अपना तबादला करा लीजिए। यहा गाव म आपके लिए क्या रक्खा है?

इसका उत्तर भी सुधा न दिया मैंने तो बहुत आग्रह किया। मर पिताजी की भी इच्छा प्रबल थी किन्तु इनके पिताजी को स्वीकार

नही था ।

ग्रजी साहब गाबूजी बाले ग्राप ता मेरे पिताजी मे मिले ही होगे लेकिन मरी माताजी से नही मिल । इनके स्वभाव म ग्राकाश-पाताल का ग्रतर है । पिताजी का स्वभाव ठीक है । म ता इनको माता-पिता की तरह पूजनीय मानता हूँ । किन्तु मरी मानाजी ओहो मत पूछो, चण्डी है चण्डा ।

बाबूजी कुछ कहन ही जा रहे थे कि सुधा ने बीच मे टोक दिया, क्या ग्राप्त हैं ग्रापकी हरेक के ग्राग मन मे ग्राया सो बक दिया ।'

बाबूजी सुधा की फटकार से दब गय । फिर सुधा ने बात का सशोधित रूप दते हुए कहा स्वभाव है जी ग्रपना ग्रपना । इधर बाबूजी का स्वभाव गम ग्रौर उनका स्वभाव भी बुढ़ापे की वजह से कुछ खराब हो गया है । इस लिए कुछ ठीक बठा न ी ।

फिर यहा ग्राने की क्या नौबत ग्रा गई ? मैंने पूछ हा लिया ।

'राइ के ग्रागे बाड भली बाबूजी न फिर चटक कर उत्तर दिया ।

ये तो झूठ बोल रहे है । बात ग्रसल यह है कि वह घर दूर पड़ता है । यह कुछ नजदीक है । घर भी दिन पर दिन फूटता जा रहा है । इस बार इसकी मरम्मत कराने का भी विचार है । सुधा ने बात सवारी ।

ठीक है इस घर को भी ठीक करवा लीजिए । मैंने एम ही हाँ म हाँ मिलात हुए कहा ।

हम चाय पीत जा रहे थे । चाय पीन का भा हम तोना का

ढग भिन भिन था। बाबूजी का तरीका—हिन्दी की प्रारम्भिक खडी बोली की कविताओ की तरह सरल किन्तु पुरातन–चाय का प्लेट म डाल कर फिर सरड की झटपटी आवाज करके पीना। मेरा अपना–छायावादी कविता की तरह थोडी चाय डालकर धीमी आवाज से निगलना। सुधा का तरीका—नई कविता की तरह अति आधुनिक–कप फुल, बिना लय और छन्द की आवाज के धीरे धीरे रसपान करना। बाबूजी अपना एक कप चाय समाप्त कर चुके थे मैं समाप्त करने वाला था किन्तु सुधा का कप अभी शेष था।

मैंने एक घूंट लेते हुए पूछा आपको नौकरी करने की आवश्यकता ही क्या पडी जब आपके पास इतनी जमीन जायदाद है ?

बाबूजी एक अभियुक्त के समान एक मजिस्ट्रेट के सामने थे और सुधा जैसे उनकी वकालत कर रही थी। बाबूजी को इस प्रश्न का उत्तर देने की फुरसत कहाँ ? वे बिस्कुट खाने के काम म जुटे हुए थे। सुधा ने कहने म बडी तत्परता की शायद उसको डर था कि बाबूजी सत्य को नग्न रूप देकर खडा न कर दें। उसने कहा प्रकाशजी आराम से जीवन की गति कुण्ठित हो जाती है और मनुष्य निष्क्रिय होकर इतना अकर्मण्य हो जाता है कि किसी भी कठिनाई को सहज करने म समर्थ नही हो पाता। हम तो अपने पैरो पर ही खडा होना चाहते है।

सुधा की स्नेहिल आत्मा और अकाट्य थी। म आगे नहीं बोल सका। हम चाय समाप्त कर चुके थे। सुधा चाय के बतन लेकर अन्दर चली गई। अब बाबूजी मरे सामने थे। मैंने अब अपने विषय पर आना उचित समझा। मने स्वाभाविक स्वर म कहा, क्या साहब, आपने मर

प्रस्ताव के बारे में क्या सोचा ?'

बाबूजी बोले मैंने सुधा से बातचीत करली है। नाम" वह तैयार है। अभी आ रही होगी। आप और पूछ लें।'

मैंने स्पष्ट किया इसमें अधिक पूछने की आवश्यकता नहीं। काम तो आपको करना होगा। केवल सुधा के हस्ताक्षर होंगे। मैं अभी पास कर लेता हूँ और यह भी आपको बता दूँ कि चार अध्यापक बाल बैंस भी आपके नाम से जायगे।'

बाबूजी के होठों पर हल्की सी मुस्कान थी। वे बोले 'जैसा आप उचित समझें।

इतने में सुधा भी आ गई। चार पाँच इलायची प्लेट में लाकर हमारे सामने रखते रखते हुए बोली यहाँ तो यहाँ है। पानदान तो कुछ है नहीं। अच्छे गाँव में आकर पड़े हैं।'

मुझे मन ही मन हँसी आ गई किन्तु मुझे तो काम करना था इसलिए इस विषय पर जाना ठीक नहीं लगा। मैंने कहा 'आपसे बाबूजी ने सारा सम्बन्धी बातें की ही होंगी'

मेरी बात पूर्ण होने से पूर्व ही सुधा बोल पड़ी 'मैं तो बार बार यही कहती हूँ कि हमें पैरों पर खड़ा होना है। समय ही जीवन का सही उपयोग है। उस उपयोग में ही जीवन का यथार्थ सुख और आनन्द है। हाथ फैलाना नपुंसकता का चिह्न है। हम कभी पिताजी को कष्ट देना नहीं चाहते हैं अपना पेट भी अपने प्रयत्न से नहीं भर सकते तो उस जीवन का अर्थ शून्य है। हमारा वेतन कम है। हम इस काम में सहयोग देने के लिए प्रस्तुत हैं। मैंने उसी दिन इनसे कह

दिया था । पूछो दिनेशजी (बाबूजी) से ।'

दिनेश' शब्द अनायास ही सुधा के मुंह से निकल गया । मैं अब तक बाबूजी के नाम से अनभिज्ञ था । सुधा ने मेरी बहुत बड़ी समस्या दूर कर दी । मुझे सामाजिक होने में बहुत बड़ा सहारा मिला ।

मैंने झट से अपने फार्म निकाले । सुधा का बीमा भी कर दिया । एजेंट का बीमा करना अनिवार्य होता है । सब कुछ समाप्त कर के मैंने सुधा के हस्ताक्षर करवा लिए । जब वह हस्ताक्षर कर रही थी मैंने एक ही नजर से सुधा को सागापाग देख लिया । नितान्त निर्मल गौरवर्ण, गोल किन्तु छोटी मुखाकृति, होंठो पर स्वाभाविक हल्की लालिमा छोटे छोटे दांतो की धवल पंक्ति नासिका छोटी किन्तु तीखी । आंखें शायद अधिक बड़ी नहीं थी । मझला कद । शरीर न भारी न पतला । चेहरे पर जरा सा अहंभाव ।

मैंने अपना काम पूरा कर लिया । 'नमस्ते' करके बाहर निकला । ऐसा महसूस हो रहा था कि एक दम किसी शहर से गांव मे आ गया हो । मन अनुभव किया कि सुधा ने अपने सुधामय व्यक्तित्व से घर का वातावरण माधुर्य से आतप्रोत कर रक्खा था । मैं घर पहुँचा । मैंने देखा कि घर में सुनसान वातावरण था उजड़ा हुआ सा वीरान सूनापन केवल दीवारें मौन खड़ी थी । जब अन्दर प्रवेश किया तो मैंने देखा कि पुष्पा एक टूटी हुई खाट पर पड़ी थी । खाट की कमर टूट चुकी थी और जमीन का छू रही थी । पुष्पा निद्रावस्था में पड़ी थी । घर में और भी पलंग था । वह उन पर क्यों नहीं सोई ? सोई क्या थी ? पड़ी हुई थी मन मारे हुए एक मैली धोती मे बिखरे बाल

से चेहरा उठे हुए। उधर थी सुधा जो जीवन में सौम्यता रखती थी। अभाव को दूर करने की महान् आकांक्षा थी उसमें और वह भी गौरव मय ढंग से। समस्त वायुमण्डल में जैसे उल्लास की लहरें दौड़ रही हों। इधर यह है पुष्पा जिसका संघर्ष समाप्त हो गया था मन परास्त हो गया था कोई महाप्रसाद का अवशेष केवल राख के रूप में रह गया हो और उसका स्वामी बौखला गया हो। यह कैसी जीवन की विभीषिका थी।

पुष्पा ने धीरे से अपना मुंह उठाया और मुझे देखकर फिर वैसे ही हताश होकर पड़ गई।

मैं अपने कमरे में गया। जाकर अपने पलंग पर लेट गया। दो चित्र मेरे सामने घूमने लगे पुष्पा और सुधा के। जैसे कि दो पुस्तक थी—एक में था हर्ष, उन्माद, मादकता अठखेलियां और दूसरी में थी मलिनता खिन्नता, उदासी का फैला हुआ एक विस्तृत सागर जिसमें लहर उठती हो दर्द की, विषाद की अवसाद की वेदना की पीड़ा की जिनका कभी अन्त न होने वाला हो। दोनों विवाहिता हैं। फिर यह अन्तर कैसा? मैं इस चिंतन में लीन था कि इतने में पुष्पा ने प्रवेश किया। मेरा हृदय किसी आशंका में धड़कने लगा।

पुष्पा के हाथ में एक कागज था। मैं असमञ्जस में था कि इस थोड़े से अर्से में यह कागज कहाँ से उठा लाई और यह यहाँ क्यों आ गई। वह चुपचाप धम से कुर्सी पर बैठ गई और कुर्सी खींचकर मेरे समीप ले आई। मैं लेटा हुआ था सो उठकर बैठ गया। उसने कागज मेरे सामने प्रस्तुत किया। कागज में ऊटपटांग लाल और नीली पेंसिलों की रेखायें खींच रखी थीं। वह बोली, प्रकाशजी मैंने आज एक

चित्र बनाया है।'

मैं अब समझा कि पुष्पाजी अपनी चित्रकला का प्रदर्शन करने आई थी और मुझे कुछ राहत मिली। चित्र का मूल्यांकन करने के बहाने कागज पर खचित रेखाओं को इधर उधर घुमाया और यों ही उसकी प्रशंसा कर दी, पुष्पा, चित्र तो बहुत सुन्दर है। यह किसने बनाया ?'

मानव मात्र प्रत्यक्ष रूप से अपनी प्रशंसा से तृप्ति पाता है। प्रगति और दुर्गति में क्रमशः इसके प्रभाव और अभाव का सहयोग रहता ही है। पुष्पा मेरी प्रशंसा पाकर एक बार तो गदगद् हो गई और चित्र का विश्लेषण करने लगी, यह ज्वालामुखी का पर्वत है। यह फूट पड़ा है। विस्फोट हो गया है इसमें। यह लाल लाल लावा निकल रहा है।' इतना कह कर जोर जोर से अट्टहास करने लगी।

मैंने चित्र को ध्यान से देखा। लाल रेखाओं का तात्पर्य ज्वालामुखी से निकलने वाली अग्नि से था और नीली रेखायें थी धरातल। चित्र पुष्पा के हृदय की भावनाओं का स्पष्ट चित्रण कर रहा था। भावों के अनुरूप कला की कुशलता तो नहीं थी किन्तु पुष्पा की रुचि छात्र जीवन में चित्रकारी में रही होगी, ऐसा प्रतीत हुआ। कलाकार की अतृप्त कामनायें उसको महान् कलाकार बना सकती है तो साधारण व्यक्ति को पागल।

मेरी प्रशंसा की प्रतिक्रिया में पुष्पा ने कहा आप बहुत अच्छे है। आप मेरे भैया है। इस घर में सब मेरे दुश्मन हैं। मुझे पीटते हैं। मुझे इन्होंने कुए में डाल दिया। आप मुझे निकाल लोगे न।' मैं पुष्पा की वेदना की अनुभूति की गहनता के गले तक पहुँच गया। पुष्पा पीड़ित है। बहुत पीड़ित। मैंने उसको थपथपाया और

कहा, 'जरूर निकाल लूँगा, पुष्पा । तेरे क्या द

पुष्पा--मेरे सिर मे दद है पेट म दद है । अब नही है । अब आप सामने वठे हैं । पहले नही था ।

म तथ्य को पकडना चाहता था वि नही सकी । उसने सिर और पेट का दद बतला कुछ और ही थी जिसका अश मात्र भी आभास

धरती सास ले रही थी । आकाश अपने रथ को हाक पश्चिम की ओर बढा जा र हो गया था । पुष्पा चली गई ।

७

माजी एक भरे पूरे घर की मालकिन थी । घर मे उसी का राजपाट था । घर के सभी महकमा मे उसी के आदेश चलते थे । धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक सभी नीतियाँ उसी की मन्त्रणा से तय होती थी । वसे वह गाधी की तरह समन्वयवादिनी भी थी । वय वृद्धि की शिथिलता का प्रभाव उस पर न के समान था और वह सभी क्षेत्रों पर उचित नियन्त्रण रखने का सामर्थ्य रखती थी । ज्यो त्यो अधिक हस्तक्षेप करने के पक्ष म नही थी किन्तु उसकी बुद्धि का लोहा सभी मानते थे । अपने पुत्रो की समद मे वह जनतन्त्रीय बन जाता तो बहुओ को डिक्टेटर की तरह डाट देती थी किन्तु अबोध बच्चे प्रतिक्रियावादियों की तरह उसके आदेशो की अवहेलना करने मे नही हिचकिचाते थे जब कि वह उस समय अपना उग्रतम रूप धारण कर लेती थी । वह अपना प्यार साम्यवादी ढग से समान रूप मे वितरण करती थी यही कारण था कि किसी के हृदय म उसके प्रति कटुता नहीं थी ।

माजी के पति थे हरीराम । यह प्राणी घर के भीतर शून्य था । गाँव म उसका प्रभाव उस दीपक के समान था जिसम केवल टिम-

टिमाहट ही रहती है प्रकाश की लहरें न ी। गाव से बाहर उसके व्यक्तित्व की छाप थी। इसका कारण था मन्त्रो तन्त्रा का उसका विशिष्ट ज्ञान जिसके प्रभाव से वह बहुत से असाध्य रोगो की चिकित्सा करता था साप काटने वालो को मरने नही देता था मन्तरिया के इशारे का डारा करता था डाकण स्यारी क प्रभाव को झाडा देकर ठीक करता था। बाहर के कमर की एक आलमारी उसक लिए रिजव थी जिसमें वह अपनी माला तबाखु तथा कुछ जडो बू टिया रखता था जिसका वह मन्त्रा जन्त्रो के साथ कभी कभी प्रयोग करता था। वह दिन भर एक निश्चित स्थान, निश्चित खाट तथा निश्चित वेशभूषा के साथ बैठा रहता था और अपनी माला फेरने म ही लीन रहता था। घर क किसी भी काम म उसका हस्तक्षेप नही था। सुबह समय पर चाय आ जाती, दोपहर को खाना दोपहर के बाद की चाय और रात का खाना। इनक अतिरिक्त घर वालो को उसकी कोई चिन्ता नही थी और वह भी घर की ओर स निश्चिन्त ही था। कभी किसी कारण वह कुछ भी कह देता तो माजी कहती राम का नाम ल तुझे क्या है ? तू तो दुनिया को फ्रा कर अलग हो गया। यह सब कुछ मरे ही जिम्म पडता था। वह फिर राम भज राम भज कहकर माला की गति तेज कर देता। लाठी उसकी सहयोगिनी थी। कुत्ता स उसकी चिढ़ थी। किसी कुत्ते का अन्दर प्रवश नही होने देता था। इसलिए उसकी उपस्थिति भी अपना महत्व रखती थी।

मरतच की बहू पांच बच्चो की मा थी। वह प्राय रोगिणी-सी रहती थी पर दिन रात काम करने म नही हिचकिचाती थी। बच्चो की

उसे कोई परवाह नहीं थी। छोटे-छोटे दो बच्चे तो नंगे ही घूमते थे, प्राय धूल म लिपटे ही रहा करत थे। दो बडे लडके स्कूल जाया करते थे। व भी दिन रात एक ही वेश भूषा मे रहा करते थे। रात की घर की तथा स्कूल की अलग-अलग पोशाकों म इस घर का विश्वास नहीं था। य रोजाना स्नान करने तथा कपडा बदलने के आदी नहीं थे। सरपच जब कभी बाहर से कुछ देखकर आता तो एक बार एक अच्छा भाषण सफाई और स्वास्थ्य पर झाड देता किन्तु सरपच की बहू यह कहकर पिंड छुडा लेती कि मेरे मे कुछ नहीं होता। मैं तो मरी जा रही हूँ। आप भी तो इन के बाप हो। कर लिया करो। और सरपच इनको सुना अनसुना करके घर स निकल जाता। अडौस पडौस की स्त्रिया जब उस सरपच की बहू कहकर पुकारती तो उसका एक सेर खून बढ जाता और वह मन ही मन बडी प्रफुल्लित होती।

सरपच के छोटे भाई हरीसिंह की बहू का चौकटा भी ठीक था और वैसे वह बन ठन कर भी रहती था। इस घर म यही एक औरत थी जो अपने व्यक्तित्व को समझती थी और माजी के आदेश पर कभी कभी गुरीती भी था। इस गाव की सभी औरतें घाघरा, ओढणा पहनती थी और ब्लाउज की जगह आदमी की तरह की रगीन कमीज। कोई नई नवेली दुल्हन कमीज के नीचे बाजार की बनी चोली भी पहन लेती थी। हरीसिंह की बहू इसी श्रेणी म थी। नाम शान्ति था और माजी भी शाति कहकर पुकारती थी, वस बहू का नाम लेने का यहा रिवाज नहीं था। माजी ने ही यह परम्परा डाली थी। शान्ति कुए मे पानी लाने समय अपना पूरा शृगार करके घर से छम छम करती बाहर निकलती जैसाकि इस क्षेत्र का

रिवाज था । इन गांधा की पनपटो म । दृश्य दर्शनीय होता है । शान्ति जब पनिहारी का रूप धारण करक घर से निकलती राजस्थान के लोक गीत पणिहारी ये लो का साकार चित्र मेरा आंखा के सामने उपस्थित हो जाता और म उस गीत की एक दो पक्तियां जो मुझे याद थी गुनगुनाया करता । यहाँ की स्त्रिया सिर के बालो को एकत्रित करक सिर के बीच म जूडा बना लेती और उसी पर कपडे की इन्ही पर घडा रखती है । परन्तु यह भेष अजीब-सा लगता किन्तु यहां के नवयुवको का हृदय इस रूप पर झूम उठता था । मुझे भी इसम धीरे-धीरे आकर्षण दिखाई दने लगा ।

शान्ति के दो बच्चे थे किन्तु दोनो को ही वह सवार कर रखती थी । वह बोलने मे बहुत खुशी थी । फुरसत म वह मरे से भी बात कर लती थी । उसकी बाता म रस था । कभी कभी वह घर पर टीका टिप्पणी भी कर देती थी ।

शान्ति का पति एक कमठ किसान था । इस घर के पल्ले दो सौ बीघा जमीन थी । पहले यह सारी जमीन बिरानी (बिना सिचाई की) थी । फिर भी यहा दो फसलें तो हुआ ही करती थी सावणी म बाजरा मोठ गुवार जुवार और हाडी मे चने जौ तारामीरा और सरसा । अभी नहर आने से इस जमीन मे पानी लगने लग गया इसलिए सावणी म गन्ना और कपास की खती शुरू हो गई और हाडी मे गेहू की । फसल म अनाज की वृद्धि हो गई थी किन्तु उस अनुपात म व्यय भी बढ गया था । पानी का टक्स ओवरसियर और पटवारी की रिस्वत आदि खर्चे इसम जुड गए थ । किन्तु सब कुछ मिलाकर आय म वृद्धि ही हुई थी और भावो की तेजी से गावा का कायापलट होने लग गया था । आजादी के बाद जो

प्रेमलता

परिवर्तन दिखाई दे रहा था। उसका मूल कारण गावो की आर्थिक दशा का सुधार ही था। हरिसिंह साधारण शिक्षित होते हुए भी आज की परिस्थितियो के प्रति जागरूक था, किन्तु उसकी श्रीमती उसकी उपेक्षा करती थी उसके मटमैले कपडे और सूर्य की तीक्ष्ण धूप की चित्रित श्यामता के कारण से ही। वह कभी कभी अपनी नयनो का मटका कर मुझे कह देती, 'ऊँ हूँ क्या है ? काला कलूटा शरीर मे दुर्गन्ध आती है।' इसके इन वाक्यो से मुझे अपने पर गर्व हो जाता और मैं अपना सीना फुलाकर एक बार मन म पुलकित हो जाता। पर इस घर का आर्थिक स्त्रोत हरीसिंह ही था। जब अनाज निकालने पर घर के सारे कोने भर जाते और कहीं रखने की ठौर नहीं मिलती तब सर्वत्र हरीसिंह की ही सराहना होती थी। उसके व्यक्तित्व का प्रभुत्व उस समय घर की सभी सदस्यो पर छाया हुआ रहता था। अनाज निकालने का कार्य सम्पूर्ण होने पर वह नई चोटी कमीज और चोटी धोती पहनता और गाव मे गर्व मे सीना फुलाये घूमता किन्तु उसके काले शरीर पर ये कपडे ऐसे लगते जैसे किसी कीकर वृक्ष के सूखे तन पर सफेद चादर डाल दी गई हो। वह शान्ति को आँखें दिखा दिया करता था। शान्ति उससे भय खाती थी।

म इस परिवार मे घुलमिल गया था। सबसे परिचित होने पर भी मेरे निकट सम्पर्क म आने वाले कुछ ही सदस्य थे। इन दिनो म शान्ति खुलकर बातें करने लग गई थी। एक दिन घर के सूनेपन से ऊबकर वह अपनी समवयस्का सहेली को लेकर मेरे कमरे म आ गई। म दाव बना रहा था। मेरे सामने एक बडा सीसा रक्खा हुआ था। शान्ति मेरे पीछे

ादमी ह । कुछ कहते ही नही । ग्राखिर मुझे ही कहना पडा । या किया ? अलग हो गए । होग्रो मेरी बला से । मुझे क्या ? बेटा, वह मुझे बिमारी दे गया । प्यार का बदला प्यार से नही दे सका । वह भी क्या करे ? सारा कुसूर तो उस चुडल का है । बेटा, मने ऐसी लडकी नही देखी ।'

चाय समाप्त हुई ग्रौर उसके साथ ही बात ग्रौर बरसात भी । मैने चौधरन की हाँ मे हाँ मिलाते हुए इतना ही कहा 'ग्राजकल माताजी ऐसा ही कुछ हो गया । असली बेटे भी निहाल नही करते । यह तो वहम है ग्रापको कि वह ग्रापका बेटा नही है । सभी बेटा का यही हाल है—चाहे ग्रपने हो या पराये । शादी से पहले तो सब बेटे मा के ही होते हैं, किन्तु शादी के बाद श्रीमतीजी के कान के पास बैठ जाती है ग्रौर धीरे धीरे अपनी गीता का उपदेश शुरु करती है ग्रौर मा बाप के पढाये हुए रग पर ऐसा ब्रुश मारती है कि कुरेदन पर भी उसका नामोनिशान नही रहता । मा बाप का भक्त पत्नीभक्त बन जाता है । घर घर की यही कहानी है । आपको ग्रफसोस इसलिए है कि वह आपकी कोख से पैदा नही हुग्रा ।

बात को समाप्त करके मैंने चौधरन की ग्राखो की ग्रोर देखा । उसकी ग्राखो म आसुग्रो के दो मोटे मोती चमक रहे थे । व स्वत बाहर ग्राने को तयार थे । किन्तु चौधरन ने ग्रपनी धोती के पल्लू से उनका ग्रस्तित्व मिटा दिया ।

मैंने फिर आने की बात कहकर इस भग्न हृदय से विदा ली । दिनेश ग्रौर सुधा के प्रति मेरे विचार बदल चुके थे । किन्तु मैंने निर्णय

प्रमलता

लिया कि हृदय की सरिता से प्रेम की एक ही धारा प्रवाहित होती है चाहे उसे मा खीचले चाहे उसकी पत्नी । एक तो तडपती ही रहेगी । फिर कोख का अतर रहता ही है । अपने और पराये का भेद प्रकृति का दिया हुआ है । इसमे मानव का वश नही चलता । फिर इस पर विचार करने से खाई और चौडी हो जाती है । प्रत्यक्ष रूप मे न देखने वालो के भी देखने मे आ जाती है । चौधरन इसका दुख करती रहे तो करती रहे। इसका कोई विकल्प नही था ।

परीक्षा देकर रामसिंह घर
तीसरी बार परीक्षा देकर आया था
बताया गया कि कई स्थानों पर घू
गया और साथ में अपनी बहू का
आशा से अधिक लम्बी थी और आ
के जूडे से लम्बाई और भी बढ़ी लगत
उसका सौन्दर्य छलक उठता था। पाय
के प्रांगण का मालिन्य और उदासी
लावण्य को घूंघट से आवृत कर वह
के तुरत बाद पूर्णिमा का चांद निकल
की आभा धूमिल पड़ गई। किन्तु जल्
दो प्रकाश स्रोत से प्रतीत होते थे।

रामसिंह दिन में एक बार
नौजवान था। उसका सांवला रंग भी

छालनी भी बोल्ती है जिसमें सत्तर सौ छेद।'

रामसिह इस बात से न्बा नही। वह और गर्म होकर बोला 'यह सब तेरे कारण है माजी। तू मेरी शादी नही करती तो कभी का पास हो जाता।

'शादी ने क्या तेरा हाथ पकड लिया कि तू शादी को ही दोष देता है। गोर जसी बहू घर मे आ गई और तू--मेरी शादी कर दी सो फेल हो गया।' माजी न मुँह दबाते हुए कहा।

इस वाक् युद्ध के बीच म पुष्पा की चीख बन्द हो गई थी। माजी ने दूध को एक मिट्टी के बर्तन म डाल्ते हुए आदेश दिया, "गोर न कर, जा खोल दे इस कल्मुही को।'

रामसिह ने जब दरवाजा खोला तो उसका सारा क्रोध काफूर हो गया। वह अन्दर का दृश्य देख कर जोर जोर से हँसने लगा। उसकी हँसी देखकर सब घ्ही एकत्रित हो गए। पुष्पा न इस अवधि म माजी की ओढ्णी और घाघरे को चीर करके उल्टे घडे के ऊपर लकडिया के सहारे एक कार्टून बना लिया और कोयले मे नाचे लिख दिया 'बूढ की मा।'

माजी को एक आख मे क्रोध था और एक आख मे हँसी। रामसिह ने माजी के दोना हाथो को हिलाते हुए कहा, 'मेरी मा, सारे घर की मा यह देख तेरी करतूत का नमूना। ठाक है तेरे ही कपडे फटे हैं।'

इसके साथ सबको अपने अपने वस्त्रा को सम्हालने की चिन्ता जागी। सबने अपने कपडे सुरक्षित पाकर खर मनाई। सभी हँसते

हँसते लोट पोट हो गये। भाभी मन ही मन बड़-बड़ा रही थी।

मैं अस्तित्वहीन की तरह सारा दृश्य देखता रहा और इसके पीछे अदृश्य रहस्य को ढूंढने लगा और इसी उधड़ेबुन में अपने कमरे में चला गया।

रात्रि को मदिरा का एक अद्धा लेकर रामसिंह ने मेरे कमरे में प्रवेश किया। मेज पर बोतल रखकर कुर्सी पर बैठ गया। मैंने आज तक इस घर में शराब नहीं देखी थी। एक शिक्षित युवक के हाथ में शराब देखकर आश्चर्य ही नहीं हुआ किन्तु इस बात की निराशा भी हुई कि बदलते हुए समाज के यौवन का व्यक्तित्व घट रहा था। उसने मुझे भी पीने का आग्रह किया मैंने कहा आपको पिया हुआ देख कर ही मुझे पीने का सा आनन्द आ जाएगा। उसने अपनी प्रिय सुरा की महिमा पर एक सुन्दर सा भाषण झाड़ दिया। मुझ जैसे चिकने घड़े पर उसका क्या असर होता? मैंने इसकी बुराइयों की कहानियां कहने में कसर नहीं रखी किन्तु रामसिंह ने बताया कि उसके दर्द की केवल मात्र यह दारू थी। ये बात तो मदिरा के होंठ स्पर्श करने से पहले ही हो सकती थी। पीने के बाद तो पीने वाला पार्थिव जगत से ऊंचा उठकर स्वप्नों के संसार का सम्राट बन जाता है जिसकी कल्पना तो केवल पीने वाला ही कर सकता है अन्य नहीं। ये बात समाप्त हो ही चुकी थी कि कटे हुए प्याज लेकर शांति आ गई-- लो जी देवर जी इस गन्द में ही कोई मजा है? कह कर नीचे चली गई।

रामसिंह दो चार घूंट ही निगल होंगे कि वह ऊंचा उठ गया। वह तो इसको मस्ती कहता था किन्तु मुझे वह निरा पागलपन ही नजर

प्रेमलता

आया। मादकता मे समाज के सस्कारा द्वारा सपुट गुत्थियाँ फूल की पखु-
डिया की तरह खिल जाती है। मनुष्य के कोने म छिपे हुए रहस्य स्पष्ट
हो जाते हैं। राम सिंह की बातो से उस गोपनीयता का उद्घाटन हो गया
जिसकी मैं आज तक प्रतीक्षा म था। बातो के पूर्वार्द्ध म वह अपने विवाह
का रोना रोता रहा किन्तु उत्तरार्द्ध मे उसने कहा, यह पुष्पा, मेरी बहन
पुष्पा इस माजी ने इसका विवाह बूढ़े स कर दिया। मेरे जीजा जी जिनके
साथ मेरी बडी बहन ब्याही थी उसके लडका नही था। माजी न इस पुष्पा
की मेरे बडे जीजाजी के साथ शादी करदी। उनकी उम्र पच्चास से कम
नहीं। बताइये, माजी को हम कैसे अच्छा बतायें। पुष्पा पढी लिखी
पुष्पा, पागल हो गई।

इतना कहकर उसने काच के प्याले मे डाली हुई शराब का एक
घूट और लिया और प्याज के टुकडे चबाते हुए इस प्रकार कहता ही
ही गया सवनाश है भाई प्रकाश। मेरे ये भाई कमीने है इसको
दरवाजे के अन्दर बन्द करते है। इसको छमीटते हैं। अरे भाइ प्रकाश
जो आप म रे दोस्त, न ही भाई हो भाई। अपने भाइयों से
अच्छे भाई। आपको सच कहता हूँ, बिल्कुल सच। य पापी हैं
सब पापी है। डूबेंगे एक दिन।'

रामसिंह मस्ती में बहक गया। उसकी आवाज लड़खडा गई।
इतने म माजी आ गई। मांजी को देखते ही रामसिंह का एक बार तो
त्योरिया चढ गई किन्तु वह फिर थोडा सम्हल गया। शराब के पागलपन
म भी विवेक कही न कही जागृत रहता है। उसकी बात का मोड माजी की

भाग हो गया, 'यह है मेरी माँ अच्छी माँ प्यारी माँ, मेरी माँ' और इन वाक्यों को स्वर लहरी में गाने लगा। अन्त में वह कह ही गया, 'पुष्पा की दुश्मन माँ'

माँजी अपने लाडले पुत्र की ओर एकटक देख रही थी। रामसिंह सन्तुलन खो बैठा था। बोतल की शराब समाप्त थी। अपने पेट का ठीक करने के लिए वह सारी ही पी चुका था। माँजी शायद अपने बेटे के बारे में भली प्रकार जानती थी। उसने हँसते हुए कहा, 'चल खड़ा हो, खाना खाले। ठंडा हो रहा है।' वह उसे उठा कर ले गई।

चन्द्रमा का सीधा प्रकाश वातायन से मुझे कह रहा था, 'मुझे सब मालूम था। मैंने तुझे कहा नहीं मेरी ज्योति तुझे शीतल लग रही है। यह मेरी अपनी नहीं है। सूर्य की ज्योति से मैं प्रकाशवान हो रहा हूं। इस लोक की नारी अपने प्रकाश से नहीं किन्तु पुरुष के प्रकाश से प्रकाशवान् होता है। मुझे जब सूर्य का प्रकाश नहीं मिलता, मैं काला कलूटा हो जाता हूं। लोग कहते हैं, 'ग्रहण लग गया। इस पुष्पा को भी ग्रहण लग गया है। जिस दिन सूर्य रश्मियां मलिन हो जायेंगी मैं भी उदास निराश और कठिन हो जाऊंगा इतना कहकर एक व्यंग की हंसी के साथ पश्चिम की ओर प्रस्थान करता गया।

दमित आकांक्षाओं से जनित पीड़ा का पराकाष्ठा ने पुष्पा के मानस को आन्दोलित कर उसे असन्तुलित कर लिया जिसका प्रभाव मेरे मन पर तो था ही साथ में सारे घर के वातावरण पर भी जिससे सारा भरा पूरा परिवार कुंठाओं और कुढ़न में डूबा हुआ था। यह रोग भी ऐसा जिसका उपचार किसी वैद्य या हकीम के पास नहीं। माँजी इसका

ागलपन का दौरा समझकर केवल औषधियों में ही इलाज नहीं ढूंढती क्तु मन्त्र, जन्त्र डोरा का भी प्रश्रय लेती रही है। उसके विचार में कभी भूत पलीत का प्रभाव था किन्तु वह क्या जाने कि यह दुनिया भूत, लीतो की दुनिया नहीं है। भूत को छोड़कर वर्तमान को भविष्य को पुनहली कल्पनाओं में सजो रही है। मानव ने शरीर के साथ मस्तिष्क का भी विश्लेषण कर लिया है जिसकी गुत्थियाँ सरलता से सुलझाई जा सकती हैं बशर्ते समाज की रूढ़ियाँ उसके मार्ग में अवरोधक बन कर न आयें। माजी कभी इस दलील को नहीं सुनना चाहती थी।

चांदनी दुर्ग की सत्ताहीन वैभव पर व्यंग की हँसी हँस रही थी। वह भूत था, मर चुका था। सारा गाँव सो रहा था। धीरे धीरे मुझे भी नींद आ गई।

हूँ ।'

सुधा ने फिर आगे कहा, ये दोनो बन्धु अपनी अपनी रचनायें प्रस्तुत कर चुके । अब मेरी बारी है । मैं कोई विशेष लेखिका नही हूँ । केवल दो चार तुकबन्दियां कर लेती हूँ । मुझे इस सरस राग रग में अपनी बीमा का नीरसता का विस्मरण हो गया है । मैंने कहा, 'मुझे यह देखकर बडी खुशी हुई कि मैं समय पर ही आ गया । अब आप सुनाईये ।'

सुधा ने अपनी डायरी खोली । साडी के पल्ले पीछे खीचकर चोटी के एक छोर को हाथ से हिलाते हुए सुधा ने कविता प्रारम्भ की —

आकाश के बादलो ने
कर दी धरती पर छाया ।
राहगीर चल पडा
छोड कर बसेरा,
हवा बह रही,
शीतल, मन्द,
किन्तु,
धूप फिर आ गई ।
दूर तक फलती
ले पसीने की झोलियाँ
राहगीर थक गया ।
बठता कहा ?
छोड चुका था वह,

चाहने वालों पर है जो कला और कलाकार दोनों को ही जीवित रखते है। सुधा सम्भवत अपनी कविता की समालोचना नही प्रशसा सुनना चाहती थी। मैंने जितने भी प्रशसक शब्द मेरे पास थे सभी उसकी कविता की प्रशसा म जोड दिए। सुधा हर्ष से गद्गद् हो रही थी। कविता और नारी अपने सौन्दय की प्रशसा की भूखी रहती है फिर यहाँ तो दोनों का सम्बन्ध था।

म पूछ बठा तुमने यह कला कहा से प्राप्त की?

कला तो स्वजात होती है किसी से प्राप्त नही होती। इसलिए सुधा ने यह उत्तर दिया, मुझे यह प्ररणा अपने गुरु से मिली। वे बड अच्छे कवि है। भारत के हिदी जगत म उनका नाम है। आपने भी उनका नाम सुना ही होगा—मधुप जी। यह उन्ही की देन है। उनका आना जाना मर पिताजी के पास बहुत था। वे प्राय हमारे ही घर म रहा करते थे। मैंने कहा नाम तो मैंने ही सना है। कभी दशन नही हुए। सुना है, वह ही मान्य कवि हैं। कुछ दिन पहले मरे मित्र ने उनकी कविता सुनी थी। वह रहा था कि बडा सुरीला गला है। बोलने का ढग बडा नाटकीय बतलाया। व्यक्तित्व भा बडा माहक सुना।

सुधा के चहरे पर अरुणाई छा गई। वह कुछ दर तक मौन रही। मै इस प्रसग स उसके चहर की भाव भगिमा पढ़ता रहा। इस सम्बन्ध म आगे बात करने का मरे पास मसाला नही था। अत मैंने प्रसग को इस प्रश्न से मोड दिया आप कितने भाई बहन हैं।

मैं अपने पिता की इकलौती बेटी हूँ। मां मर चुकी थी।

प्रेमलता

मुझे अपनी मा का प्यार नही मिला। मेरी मासी ने ही मुझे पाला पोसा। उनके भी अभी बच्चा नही है। सुधा ने कहा।

मैंने मुस्कराते हुए कहा फिर तो जोडा ठीक ही बना। बाबूजी के भी मा नही और आपके भी मा नही। ऐसी परिस्थितिया मे प्यार अच्छा निभता है।'

ठीक ही है' सुधा ने कह डाला।

'ठीक ही है पर मैं फिर विचार करने लगा। इसका तात्पर्य था कि बिल्कुल ठीक नही था।

मन स्पष्टवादिनी सुधा को यह कहने का साहस कर लिया, मैंने सुना है कि आपकी लव मरिज हुई है'

सुनने म बहुत सी बातें आती होगी प्रकाशजी। किन्तु इस बात म एक अश भी सत्य नही। हमारी जाति जाट है इसम शिक्षितों का अभाव है। अत शिक्षित शिक्षिता का मेल हो जाय तो भी गनीमत समझिए। इसके साथ रुचि सस्कार विचार और सिद्धान्तों की अनुकूलता का प्रश्न है वह तो नगण्य ही है। सुधा ने इन शब्दो म बहुत सी बात कह डाली।

मनुष्य की महत्वाकाक्षायें हिमालय स भी ऊंची है। एक शिखर को पार करते ही दूसरी चोटी दृष्टिगोचर होती है। वह बस्ता हो जाता है और उसका अतिम शिखर आता ही नही। भारत की नारी इसका अपवाद है। उसके जीवन की यही विडम्बना है कि वह केवल पुरुष की छायामात्र बन कर रह जाती है। अपने स्वतत्र व्यक्तित्व के विकास के लिए यदि वह तिलमिलाती है तो पुरुष उसका अवरोधक बन कर खडा

हो जाता है चाहे उसकी मवच्छ धारामा म सहाय पश हो जाय । सुधा और दिनेश के सम्बध म म कुछ ऐसा ही अनुमान कर सका । मैं इन दोनो के सम्बध म आगे बात करता, ऐसी इच्छा नहीं थी किन्तु सुधा ने स्वय ही कह डाला ' दिनेशजी, उन दिनो म कालिज म पढते थे । पिताजी चाहते थे कि अच्छा वर मिल और अच्छाई का मापदड उनकी दृष्टि म अच्छा घराना और खानदान जिसके पास अच्छा जमीन जायदाद और पसा हो ।' किन्तु सुधा अत मे यह भी कह गई इसका अथ आप यह न निकालें कि म दिनेश से असतुष्ट हू ।'

मैंने कहा सुधा जी यह विधि का विधान है । ईश्वर जो कुछ करता है सो सब ठीक करता है । मैंने बहुत स प्रम विवाह असफल होते देखे है । फिर दिनेश तो बहुत ही योग्य और सुशील युवक है ।

सुधा ने जल्दी म बात काटने के विचार से कहा आप गलत समझ गए प्रकाशजी । मने तो आजकल की आम समस्याओ का जिक्र करते हुए बात कही है । आप तो व्यक्तिगत ले गए ।

मने अपनी झप मेटते हुए कहा नही सुधाजी मेरा मतलब यह है कि आप पर ईश्वर की पूर्ण अनुकम्पा है ।'

नारी अनेक गुत्थियो का उलझा हुआ जाल है । वह कभी अपने मन को खोलकर कभी किसी के सामने नही रक्खेगी जिनम दुबलता का आभास हो । दूसरे की दुबलता को सामने लाने मे उसकी पटुता है ।

सुधा फिर प्रसग बदलकर अपनी कविता और मधुप की बातो पर आ गई । उसको कविता से अधिक मधुप की बातो म आनन्द आ रहा

था । आज की कविता के विभिन्न रूप, उपन्यास, कहानी, नाटक का आज तक का ज्ञान उसे था और मैं यह भी जानता था कि दिनेश केवल दो और दो चार के सिवाय कला के सम्बन्ध मे अधिक नही जानता था । वह कलाकार क्या कला का प्रेमी ही नहीं था । सुधा कला की भूखी तो थी ही किन्तु कला के प्रेमियों की भी प्यास थी उसे ।

दूसरे रविवार को मुझे दिनेश के घर में काव्यकला के थिरकने के स्थान पर पति-पत्नी के बीच म वाक युद्ध का दर्शन हुआ । मैं जब घर म प्रवेश कर रहा था तब सुधा की आवाज जोर से सुनाई दे रही थी, आपको जरूरत क्या थी यह नाटक करने का । मुझे देखते ही दोनों ने मौन धारण किया । मैने निस्संकोच होकर पूछ लिया आज क्या झगडा है ? मैं तो आपके कविता रसास्वादन के लिए आया था ।'

सुधा ने तड़क कर कहा, 'यह सब इनकी मेहरबानी है । कह दिया उनको कि आज सुधा के सिर दर्द है । वे लोग बाहर से चले गए ।

दिनेश स नहीं रहा गया, यह क्या बेशर्मी है ? मुझे यह पसंद नही तुम्हारी कविता कविता की बौखलाहट । यह कोई वेश्या दरबार है ?'

दिनेश बहुत आगे बढ चुका था । मैंने उसी दिन अनुभव कर लिया था कि दोनो का मेल नहीं बैठ रहा था । सुधा यदि भावना थी तो दिनेश व्यावहारिकता । दोनो दो विपरीत दिशायें थीं—अपने अपने क्षेत्र म अलग, अलग । सुधा दिनेश के वाक्यों का सहन नही कर सकी । उसका पारा और गरम हो गया । वह कड़क कर बोली, आप पढ़े हुए हैं या मूर्ख ? क्या कवि और वेश्या एक है कहां गई आपकी बुद्धि ? आपको पसन्द नही

तो आप न सुनें। लेकिन मैं यह नही चाहती कि आप मेरे रास्ते म रोड़ा बन कर खड़े हो जायें।'

पत्नी के इन वाक्यो से दिनेश को और भी आघात पहुचा। वह बोला यदि यही बात है तो सुधा, तुम्हारे और मेरे दो रास्ते है।

मैं नहीं चाहता था कि विवाद बढे। मैंने कहा, 'दिनेश जी आप बैठ जाइये और सुधाजी, आप मुझे पानी का एक गिलास दीजिए।'

विवाद म असबन्धित का प्रभावहीन होते हुए भी प्रभाव बढ जाता है। वह भी उन परिस्थितियो म उपदेशक की श्रेणी म आ जाता है। इस विवाद म मुझे यह लाभ मिला। सुधा ने मुझे पानी लाकर दिया। मैने देखा कि उसके होठ फडफडा रहे थे। आँखें लाल लाल हो रही थी। सारा रूप ही डरावना सा हो गया था। मैंने सुधा से कहा आज कविता म रौद्र रस कम आ गया? सुधा ने स्पष्टीकरण करते हुए कहा 'मुझे इन्होने समझ क्या रखा है? मैंने कभी इन्हे कुछ कहा है? मुझे इस गाव म पटक रखा है। म अपना समय ही नही काट सकती। और यह कहते कहते सुधा फूट फूट कर रोने लगी। सुधा का क्रोध भी सुधा के आसुओ ने शीतल कर दिया। मैंने दिनेश जी से कहा, 'आप तो धैर्य रखने वाले व्यक्ति हैं। आप मे क्रोध कसे आ गया? दिनेश जी ने स्पष्ट कहा 'प्रकाशजी मुझे यह सब कुछ सहन नहीं होता। म सब कुछ देखता रहा सहता रहा। मुझे पसन्द नहीं। मने इसी इच्छा से प्रेरित होकर मने अपने मां बाप से झगडा किया। फिर सब जगह अपनी ही मर्जी।

सुधा ने अपने आसू पोछते हुए कहा रहने दो इस लिए मने मारे माता पिता। म तो उनको यो ही अच्छी नही लगती मुझे गाव की

आनी थी आपकी मा। म तो एक दिन नही रह सकती वहा।' सुधा का रग फिर लाल हो गया।

मने कहा आप दोना उठ जाइये। वे मेरे कहने से बैठ गए। मने सुधा की ओर मुड़ करत ए कहा सुधाजी, विवाह एक सगम है नो आत्माओं का समन्वय एकीकरण और सर्वोपरि आनन्द का स्रोत। एकाकी जीवन खोखला और अधूरा है। और विवाहित जीवन का भी सुखमय बनाने के लिए बहुत ही सयम और सयत व्यवहार का आवश्यकता है। तुम शिक्षिता हो प्रनावती हो और भावनाओं की साकार मूर्ति हो। इस युग की माग है कि देश की गृहिणिया शिक्षिता हो। इस गाव की शत प्रतिशत स्त्रियों का नजर तुम्हारी ओर है और तुम्हारे जोडे की ओर ईर्षा भरी दृष्टि स देख रही है। तुमने यदि अशोभनीय उदाहरण प्रस्तुत किया तो सच मानो समस्त शिक्षा के प्रति ग्लानि और घृणा की भावना पदा हो जायेगी और इसका बुरा प्रभाव भावी समाज पर पडेगा।

मरा अस्त्र अचूक था। उसका सीधा प्रभाव सुधा पर पडा। वह शान्त और शीतल हो गई। उसकी आँखें झुक गइ। वह कुछ समय तक मौन रही और फिर मन्द स्वर म बोली, प्रकाशजी, आप ठीक कह रहे हैं। मैं भविष्य म ऐसी गल्ती नही करूगी।

किन्तु म कहता ही गया हमारे शास्त्रो म पति को परमेश्वर माना है। नारी के लिए पति हो सर्वस्व माना है और उसकी पूजा की बात रही है, किन्तु पश्चिम की शिक्षा भारतीय धरातल पर उचित नही बैठ रही। तुम सुशिक्षिता हो। तुम्हें अपने पति की भावनाओ का आदर करना चाहिए। यदि तुम्हारे पति तुम्हारी उपेक्षा कर इसी प्रकार पाच,

सात लडकियाँ का लेकर गीत गुनाने लगें तो तुम्हें कब तक सहन होगा ?

दिनेश बाबू अपना मुँह लटकाये हुए मेरे ममपन में मौन बैठे रहे। उनके चेहरे पर क्रोध के स्थान पर चिंता की रेखायें झलक आई थीं। सुधा ने मालुमा से अपना मुँह धो लिया था। उसकी आँखें अब क्षमा याचना कर रही थीं।

मेरा उपदेश फिर चालू रहा। मेरा विचार शायद द्वन्द्व का सदा के लिए मिटाने का था। मैं कहता गया विवाहित जीवन जैसा आनन्द नहीं, संसार में यदि दोनों सम वय साथी बन कर काम करें। इस जैसा नरक नहीं यदि मन मुटाव का रूप धारण कर ले। रुचियाँ सदैव भिन्न भिन्न होती हैं किन्तु उनका समन्वय करना होता है। इनमें दोनों को ही कुछ त्याग करना होता है। मैं यह नहीं कहता कि केवल स्त्री ही त्याग करे पुरुष को भी कुछ त्याग करना ही होगा।'

इस पर सुधा को फिर साहस हुआ वह बोल उठी मैं अपनी कविता का विकास करना चाहती हूँ। इनको भी कुछ सोचना चाहिए।'

दिनेश को फिर तर्राटा आ गया क्या यह तेरी कविता का विकास है ? हा हा ही, ही 'टूँ टूँ रेडियो की तरह मचलना हँसना। दिनेश ने अलग अलग पोज बना कर कहा।

मुझे हँसी आ गई। सुधा भी हँसने लगी और दिनेश भी मुस्कराये बिना नहीं रहा। इस हँसी के अभिनय का रूप समझौते में बदल गया।

चाय आई। सबने पी। मैंने इस समझौते का समाधान करते हुए कहा आप अपना कविता का शौक अखबारों में प्रकाशित करवा कर

पूरा कीजिए। इससे आपका नाम भी होगा और कुछ आय भी।'

मेरी बात का समर्थन दोनों ओर से मिला। बीमा आदि कार्य से निवृत्त होकर मैं घर चला गया।

११

हास्य मानस की पुष्पा ने अपने रूप का शृगार किया। उसकी मोहक आँखों म असीम मादकता छलक रही थी। काजल ने उनको और भी लावण्य दे दिया था। देशी पोशाक म वह अधिक जच रही थी।

घर के सभी लोग खेत चल गए थ। मैं कमरे म अकेला पडा हुआ था। घर म भी कोई नही था। मरा मन भी सूना सूना हो रहा था। काम मे भी दिल नही लग रहा था। दोपहर की रुपहली धूप म मैं पलग पर पडा पडा अगडाइयाँ लेने लगा। इतने मे पुष्पा मरे पास आ गई। उसने हाथ जोड़ कर नमस्ते किया। मैंने उसे बैठने के लिए कहा। वह बैठ गई।

मैंने कहा पुष्पा, आज तो तुम ठीक हो।

पुष्पा बोली 'हा भइया ठीक हू। मुझे कोई तकलीफ नही। कोई पुस्तक हो तो दो। म पढ़ूगी।

मैंने पता नही क्या सोचकर यह पूछ लिया 'पुस्तक तो म दे दूगा। किन्तु तुम यह बताओ कि तुम ऐसा क्या करती हो ?

यह पुष्पा के दबे हुए घाव उखाड़ने की बात थी। उसके चेहरे पर अनेक भाव बने और मिटे। उसने अनमने भाव से बात को अनसुना करके फिर पुस्तक की माग की। मैं उसके अनुकूल पुस्तक ढूढने लगा। एक उपन्यास की पुस्तक मिल गई। मैंने उसे मेज पर रखली मैंने फिर कहा, हाँ तो पुष्पा मैं पूछ रहा था, कि तुम ऐसा क्यो करती हो ?

पुष्पा बोली, मेरे बस की बात थोडी ही है। ऐसे ही पता नही मुझे क्या हो जाता है ? इलाज भी कराया किन्तु ठीक नही हुई।

पता नही उस दिन मुझे यह क्या सूझी कि मैं पुष्पा के हृदय को टटोलने लगा। एक उपदेशक की भाषा मे कुछ गम्भीर होकर मैंने कहा देखो पुष्पा, यह चलता फिरता आदमी केवल खाने पीने वाला मासल शरीर ही नही है। उसके दिल है जिसमे अरमानो की एक विशाल नगरी है। उसमे कही भी असन्तोष का विद्रोह हो जाये तो सारा शरीर प्रकम्पित हो जाता है। तुम्हारे भी अरमान थे और वे मैं अन्तिम वाक्य की पूर्ति नही कर सका।

पुष्पा का स्वस्थ विवेक आज सब कुछ समझ रहा था। उसकी आँखें छलछला आई और उसके साथ उसका दर्द भी। वह कहने लगी, 'आदमी के अरमानो को कौन पूछता है ? यहाँ तो सबको अपनी अपनी लगी है। हम तो इन बडे बूढो की कठपुतलियाँ हैं। जैसा चाहे नाच नचावें। हमारी क्या गलती है ? इस नये समाज के वातावरण ने हमारे मस्तिष्क और हृदय का ढाचा बदल दिया अन्य था उसाप हल या बन ही रहा था।,

स्वस्थ और अस्वस्थ पुष्पा में भारी अन्तर था। घावो को अधिक

कुरेदना उचित न समझकर मैंने दूसरे प्रश्न से बात बदल दी। मैंने पूछा, 'कहाँ तक पढ़ी हुई हो ?'

पुष्पा बोली, आठवीं पास करली थी। नवीं में भरती हो गई थी कि घर वालों ने विवाह कर दिया।' यह कहती हुई वह कुछ लजा गई।

मैंने कहा अब भी पढ़ने का शौक है।

'शौक तो बहुत है किन्तु बीमारी पीछा नहीं छोड़ती।' पुष्पा ने कहा।

तू मेरे पास आकर पढ़ लिया करो ? तेरा दिल बहल जायगा।' मैंने कहा।

पुष्पा के चेहरे पर थोड़ी मुस्कान चमकने लगी। हाथ से अलकों को समेटते हुए बोली कब आया करूँ ? मैं थोड़ी हिन्दी और पढ़ना चाहती हूँ। मेरे पास तुलसी का राम चरितमानस है। आप उसी के अर्थ बता दिया करें।'

'हाँ हाँ जरूर। मैंने स्वीकार किया।

'आप बहुत अच्छे हैं। पता नहीं उसने क्या कहा ?

पुष्पा पुस्तक लेकर चली गई। पुष्पा पर जितना सोचता उतनी ही गुत्थियाँ अधिक उलझ जातीं। मैं किसी भी निर्णय पर नहीं पहुँच पा रहा था। इतने में नीचे से आवाज आई जीजाजी आ गए जीजाजी आ गए। यह आवाज बच्चों की ही थी। कुछ देर में भी औरतों से घर भर गया और सभी मेहमान की सेवा सत्कार में जुट गए।

उत्सुकतावश समझिए या व्यावहारिकता के नाते कुछ समय के बाद मैं भी कमरे में चला गया। पुष्पा के पति बिछे हुए पलंग पर बैठ

थे। स्वच्छ धवल कपडा से आवृत थे और सामने पडे हुए हुक्के को गुडगुडा रहे थे। कृशकाय शरीर कृत्रिम कालिमा वाली उभरी हुई मूछे सिर पर सफेद साफा, आगे के चार दांत नकली जो बोलते समय बुढ़ापे का प्रचार कर रहे थे। निकट पुत्र के पिता भी बैठे हुए थे। फसलों की बात चल रही थी। फसलें अच्छी हैं। अनाज अच्छा हो जायगा। नहरों ने पानी कम दिया। नहीं तो फसल और अच्छी हो जाती, आदि आदि। फिर विषय आज की राजनीति पर आ गया। शासन में भ्रष्टाचार है, नौकर-शाही का बोलबाला है। मुँह खोल रखा है नौकर ने। सुने आम लूट है। कोई पूछने वाला नहीं इत्यादि। फिर बात चीन के आक्रमण पर चल पडी। हिन्दुस्थान पर कलंक लग गया। हुकूमत ने फौज का इंतजाम ठीक नहीं कर रक्खा था। मुँह की खानी पडी। ऐरे गरे फौज में भरती कर रक्खे हैं। बनिये ब्राह्मणों की सरकार है। वे क्या जानें लडाई के बारे में। राज तो क्षत्रियों को ही शोभा देता है। बनिये तो बेचना तोलना जानते हैं। क्षत्रियों का राज होता तो मजा चखा देते।

इस प्रकार की साधारण भाषा में साधारण बातें साधारण स्तर पर चल रही थी। जीवन की अनेक उथल पुथल, आरोह अवरोह को अनुभव किए हुए दिमागों की बातें थी जिनमे न कहीं पूर्वाग्रह था न कहीं लगाव। मैं हस्तक्षेप भी कैसे करता? हस्तक्षेप करता तो मुँह की खाता। 'कल के छोकरे क्या जानें इन बातों को। हमने जमाना देखा है। अंग्रेजों का राज, राजाओं का राज और अब कांग्रेस का राज देख रहे हैं।' विरोध करता किस मुँह से? सभी बातें सत्य भी है। राज में नौकरशाही का बोलबाला है। चीन की लडाई में भारत को मुँह की खानी पडी। इन

प्रेमलता

सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात जो मुझे रह रह कर सता रही थी पुष्पा की जिसका इस शांत सभी लोग के साथ अनुवाप कर लिया। विधि की विड-म्बना कह या समाज की असमनस्कता या माजी का अनभिज्ञता या हठ-धर्मी, किन्तु पुष्पा के साथ अन्याय हुआ। इतने म पुष्पा के पति जिनका नाम बाद म रामलाल बताया गया खांसी म उलझ गया। मुँह लाल हो गया। मूँछें फूलने लगी और दांत उछल उछल कर लगे नृत्य करने।

पुष्पा के पिता हरीराम ने पूछा, क्या कहीं जुगाम लग गया ?'

रामलाल का इतनी फुरसत कहाँ थी कि वह हरीराम की बात का जवाब देते। व तो खासते ही रहे कि दांत स्थान छोड़ कर नीचे गिर पड़े। इतने म हरीराम को भी खांसी शुरू हो गई। दोनों ने जैसे प्रतियोगिता करली हो। धीरे धीरे दोनों को आराम मिला। उन्होंने इस पर कतई ध्यान नहीं दिया जैसे यह रोजमर्रा की बात हो। व उसी प्रकार बातों म जुट गए। विषय पुष्पा की बीमारी पर आ गया। हरीराम ने सारी हकी-कत बयान की। रामलाल का चेहरा शून्य-सा हो गया। चेहरे पर झुर्रियों के नक्शे बनने और बिगड़ने लगे। खांसी का दौर फिर शुरू हो गया। पानी की घूंट लेकर बूढ़ा शांत हो कर लेट गया। मुझे इस दृश्य ने उद्विग्न कर दिया। कितना अन्याय हो गया इस सुकुमार पुष्पा की देह पर ! मैं यह सोचते सोचते पुन अपने कमरे म चला गया।

अचानक घर के भीतर से एक चीख सुनाई दी। शांति ने माजी को आकर सूचना दी कि पुष्पा बेहोश हो गई। माजी ने रोष भरे शब्दों मे कहा इस कजरी को आज ही बेहोश होना था। मैं चाहती थी कि आज इसको अपने ठौर ठिकाने पहुंचा देती। बहुत कुछ कहने सुनने पर तो राम-

लाल जा आये थे।'

शान्ति क मुह से आवाज निकली, कोई नही, दो दिन रामलाल जी और ठहर जायेंगे। मै जल्दी स वैद्यजी का बुला कर लाती हूँ।'

थोडी देर मे वैद्यजी आए मालूम हुए। सुना कि उन्होने 'इजक्शन' दिया और खान की कुछ पुडिया। शाम तक पुष्पा ठीक हो गई, ऐसा सुनने मे आया।

रात को पुष्पा क पति रामलालजी को दमे का दौरा पडा। रात भर वैद्यजी क चक्कर लगे। सुबह तक पति पत्नी दोना ही स्वस्थ अवस्था म थे। शान्ति की योजना थी को पुष्पा का बातचीत के लिए रात्रि को अपने पति के पास भिजवा दिया जाता। दोना के दिल स दिल मिलाने का प्रयास था किन्तु दोनो की बीमारियो क कारण योजना सफल नही हो पाई।

पुरुष के सामथ्य और शक्ति पर अवस्था का इतना नही जितना बीमारी का कुप्रभाव पडता है। रामलाल अवस्था में तो अधिक था ही किन्तु उससे अधिक बीमारी का प्रभुत्व था जिससे उसकी काया क्षीण और कृश हो गई थी। मानसिक कुठा से वह और निस्तेज हो चुका था जिससे मरे हृदय म उसके प्रति वितष्णा का भाव पैदा हो गया था।

मैंने पुष्पा को भी देखा जो कल सुबह की पुष्पा से भिन्न थी। बीमारी ने उसे तोड मरोड दिया हो। वह धीरे धीरे अपने कोठे स बाहर निकली और अशक्त सा खाट पर गिर पडी। मैंने समीप जाकर पूछा, 'पुष्पा, ठीक है?'

पुष्पा ने अपनी आँख एक बार खोली और फिर बन्द कर ली। जसे रोना चाहती थी कि तु रोने के लिए आँसू हा सूख चुके थे। माजी ने कहा ठीक तो है बेटा लकिन कितनी कमजोर हो गई है ? क्या इलाज कराऊँ इसका ? तेरी निगाह म काई डाक्टर है तो बता। इतना कहकर वह अ दर काम म लग गई वह घी निकाल रही था। पानी डालने के लिए वह बाहर आई थी।

रसोई म हलवे म कड़छी मारते हुए शान्ति ने कहा लगा हुआ रोग जाता नही माजी। डाक्टर क्या कर लेगा ? कितने डाक्टर देख चुक हैं इसे ?"

इतने म सरपच बाहर से आ गया जा करीब प द्रह बास दिन से घर पर था ही नही। भागते हुए घर मे आना खाना, पीना करके निकल जाना इसो रूप मे मने इयोनाल सरपच को देखा था। वह अभी अभी कमरे म अपने जीजा से मिल कर ही आया था। घर म पुष्पा की स्थिति का देखकर वह भी द्रवाभूत हुए बिना नही रह सका। सारी कहानी आद्योपा त सुनी और मिनटो मे एक जीप की व्यवस्था क८ निकट मडी के अस्पताल म ले गया।

दो दिन बाद जब पुष्पा लौट कर आई तो
औषधि से ठीक हाकर अपने गाव को प्रस्थान कर चुके
स्वस्थ नजर आ रही थी।

रामसिंह अपने सम्ब धियो म घूमकर आ
शाम को भ्रमण का कायक्रम बन गया। रेतील
बठने मे विशेष आनन्द आना है फिर दूर से क८

वायु का झोंका और भी आनन्दित कर रहा था। धूल को हथेली में लेकर उछालते हुए रामसिंह ने कहा, निराशा भरे जीवन को धूल के समान कहा गया किन्तु धूल की उपयोगिता को देखिए। यह समस्त प्राणियों की जीवनदायिनी है प्रकाश।

निराशा म भी माधुय है रामसिंह यदि इसको घूट घूट करके पिया जाय। निराशा स तो ऐसे विशाल वक्ष तयार हुए हैं जिनके फलों को आज तक लोग खा रहे है ! गिर कर ही तो आदमी उठता है। गिर कर और गिरना अक्लबन्दी नहीं है।' मने कहा।

'आप तो कवि बन गए, प्रकाशजी। कवि निराशा में वह गीत लिख जाता है जो पाठक के आसुओं को धोकर निमल और अविच्छिन्न कर देता है। कवि के अतिरिक्त तो यह समाज के लिए घातक ही है।' रामसिंह ने उत्तर दिया।

मैंने कहा निराशा के तट पर कोई फिसल जाय और उसमे डूबकर अपने प्राण दे दे तो उसका क्या इलाज ? इसकी लहरों मे तरने का ही आनन्द है।

रामसिंह ने फिर कहा मेरे भाई मुझे तो लहरों म आनन्द नही आ रहा। मैं तो फिसल चुका हूँ। अब तो प्राण ही देने पड़ेंगे।

आज के युवक की यही तो भूल है मेरे मित्र। वह तो बाह्य लावण्य का पारखी है उसके अन्तर की सौरभ तक नहीं पहुँचता। रंग रंगीली फुदकती तितलियों का प्रेमी है घूघट म छिपे माधुय का उसे क्या पता ? मन चाही छोकरी नहीं मिली तो बस प्राण देने की बात आ जाती है।

क्यो ? है न यही बात ।' मैंने कहा ।

रामसिंह बोला, 'आपने मेरे हृदय की नब्ज पकड़ली । आप वास्तव मे मेरे मन की बात कही ।

मैंने कहा 'देखो भया जीवन एक विशाल पवत है । उसे दू मे देखकर घबराना नही चाहिए । इसके निकट जाइये । कही न कहीं पगडण्डी अवश्य मिलेगी ।'

इस बात से कुछ क्षणो तक वह विचार मग्न हो गया और उस फिर मौन भग किया, 'मुझे तो पुष्पा की चिन्ता है । उसका क्या किया जाय ?

'जीवन एक नशा है रामसिंह मैंने कहा किसी को धन का नशा किसी को अपने तन का नशा किसी को अपनी बुद्धि का तो किसी को अपनी सिद्धि का । जीवन का मस्ती ही इस नशा म है और तभी जीवन जीवन है । यह नशा नही तो जीवन नही । नशे के बिना जीवन मृत्यु स भी घटिया है । इस नशे के अभाव म लोग नशा करते है । फि जीवन कुछ टिका हुआ रहता है । इसके अभाव म मनुष्य अपना मानसिक सन्तुलन खो बैठता है । अभाव की पूर्ति की सम्भावना प्रगति है । इसकी असम्भावना ही पागलपन है । पुष्पा पागल हो गई क्योकि उसका नशा उतर गया और सम्भावना की आशा धूमिल ही नही लुप्त हो गई सदा के लिए मृत्यु तक के लिए ।

रामसिंह अपनी अगुलिया स अपने बालो की कघी करने लगा जस उलझना की उदासी को भगाना चाहता हो । किन्तु चेहरे पर हाथ फेरने स भी उदासी नही भागी । दबी दबी आवाज म उसने कहा

'मनुष्य कितना दुबल है प्रकाश !'

'नहीं नहीं, रामसिंह' मैं बोला, दुबलता और सबलता दोनों ही मनुष्य की सहचरियां हैं किसी पर दुबलता हावी हो जाती है तो किसी पर सबलता। हीन भाव किसी को बना देता है तो किसी को मिटा भी देता है। दुर्बलता को अपने पर हावी न होने दीजिए फिर जीवन की प्रक्रिया गतिशील होगी। इस गति में सर्वस्व है– सफलता, आनन्द और मस्ती।

रामसिंह के चेहरे पर क्षणिक दीप्ति लक्षित हुई और फिर वही म्लानता।

मैंने कहा फिर उदास हो गए। क्या वेदना है तुम्हारे हृदय में ?'

रामसिंह ने फिर कहा क्या बताऊँ ? घर का भेद है। तुम दिनेश को जानते हो ?'

वह, क्या नहीं ? उसकी स्त्री तो मेरी बीमा की एजेंट है। मैंने कहा।

यह दिनेश बड़ा सीधा और भला आदमी है। रामसिंह बोला।

कोई शक नहीं। मैं उसको अच्छी तरह पहचान गया।' मैंने कहा।

रामसिंह कहने लगा 'हमारे और इनके घर के बड़े अच्छे सम्बन्ध थे। मेरे भाई श्यामलाल और दिनेश के पिता पनराम में बड़ी घनिष्टता थी। ठाकुरशाही का इन दोनों ने मिलकर कड़ा विरोध किया था। ये दोनों जेल में भी साथ रहे। चौ० पनराम के कोई सन्तान न होने पर यह दिनेश को गोद ले आया। दिनेश पढ़ने में ठीक ही था। यह पुष्पा भी पढ़ रही थी। मेरे भाई और चौ० पनराम की इच्छा थी कि हम दोनों रिश्तेदारी

के वचन म वध जाय । इस पर पुष्पा के साथ दिनेश का विवाह करने की सोच ली । दोनो मिलते जुलते भी रहे । इनम प्रेम भी था । किन्तु भवितव्यता को कौन टाल सकता है ? दिनेश का विवाह सुधा से हो गया और वह भी घरवालो और दिनेश स्वय की मर्जी के विरुद्ध । कुछ ऐसी परिस्थितिया बन गई कि दिनेश को शादी करनी पडी । दिनेश इसका विरोध भी कर सकता था किन्तु इतना मादा नही है उसम । इधर पुष्पा के साथ जैसा हुआ वह आप जानते ही हैं । मैने इसका प्रतिवाद भी किया किन्तु समय निकल चुका था । उसके बाद चौ० पतराम के परिवार से सम्बन्ध टूटते गये । परिणाम यह निकला कि हम एक दूसरे के विरोधी हैं । इस गाव म कोई दलबन्दी नहा थी । अब इतनी दरार पड गई है कि मिट नही रही । दो वर्ष पूर्व इसी गाव मे एक शिविर लगा जिसम बाहर के नेता और मन्त्री आए थे । उस समय मेरा भाई और चौ० पतराम आपस म इतने बाते कि मन्त्रियो को बीच बचाव करना पडा । चौ० पतराम ऊपर का मीठा है । अन्दर स विषला कोला साप है । हम किसको दोष दे ? हमारा भाग्य ही ऐसा है ।

रामसिंह ने यह कह कर शायद अपने दिल का भार हल्का कर लिया था किन्तु उससे मेरा दिल भारी हो गया । म मन म सोचने लगा कि इस घर को इनकी अपनी दुबलता ने अकझोर दिया । भाग्य क्या है ? क्या नहीं है ? हाथ की रेखाओ का मनुष्य के लिए कितना महत्त्व है ? यह तो अलग विषय है । मनुष्य भाग्य को बनाता है या भाग्य मनुष्य को । यह तो एक ऐसी पहेली है जो समझ म न आती । किन्तु इतना सत्य अवश्य है कि मनुष्य अपनी परिस्थितियो का पुतला है । परिस्थिति के भार राजा

म रक और रक से राजा बना देने ह । गद्दी से गडढे और गड्डे से गददी पर पहुँचा देता है । अपन दुभाग्य पर रोना और वहादुरों क गीत गाना दोना निरथक ह ।

सूय रश्मियां आक्रान हो गई । पशु पक्षियो का कलरव ब द था । वहो कही खड़े जगली पौधा म निरन्तर ची ची का ध्वनि आ रही थी । वायु भी मौन थी । बढ़ते हुए अधकार ने घर जाने का आदेश दिया ।

१२

पचायतो के चुनाव में केवल एक महीने का अ तर था। प्रदेश भर म यह चुनाव होना था। इस गाव म भी चुनाव की सरगर्मी शुरु हुई। प्रश्न सरपच और पचो का था। पचो का प्रश्न इतना गम्भीर नही था जितना सरपच का। चौ० दयोलाल स्वय उमेदवार तो था ही किन्तु वह चाहता था कि चुनाव सब सम्मति से हो जाये। उसका प्रतिद्वन्द्वी केवल पतराम था। यदि पतराम न खड़ा हो तो उसकी विजय म सन्देह नही था। ये चर्चायें पहले तो कुछ पेशेवर राजनीतिज्ञो तक था कि तु धीरे धीरे बाहर चबूतरो की बठको म आ गई। अन्त म घर घर की बातो का विषय बन गई। पतराम अपना आदमी खड़ा करेगा और उसका पार्टी उसका समथन करगी। प्रारम्भ म यह बात जोरा पर रही। दयोलाल क दिमाग म इस बात स घबराहट नहीं थी। जब चुनाव मे पन्द्रह दिन शेष थे दूसरी बात जोरों पर चल पड़ी कि पतराम स्वय मुकाबले म आएगा। दयालाल के दिल म इस बात स घबराहट हो गई। इन्हीं दिनों म इस क्षेत्र म काग्रस के एक चाटी के नेता का आगमन हुआ जो पहले कभी मत्री पद पर था। उसके स्वागत म दोनो ने ही अपनी ओर स तयारिया की। ठहरने की व्यवस्था दयालाल के घर पर थी। यहो नेता पहल पतराम क यहां ठहरा करता था।

इससे यह अनुमान लगाया कि पतराम से किसी कारणवश नेता की असतुष्टि है। उसके स्वागत म पतराम ने किसी प्रकार की कमी नही रक्खी। गाँव म स्थान स्थान पर द्वार बनाये गए। उसके करकमलो से औषधालय का उद्घाटन करवाया गया। स्कूल म उनके भाषण की व्यवस्था की। यहा तक कि विभिन्न स्थानो पर 'स्नेप' लेने के लिए फोटोग्राफर भी बुलाया गया।

रात्रि को खाना खाने क बाद जब नेताजी आराम करने लगे तो उस समय गाव के प्रमुख व्यक्ति उपस्थित थे। चौ० पतराम जान बूझ कर नहीं आया। उसके साथी वहा अवश्य थे। चौ० श्योलाल ने नेताजी से प्रार्थना की कि वे दोनो दलों मे समझौता करा देव। क्षत्र के कुछ तत्त्व ऐसे भी वहा थे जो समझौता नहीं चाहते थे। सम्भवत इसका कारण यह था कि इस दलबन्दी म उसका स्वार्थ निहित था। नेताजी इन्ही तत्त्वो के सकेत से चलने वाल थे। बात आगे नही बढ सकी। व इतना कहकर ही उठ गए कि यह दलबन्दी इनकी आपस मे ही पैदा की हुई थी और समय आने पर स्वत दूर हो जायेगी। इतना कुछ होने पर नेताजी का ग्राम सभा मे भाषण हुआ जिसमे एकता और सगठन पर विशेष बल दिया गया। उस समय न तो पतराम ही उपस्थित था और न उसका फोटोग्राफर। नेताजी अपने साथियो को लेकर जीप से रातोरात मडी चले गए।

प्रात गाव से लेकर मडी तक यह समाचार फैला कि पतराम का प्रभाव ऊपर के नेताओ से हट गया। इसके साथ में यह खबर जोर पकड गई कि पतराम और श्योलाल दोनो चुनाव म डटेंगे। दोनो पार्टियो ने अपना चुनाव अभियान प्रारम्भ कर दिया।

चौ० श्योलाल का घर अब दिन भर आदमियों से भरा भरा रहने

'कवि लोग ऐसा ही सोचते है' मने कहा, लकिन यह ता पला यनवाद है। साहित्य म ऐसा आता है किन्तु आज के युग के कवि का पलायन नही करना है, निर्माण करना है निर्माण।'

सुधा गाम्भीय स बाली इस वातावरण म तो निर्माण की कल्पना ही नही का जा सकती जहा शराब की दुग ध दूर दूर तक फैला रही हो।

मने सुधा क अकाटय तक को काटत हुए कहा सुधाजी विकास की प्रारम्भिक भूमिका इसी प्रकार बनती है। समाज गतिशील है। बढन युग की य बाधायें है। जनतन्त्र का नागरिक शनै शन इन दुगु णो को स्वत दूर करगा। समय आने पर ऐसे समाज का निर्माण हागा जिसको हम पचायता राज का आदश रूप मानते हैं।

सुधा मरी बात स सहमत नही थी। उसकी आँखें विस्फारित होकर मरी आर दखन लगा। उसने विश्वास भर स्वर म कहा य सब निरथक बातें है। इसम आपक पचायती राज का भट्टा बठ जायगा। य चोर बदमाश लुच्च आदमी आपक भारत को खा जायेंगे।

सुधा की इस अप्रिय भविष्यवाणी का क्या उत्तर दता? मैंने इतना ही कहा इन चार बदमाशा का प्रोत्साहन दता कौन है? जनता ही ता। जब जनता इनक दुष्परिणामा को भुगत लगा ता फिर इनका समथन नही देगी।

सुधा का स्वर और दृढ हा गया। उसन कहा जनता म क्या है? यह तो बेवकूफा और स्वार्थियों का टाला है। स्वार्थी अपना स्वाथ पूरा करन क लिए इन नताआ क साथ चिपक जात हैं और बेवकूफ उनक पाछ लग जात हैं। बस बन गया रामराज्य।

जनतन्त्र म य कमिया तो रहेंगी।' मैने कहा 'इसका कोई उपचार नहीं है।'

सुधा मौन बठी रही। शायद मेरी बात उसे असह्य थी। अधिक देर तक उसका चुप रहना भी मुझे अखरने लगा। मैंने अपनी बात बदल दी, तुम लोग यहा कब आये ?

यही मात दिन हो गए। श्वसुर साहब स्वय जाकर ले आए। काम काज ज्यादा था न।' सुधा ने कहा।

दिनेश बाबू ने आनाकानी नहीं की ? मैंने पूछा।

सुधा के स्वर म फिर राष भर गया, 'दिनेश मे क्या है ? उनम अपनी अक्ल कहा ? कहने लगे कि चलो, पिताजी बार बार थोडे ही कहते है। उनम न तक न बुद्धि नीरम पुरुष कहती कहती सुधा रुक गई।

सुधा अपनी सीमा से आगे बढ गई थी। अपने पति के सम्बन्ध म ये शब्द नहीं कहने चाहिए थे। मैंने उसका प्रतिवाद किया, भारतीय नारी की यह परम्परा है कि वह अपने पति को सर्वदव मान कर चले। उसके आदेश को सिरमौर माने।

सुधा बोली म उनके आदेश को शत प्रतिशत मानना चाहती हूँ। ईश्वर ने पुरुष के साथ स्त्री को भी बुद्धि दी है। हम नारिया काठ की बनी पुतलिया तो नहीं कि पुरुष अपनी आज्ञा की डोरी से हम हिलाता रहे और हम उनके सकेत पर नाचती रह। नारी का भी अपना व्यक्तित्व है। हम विवेक रखती है। भला बुरा सोच सकती है। विश्व के महत्वपूर्ण काय मे अपना निणय द सकती हैं। समझे प्रकाशजी।

मैं सुधा की बात को समझ गया था और यह भी समझ गया था

कि सुधा और दिनेश का सास्कृतिक सम्बन्ध ठीक नहीं बन पाया। सूय पश्चिम क्षितिज को स्पश करने वाला ही था कि हम लौट पड़।

रास्ते म भी बहुत सी बातें हुई। मने अनुमान लगाया कि सम्भवत सुधा और दिनेश का भविष्य मे सम्बन्ध अच्छा नहा रहेगा। सुधा अच्छे सुसस्कृत वातावरण मे पली हुई थी जहा सगीत की सुधा और काव्य का माधुय निर्बाध गति से बहा था। दिनेश एक साधारण स्तर का युवक था जिसम न सरिता की कलकल धारा थी तो न कोकिला का मा माधुय। सुधा भूखी थी प्यासी थी। उसको प्यास थी भावनाओ की कल्पनाओ की और उनकी तृप्ति नही मिल रही थी उसे। म उद्विग्न हो गया कि कभी यह कुटिया किसी झोके से ढह न जाये।

अपने कमरे म पहुचा तो देखा कि शान्ति मेरे आइन म अपनी मुस्कराहट का दशन कर रही थी। मुझे देखकर वह चौक गई और बोली इस चुनाव न तो मुझे काली कर दिया। मुझे भी मसखरी सूझी। मन कहा, क्रीम देह लगाओ। गोरी हो जाओगी।'

बस अब तो थोड़ ही दिन रहे है। बला टल जाएगी। शान्ति ने कहा।

आज फुरसत कस मिल गई ?' मन कहा।

शान्ति न कुर्सी पर बठत हुए कहा आज जेठजी बाहर गए है किसी नेता का लान क लिए।

'टक्कर तो तगड़ी है म न कहा।

शान्ति बोली टक्कर जमी भी हो। इस झगड म कोई फायदा नहीं। घर बरबाद होता है। रात दिन बिना मतलब का फिकर।

अप्रमन्ना

चाट लगी हुई है छूटती नही, म बोला।

आप कहा गए थे आज ? सुधा के यहा ?' शाति ने बात को मोड दिया। यह कहते हुए उसकी भृकुटी चढ गई।

आपको कैसे मालूम ?' मैंने कहा।

म सब जानती हूँ वह बोली मुझे क्या भोदू समझा आपने ? अनपढ हूँ तो क्या हुआ ? आदमी की रग रग समझती हूँ।'

मैने पूछा, 'क्या आदमी बुरा होता है ?

और क्या' वह तडक कर बोली 'घर घर भटकने की आदत होती है इन। जहा टुकडा मिला, लगता है पूछ हिलाने।'

क्या मुझे भी ऐसा ही समझती हो ? मैंने पूछा।

आपके क्या है ? भूख तो सबको लगती है। कुछ मुँह को ढकती हुई बोली।

मुझे हँसी आ गई। शाति का मनुष्य के बारे मे विचार कहा तक उचित था ? यह तो वह जाने। किन्तु मेरे सम्बन्ध म वह ऐसा निर्णय क्यो कर पाई ? यह मैं नहीं समझ सका।

मैने अपने बारे म विश्वास दिलाने के विचार से कहा, 'आदमी आदमी म भी अन्तर होता है शाति। सभी अगुलिया तो बराबर नही होती।

यह बात तो म मानती हूँ वह बोली, लेकिन वहा तो चुनाव जीतने के लिए सब कुछ किया जाता है। उनको अपनी इज्जत प्यारी नही है। पसे की उनको परवाह नहीं। सब तरह से पसा कमाया हुआ है उस घर म। बहुए अच्छी तरह से सत्कार करती ह बडो बडो का। अच्छा हुआ,

'तो फिर क्या बात है ?' वह बोली ।

मुझे तो अपने हाथ से रोटी बनाने की आदत पड़ गई है।' मैं बोला ।

नहीं, आज तो तू हमारे घर की रोटी खाएगा ।' माजी ने कहा और उसने पुष्पा को खिचड़ी लाने का आदेश दिया ।

पुष्पा खिचड़ी में घी डलवाकर एक थाली मेरे लिए ले आई । मैं इन्कार नहीं कर सका ।

मैंने कहा क्या तकलीफ की, माजी ? भूख तो थी ही नहीं ।

इसमें क्या है ? थोड़ी सी ही तो है खा ले । माजी ने आग्रह किया ।

मैंने खाना शुरु किया । इतने में दूध भी आ गया । मैंने उसको भी उसी में मिला लिया ।

बूढ़े आदमी को पुरानी बात बहुत प्यारी होती है । उनका भविष्य धूमिल होता है तो वर्तमान शुष्क । शेष समय भूत के सुनहलेपन की स्मृति में ही बीतता है । हारा ठाकर आनिय करे पुरानी बात' की कहावत ही सत्य सिद्ध होती है । माजी कहने लगी– पुराने जमाने में लोगों के पास पैसा नहीं होता था । लोग छाछ राबड़ी खा पीकर गुजारा करते थे । नोट तो थे ही नहीं । रुपये के सिक्के होते थे जिनको वे अपनी कमर में बांध रखते थे । अनाज बहुत सस्ता होता था । अनाज का बटता ही क्या था ? सौ मन अनाज के केवल दो सौ रुपया । उसी में हाल्ा (भूमिकर) भरते थे । घर का काम काज चलाते थे । विवाहादि का खर्चा भी निकालते थे ।

फिर यह आज की स्थिति पर आ गई– ज्ञाप का रिवाज गराब की सन ग्रौर दारे दुगुण प्रापि ।

फिर पुरानी बातो पर ग्रा गई— राजाओ ग्रौर ठाकुरो का राज होता था । ठाकुर लागा के ग्रपने रिवाज हाते थे । भू गा लते थ वेगार सत थ । जमीन दत भी थ छान भी लन थ । ग्रब तो जमीन का हक मिल गया है । कोई जमीन छीन नहा सकता । लकिन गु डे नही हात थ बदमाश नही पलते थे । ठाकुर क गढ म याय मिलता था । कोई कुछ भी कह लेकिन हमारा ठाकुर बुरा नही था । रयत पर रहम था उसक दिल म। श्रादि जादि ।

इस तरह की बहुत सी बात माजी भूत ग्रौर वतमान की तुलना म कह गई । कितना परिवतन हुआ है इस युग म । युगा से चली ग्रा रही शामतशाही ग्रौर राजशाही का समूल ग्रत ग्रौर जनतत्र पचायतीराज का प्रादुर्भाव जिसम जन जन म जागरण फिर भी यदि इसका सदुपयाग नहो हो तो फिर दोषी कौन ? जनता ही ता । कि तु युगा स गुलाम भारत ग्रौर राजाग्रा का भारत ग्रौर ठाकुरा का भारत तिहरी गुलामी म पिसता हुआ भारत । इसके मानस को गुलामी के सस्कारो स मुक्त कराने क लिए समय ता लगेगा आदि विचार मरे मन म घूमने लगे । माजी का व्याख्यान चलता रहा । मैंने श्रपना भोजन समाप्त किया । इस बीच हू की स्वीकारोक्ति क ग्रतिरिक्त कुछ भी नही बाल पा रहा था ।

इतने म पुष्पा भी ग्राकर वही बठ गई । वात्सल्य भाव स माजी ने उसका गुलाबी मुखडा ग्रपने गोद म ले लिया जस कि वह पाच साल की बच्ची हो । मु ह पर हाथ फेरत हुए माजी ने कहा ग्रब तो बेटी ठीक हो

रही है। पालतू बिल्ली की तरह पुष्पा प्यार से और प्रफुल्लित हो गई। मैंने स्नेह भाव से उसकी आंखों में देखा। उसके लावण्य भरा तरुणाई की गगरी से झलक रहा था। विशाल नयनों में मादकता मुस्करा रही थी। एक सहज सौन्दर्य था जो रुग्णावस्था में उसे छोड़ जाया करता था। मैंने माजी से कहा आजकल पुष्पा मेरे से राज रामायण पढ़ती है माजी।

ठीक है बेटा, इसका कुछ मन तो लगा रहता है। बड़ी पगली है यह। सदा से ही ऐसे ही स्वभाव की है। माजी ने कहा।

पुष्पा सीधी होकर बैठ गई और चोटी को पीछे फेंकती हुई उपालम्भ की भाषा में बोली आज कहां पढ़ाया आपने ? सुबह से पता नहीं कहां थे आप ?'

माजी ने समय का लाभ उठाया। उसने हल्के से पुष्पा का सर थपाते हुए कहा 'जा उठ ले आ अपनी पोथी। मैं भी सुनूं। राम का नाम बड़ा महंगा है। इस झंझट से पिंड छुटता ही नहीं। मैं तो चाहती हूं कि सब कुछ इन बहू बेटों को सौंप कर खुद हरिद्वार जा बैठूं। लेकिन ये मानते कहां ?

मैं समझ रहा था कि माजी की ये बातें केवल दिखावा मात्र थीं। उसको तो यह शासन प्रिय है जिसको वह कब्र में जाने से पहले छोड़ नहीं सकती।

पुष्पा ने तुलसी की रामचरितमानस की मोटी पोथी के साथ प्रवेश किया। अध्ययन प्रारम्भ हुआ। सीता के स्वयंवर का दृश्य था। कई युग पहले की कथा है। नारी का कितना अधिकार था। सीता का अपनी रुचि के अनुकूल वर चुनना था। उसका माप दण्ड था पुरुष का पौरुष। मन

मिलने की बात नही थी। सौन्दय की प्रतिमूर्ति नारी पुसत्व को समर्पित होती है अपनी शील की रक्षा के लिए। यही तो शील्ता की महानता है। शिव धनु को उठाने वाला ही सीता का वरण कर सकता था। सौम्य की बात न होकर साम्य की बात थी। सीता भी उस धनु को उठा सकती थी। कथा चलन लगी। बडे बड योद्धा आए किन्तु सभी असमथ। जनक चिन्ता ग्रस्त हो गया। सारी भूमि वीरो से खाली हो गयी क्या? भगवान राम का आगमन। मेरे सामने भी आज के राम की पुष्पा बठी थी। उसका भी वरण हो चुका था। पौरुष के बल पर नही किन्तु माजी क सामथ्य से। उस युग क बाद कितने युग बीते है आज तक? धनुष का आदमी रॉकट का आदमी बन गया है और आगे जाकर न मालूम क्या क्या बनेगा? डार्विन कह गया है कि मनुष्य विकासशील है। निरन्तर प्रगति कर रहा है। फिर आज क राम म और युगो पूव राम म अन्तर क्यो? शिव क धनु को खण्डित करने वाला पौरुष और सामथ्य का प्रतीक इतना जजर और खोखला क्यो? क्या यह राम सीता का वरण करने से पहल यह सोच नही सकता था कि वह एक षोडशी निश्चिता की आशा आभा क साथ बलात्कार कर रहा है।

कथा आगे बढी। राम ने धनुष तोडा। पुष्प वष्टि हुई। मन माजी की ओर देखा। वह ऊँघ रही थी। मन कहा माजी सुना आपने रामचन्द्रजी न धनुष तोड दिया। मांजी की ऊँघ टुटी। वह बाली बेटा राम क नाम म नीद बहुत आती है। मर कम म राम का नाम कहा लिखा है? राम का नाम लती तो मुक्ति मिल जाता। कथा फिर आग बढी। राम क साथ सीता का विवाह हो गया। मन पुष्पा की ओर देखा। उसकी

प्रसन्नता

आखें छलछला आई। इतने मे माजी बोली मुझे तो नीद आ रही है बेटा। दूध भी जमा।। है। मैं तो चलूं।

यह कहकर माजी उठकर चल दी।

म किसी भाव प्रवाह म बहने लगा कि पुष्पा ने मुझे यह कहकर चौंका दिया, 'किस सोच म पड गए ?' मैंने कहा पुष्पा हम राम की कथा पढ रहे हैं यानी भगवान राम की। भगवान क्या है ? मनुष्य की एक कल्पना। सर्वोच्च कल्पना जो मनुष्य की हो सकती है– आनन्द की, सुख की, सुविधा की गुणो की सौंदर्य या शक्ति की और उसका रूप है भगवान। इसीलिए भगवान के सम्बन्ध म कहा गया है– सब शक्तिशाली, सर्वेश्वर सद्गुण सम्पन्न, सत्यानन्द घन। मनुष्य निरन्तर आगे बढ़ने की चेष्टा कर रहा है किसलिए। भगवान बनन क लिए। उस कल्पना की ओर जिसे भगवान् कहा गया है। किन्तु मनुष्य मनुष्य ही रहता है। वह भगवान् नही बन सकता। यह कल्पना कल्पना ही बनी रहेगी। ससार मे इतने दार्शनिक, राजनीति शास्त्री कवि, कलाकार आए। उन सभी ने एक सर्वोत्कृष्ट ससार की कल्पना की जिसमें मनुष्य भगवान् बन सके और यह ससार स्वर्ग। किन्तु आज तक मनुष्य भगवान् नही बन सका और न यह ससार स्वर्ग। यहा सब कुछ गोल है। पृथ्वी गोल चन्द्रमा गोल सूर्य गोल और सभी ग्रह नक्षत्र गोल। मनुष्य की प्रगति भी गोल। आदमी जहा से चलता है वहीं वापिस आ जाता है।

पुष्पा गभीर होकर मेरी बात सुन रही थी। उसने बीच म टोकते हुए कहा, ये तो सतयुग की बातें हैं। अब तो कलयुग है।'

मैंने करवट लेत हुए कहा सतयुग त्रेता द्वापर और कलयुग ये

सब थाथे विभाजन हैं। मनुष्य सदव एक रूप मे रहा है। हरक युग मे बुरे, भल आदमी रह है। किसी विशेष युग म विशेष मानव ने प्रवेश अवश्य किया। उसने अपन सिद्धांतो म मनुष्य को बहाये रक्खा। किन्तु फिर मनुष्य अपने वास्तविक रूप म आ गया। गाधी क युग म और आज के युग के मानव म अतर आ गया है। गांधी का भारत सरलता और उच्च विचारा का पोषक था और आज वह सब कुछ कहा चला गया ? गाधी के पाले हुए चेले कितने कमीने, स्वर्थी कपटी और बन्मान हो गए है

पुष्पा ने एक उबासी ली। आदमी की आवाजें धीमी होती जा रही थी। दर आटे का चक्की की धुन धुन सुनाई दे रही थी। वह एकात अखरने वाला हो रहा था। पुष्पा को जाने का आदेश दकर स्वय निद्रादवी की गाद म लट गया।

दूसरे दिन सुबह चौ० मनीराम जो इस क्षत्र क एम एल ए, थे, उनके दशन हुए। व कुछ समय क लिए अपन प्रभुत्व का लाभ देने क लिए चौ० दयालाल द्वारा लाए गए थे। इकहरे शरीर का बच्चनर आदमी मु ह पिचका हुआ सावल रग का खद्दर की धोती तथा चोला पहने हुए पलग पर डटा था। मैंने उनकी चाय म साथ दिया। चहर पर थोडा अहभाव अवश्य था किन्तु मिलने जुलने का वही नाटकीय बनावटी ढग। चेहरे पर बनावटी हसी, अधखुली आखें तथा कुछ खडे होकर आये गये को नमस्कार करना और बठन का स्थान देना, आदि। गाव वाला स गाव वाला की समस्याओ पर बातें चल रही था और साथ म दयालाल की स्थिति पर भी। चौ० मनीराम दयालाल की विजय क बारे म आशावादी ही था। जोडतोड का थाडी बहुत जा बात थी वह दयालाल और मनाराम क बाच म ही था।

रूप म सामने नहो ग्रा रही थी । लोग एक एक करके ग्रा रहे थे ग्रौर ते हुक्के को ग्रौर सुलगा जाते, धुँग्रा निकालकर कुछ सुन कर ग्रौर सुनाकर चले जाते । सभी रहस्यमय हृय थे जिनका पार पाना ग्रासान नही थी । वे कुछ अपनी दे जाते और कुछ वहा के वातावरण से ले थ । मिलने वाला म दोना ही दलो के व्यक्ति थे । रामसिंह हरेक ग्राने वाला के बारे में उसकी वास्तविकता चौ० मनीराम को कान मे कहता जा रहा था । दो तीन घटे के बाद कमरा लगभग खाली हो गया था । ना ही बाता म मेरे से भी परिचय हो गया । चौ० मनीराम ने मेरे से प्रश्न किया 'कहिए गाव का वातावरण कैसा लगा ?

मैंने कहा, गाव बदल रहे हैं । गाव का रूप बदल रहा है । गाव का दिल ग्रौर दिमाग भी बदल रहा है ।

ग्रापको बदलता रूप कैसा लगा, मनीराम का प्रश्न था ।

कुछ ग्रच्छा ग्रौर कुछ बुरा,' मने उत्तर दिया ।

ग्रच्छा किस रूप म और बुरा किस रूप में ?' उसने पूछा ।

धन बढ़ रहा है ग्रौर मन घट रहा है ।' मेरा उत्तर था ।

वह कैसे ?' प्रश्न उसका था ।

योजनाग्रा स ग्रार्थिक विकास हो रहा है ग्रौर पचायतो से राजनीतिक । किन्तु भाई भाई का नाता समाप्त होता जा रहा है । प्रम और सहयोग का नाम मिटता जा रहा है । आचार विचार विकृत हो गए है । मेरा उत्तर था ।

चौ० मनीराम कुछ समय के लिए विचार-मग्न हो गया । उससे य बातें छिपी नहीं थी यह सत्य है किन्तु कटु । ये शब्द कहने का हर

कर रहा था तो पतराम उसकी अब तक की त्रुटियों का लाभ उठा रहा था। श्योलाल यदि एक ओर अपने सिद्धांत और आदर्श से प्रभावित कर रहा था तो दूसरी ओर अपनी अडिग नीति के कारण बदनाम भी था। जनतन्त्र के अटल नियम 'अपने साथी को साथ दो' में अविश्वास से उसके कुछ साथी असन्तुष्ट थे तो विरोधी इस नीति से प्रभावित होकर उसकी ओर खिंच भी रहे थे। इस समय की स्थिति का विश्लेषण करने पर साफ जाहिर हो रहा था कि हरिजनों के अतिरिक्त जातियों में दोनों उम्मेदवारों के समान वोट थे और हरिजनों का बहुमत श्योलाल के पक्ष में था। इसीलिए उसको अपनी जीत पर अधिक विश्वास था। पतराम का अधिक जोर हरिजनों पर लग रहा था जिनकी वोटों की संख्या लगभग पांच सौ थी। किन्तु पतराम अपने ध्येय में असफल होता जा रहा था। इसका भी एक कारण था। *श्योलाल ने भाग दौड़ करके हरिजनों को जमीन दिलवाई और मकान* बनवाने में सहायता दी। यह एहसान ताजा ताजा था और भुलाया जाने वाला नहीं था। यद्यपि चार पांच घर पतराम की ओर थे जो उसकी जमीन पर काम करते थे।

पतराम और श्योलाल का द्वन्द्व केवल व्यक्तियों में नहीं विचारों में भी था। एक ओर निस्वार्थ भावना, शुद्ध आचरण, सरलता और सौम्यता थी तो दूसरी ओर स्वार्थ, छल, कपट और धोखाधड़ी थी। ये दोनों ही जनतन्त्र के स्तम्भ स्तम्भ थे। श्योलाल अपने विचारों पर अडिग था तो पतराम छल बल प्रकारेण उसको उखाड़ने में जुटा हुआ था। श्योलाल के हृदय में धरती जोतने का प्रश्न नहीं था अपने विचारों की जीत का था। वह कह रहा था 'पंचायती राज का उद्देश्य निस्वार्थ सेवा है। किन्तु राज

भाइयों की सहायता करने म है । सरपच बनने का मतलब घर भरना नही किन्तु गाव का सावजनिक विकास करना है ।'

पतराम का कहना था सरपची गाव की हुकूमत है । वह गांव का मुखिया है । गाव मे मुखिये की इज्जत होती है । बाहर वाल उसे पूछते है । गाव वाले उसकी कदर करते है । म अपनी कदर के लिए सरपच बन रहा हूँ ।'

श्योलाल का प्रचार था मैंने आपका काम किया है । गाव का काम किया है । यदि आपका मेरा काम प्यारा है तो मुझे वोट दीजिए । यदि काम प्यारा नही है तो पतराम का वोट दीजिए ।'

पतराम का प्रचार था, भाइया आओ मेरे साथ आओ । यदि तुम्ह अपना काम करना है तो मेरे साथ आओ । मुझे वोट दा । यदि अपना काम नहा कराना है तो श्यालाल का वोट दो । अपन लिए दुनिया करती है । तुम भी करो ।' श्योलाल की पुकार थी मुझे वाट दो । आपका स्कूल तरक्की करेगा । औषधालय आगे बढेगा । गाव म सडकें बनेंगी । रोशनी आएगी । स्वास्थ्य केन्द्र खुलेगा । म जुटूगा । आपको जुटाऊँगा । गाव का काम होगा । सुख सुविधाय बढेगी । ज्ञान विज्ञान, शिक्षा धन तुम्हारे चरण चूमग ।

पतराम की आवाज़ थी, श्योलाल तुम्ह स्कूल के नाम मे लूटेगा । औषधालय के नाम मे च ला लेगा । स्वास्थ्य-केन्द्र म खायेगा । म तुम्ह घर के लिए जमीन दूँगा । तुम्हारा चबूतरा ठीक करा दूँगा । तुम्हारे मुकदमे मिटवा दूँगा । मुझे वाट दो ।

श्योलाल के साथी कह रहे थे, श्योलाल अच्छा आदमी है । वह

ईमानदार है। गाव का भला इसी म है कि हम दयालाल का वोट द और अपने गाव का विकास हो। पतराम तो अपना घर भरेगा। वह स्वार्थी है बेईमान है कपटी है।'

पतराम के साथिया के विचार थे दयोलाल कभी आपका निजी काम नहीं करेगा। उसको तो अपनी ईमानदारी की अकड है। वह कभी हम अपने घर की जमीन नहीं दिलवा सकता। कानून म अडा रहता है। कानून और अपनायत का मल ही कहा ? हम तो पिछली साल ही उसको वोट देकर पछताये। जब जमीन मागी तो कहता देगा, 'कायदे से मिलगा।' हम एस अकड़ को वोट क्या दें ? पतराम का जितायेंगे जिससे अपना मतलब तो पूरा होगा।'

यह थी दयालाल और पतराम क विचारा की प्रतिक्रिया जिसकी झलक स्पष्ट रूप स गाव म दिखाई द रही थी। घर घर चर्चा थी यह, चूल्हे चूल्हे पर बात चल रही थी अब। दोना अपने काम म जुट रहे थे।

दयोलाल के साथी कह रहे थ कि दयालाल को चाहिए कि विरोधिया का मुँह बन्द कर द। धूल स नहीं किन्तु चाना से। जरूरत वाला की जरूरत पूरा करने नियम स नहीं किन्तु बेईमानि से। चौधरि क इस लिए नाराज हो गया कि उसका चबूतरा फाड लिया गया क्योंकि वह नाजायज था चौधरी न इसलिए निखार प्रचार कर रहा था क्योंकि उसक घर की ओर औषधालय का एक दरवाजा रखवा लिया क्योंकि उसक लिए दवाख रखने का स्थान था। सठ ग इसलिए असन्तुष्ट है कि उसकी हवेली का दाखे बढ़ने से रोक लिया क्योंकि वह जमीन उसकी अपना नहीं थी किन्तु हरिजन की था आ पैसों क अभाव म उसका विचार नहीं बना रहा

था। खानी घ इसलिए वोट नही दे रहा था कि वह 'भामलाल (सम्मिलित भूमि) म हरी वीकर काट कर ले गया और इयोलाल ने उसके घर से निकलवा कर नीलाम कर दी। पडित 'ड' टेढा टेढा चल रहा था क्योकि उसके बेटों के नाम से अलग जमीन नही दिलवाई। च छ' 'ज 'झ का एक लम्बी जमान भी थी जिनमे स्कूल के लिए कुछ जोर देकर चन्दा लिया गया। इयोलाल के साथियो ने कहा 'क्यो नही इनसे समझौता कर लिया जाय और य सब खाड खाकर बाट देंगे।' इयालाल ने कहा ऐसा करेंगे ता हम पचायती राज नहीं चला सकेंगे। मुझ जीत का गव नहा, मर विचारा पर गव है और म उना पर जीवित हू। जिस दिन मरे सिद्धात टूट गए, मैं जीत कर हार जाऊगा। मर सिद्धात जिन्दा हैं ता मैं हार कर भी जीता हुआ हूँ।

स्थिति ज्या की त्या बनी रही। इयोलाल के साथी हरिजनो के विश्वास पर टिके हुए थे।

किन्तु दो दिन पूव एक घटना घटित हो गई —

रात्रि का समय था। कडाके की सर्दी पड रही थी। चारों ओर घार अधकार फला हुआ था। एक बजे का वक्त था। चारा ओर सन्नाटा ही सन्नाटा। दो व्यक्ति एक कमरे के कौने मे बैठे लालटेन की रोशनी मे काम कर रहे थे। एक व्यक्ति इयालाल और दूसरा उसका सक्रेटरी। इतने मे हाफता हुआ एक आदमी आया। उसके मु ह से आवाज नही निकल रही थी। इयालाल पूछ रहा था, 'क्या बात हो गई ?'

बात बहुत बुरी है हाँफते हुए आदमी ने कहा।

'बोल तो सही इयोलाल पूछ रहा था।

आदमी कहने लगा 'हरिजनों के मुहल्ले में।'

दयोलाल ने पूछा क्या हो गया ?'

आदमी ने कहा, 'रामसिंह पकड़ा गया।'

कुछ समझ कर वे दोनों वहाँ से चल पड़े हुए रात्रि को चीरते हुए।

बात इस प्रकार चलाई गई —

रामसिंह ने हरिजन मुहल्ले में किसी के घर शराब पी। वह घर उसके मित्र का बतलाया गया। वहाँ उसने हरिजन स्त्री के साथ बलात्कार किया।

रामसिंह और दयोलाल करीब एक घंटे के पश्चात घर में प्रवेश हुए। दोनों के होश उड़े हुए थे। उस समय रामसिंह नशे में नहीं था उसका नशा उतरा चुका था। दोनों में से एक बात था। जैसे आग बुझ चुकी थी, धुँआ उठ रहा था। असफल प्रेमी की तरह शर्मों मुँह छिपा कर पड़ गए।

दूसरे दिन प्रातः ही यह समाचार जोरों से फैला कि रामसिंह ने हरिजन स्त्री से बलात्कार कर लिया। विरोधियों ने इसका उचित उपयोग किया।

रामसिंह ने पूछने पर बताया करीब रात को आठ बजे एक हरिजन युवक मेरे पास आया जिसको हम अपना मानते थे। उद्देश्य बतलाया गया कि रात को चुनाव सम्बन्धी कुछ काम कर लेंगे। वह मुझे अपने घर में ले गया। वहाँ एक शराब की बोतल ले आया। मैं जरूरत से अधिक पी गया। मुझे होश नहीं था। जब मेरी नींद खुली तो मुझे बाहर शोर सुनाई दिया। दरवाजा खोला गया। कमरे में अंधेरा था। मुझे नहीं मालूम

प्रेमलता

कि मेरे कमरे म कोई था। जब बाहर निकला तो चाद की रोशनी मे एक औरत जाती हुई दिखाई दी। यह क्या रहस्य था ? मेर समझ में नहीं आया।'

विरोधी निरन्तर अपने प्रचार म सलग्न थे। हरिजनो म यह विचार पकडता जा रहा था कि श्योलाल का भाई रामसिह शराबी और भ्रष्ट है। सरपच बनन के बाद यह खुले ग्राम बहुना बहुओ की इज्जत लूटेगा। श्यालाल को सरपच बनाना गाँव के साथ धाखा करना है।

श्योलाल सूर्योदय से पूव ही घर म निकल चुका था। वह दोपहर के बाद अपने साथियो के साथ घर लौट कर आया। घटना की प्रतिक्रिया समस्त घरवालो के चेहरे पर थी। घटना ही इस प्रकार की थी कि इस पर खुले रूप में वार्तालाप करना सम्भव नही था।

श्यालाल ने अपने साथिया को विवरण दिया, यह घटना जान बूझ कर पश की गई है। पतराम ने रामसिह के मित्र को अपनी ओर फोड लिया पसो का लालच देकर। उसने रामसिह को जाल म ले लिया। रामसिह ने शराब पी। वह बेहोश हो गया। रामसिह के मित्र ने जनानी कपडे पहन लिए। पतराम की पार्टी को सूचना दे दी गई। अन्दर का दरवाजा बन्द कर लिया गया। पूवनियोजित योजनानुमार लगभग बीस हरिजन एकत्रित कर लिए गए। कु डा खटखटाया गया। रामसिह को होश म आने स पूव घू घट म नकली जनानी बाहर निकली। वह चुपचाप आगे निकल गया। किसी ने जानने का प्रयास नही किया। रामसिह पिट जाता किन्तु पतराम के बेटे रमेश ने ऐसा नही होने दिया। वह अवसर पर पहुँच चुका था। एक व्यक्ति ने आगे आकर उत्सुकता वश उसका घूँघट उलटा तो

प्रेमलता

बात स्पष्ट हो गई। किन्तु वह व्यक्ति केवल मुझे कह सकता था और किसी
को नहीं। कारण उसका बाप पतराम की जमीन जोतता है। पतराम ने
उसे डरा दिया। कहिए क्या किया जाय ? हरिजन सब बदल गए हैं। म
अभी जाकर आया हूं। मैंने उपरोक्त बात कहीं किन्तु किसी ने बिना सबूत
के बात नहीं मानी।

दयालाल के साथियों पर उसे मुर्दनगी छा गई हो वे सब तरह
से सोचने में असमर्थ थे। सब कुछ सुनकर व उदास और गम्भीर हो गए।
सभी ने मिलकर यह निर्णय लिया कि गाम की सभा हरिजनों को एकत्रित
कर सब कुछ स्पष्ट किया जाय और स्थिति सम्भाली जाय।

योजनानुसार दयोलाल अपने साथियों सहित ग्राम को हरिजन
मुहल्ले में गया किन्तु थानी सत्ता में आम्सी दबके बिठ जा गये। या
सान ने स्थिति को स्पष्ट करने का भरसक प्रयत्न किया। किन्तु प्रभाव का
रूप भविष्य के गर्भ में था। रामसिंह चुनाव तक घर से बाहर नहीं निकला।

निश्चित तिथि को चुनाव का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। चुनाव
पद्धी से दयोलाल को सम्बन्ध करना चाहिए था किन्तु उसने ऐसा नहीं
किया। पार्टी का समूचा खर्चा पतराम ने ही उठाया। ग्राम का पांच बजे
तक मतदान होता रहा। रात्रि को मतगणना शुरू हुई और रात का [illegible]
[illegible] दयालाल निराश होकर घर लौट आया। पतराम को जय के नारे
[illegible] रात्रि के [illegible] को गुलाम [illegible] थे किन्तु दयालाल
[illegible] और [illegible] घेरा था।

दयालाल को पराजय का प्रभाव स्वाभाविक उस पर पड़ गया।
[illegible] हरिजन [illegible] होता है और यह [illegible] आया दयालाल

क्रमशः

के घर म । रात्रि को नीद न‌ी आई और सुबह उठना नहा हुआ । पशुओं तक के दिल म मातम था । सबसे अधिक दुखी थी माजी । शरीर टूट सा गया था सबका । कई दिनो की थकान के साथ पराजय का सताप ऐसा जुड गया था कि सब खाना पीना तक भूल गए थ । अकेला हरीराम हो 'राम भज 'राम भज कहकर सबको ढाढस दे रहा था । श्यालाल के साथिया न सुबह आकर चुनाव के परिणाम पर पुन विचार किया । विभिन्न प्रकार के विचार बैठक म आए और मिट गए । एक अच्छे राजनीतिज्ञ की तरह पराजय को जय के रूप म स्वीकार करना ही उचित समझा गया ।

१४

मुझे किसी कामवश दिल्ली जाना पड़ा। चाँदनी चौक में मारवाड़ी धर्मशाला में मुझे एक कमरा मिल गया। गाँव में एक लम्बे अर्से तक रहने के उपरान्त बाहर का वातावरण कुछ अजीब अजीब-सा लगता था। जिस ढंग से बदलते जा रहे थे नगर और नगर के पुरुष और स्त्री, विशेषकर नवयुवक और नवयुवतियाँ। ढीले ढाले पहनावे के स्थान पर तंग कपड़े आ गए थे। क्या इनके दिल और दिमाग भी तंग होते जा रहे थे? यह विचार आया मेरे दिमाग में और कुछ समय के लिए ठहर गया। शाम को अपने काम से निवृत्त होकर आया तो एक पोस्टर लगा हुआ था धर्मशाला के आगे। लिखा था? आज रात्रि को आर्य समाज के दीवान हाल में कवि सम्मेलन जिसमें बाहर से आए हुए कवियों के नाम भी थे। मुझे यह जान कर हर्ष हुआ कि मधुप का नाम भी उसमें था। इस नाम ने मुझे कवि सम्मेलन में जाने को प्रेरित किया। सोचा कि साथ में मधुप से मिलना भी हो जायगा।

भोजन आदि से निवृत्त होकर मैं सीधा दीवान हाल में पहुँच गया। कवि सम्मेलन शुरू होने को ही था। मैं भी श्रोताओं में सम्मिलित हो गया। अच्छा खासा जमघट था। मंच पर कविगण विराजमान थे। कुछ ही क्षणों

के बाद सयोजक महोदय खडे हुए और कवि सम्मलन की भूमिका प्रस्तुत की– कवि-सम्मलन बुलाने का कारण तथा कवियो की एक लम्बी सूची और उसम मधुप का नाम भी। मधुप का नाम सुनत ही प्रसन्नता हुई।

कायक्रम चालू हुआ। एक दो कवियो ने अपना कविता पाठ किया किन्तु जम नहीं पाए। अभी कवि सम्मेलन का समा नहीं बधा। आखिर मधुप खडा हुआ। घुँघराले बालो का एक पच्चीस तीस की आयु का पुरुष गौर वर्ण, सुडौल शरीर मझला कद माइक के आगे आ जमा। सम्भवत दिल्ली वालो ने पहल सुना नही होगा। सयोजक ने माइक को हाथ म लेकर मधुप के कवि और काव्य का परिचय दिया और पुन मधुप के सामने माइक चला गया। मधुप के कवित्व और व्यक्तित्व न जनता को मत्र मुग्ध कर दिया। 'पुन पुन' की आवाज स हाल गूँज उठा। मधुप अपन स्थान पर जा चुका था। सयोजक ने श्रोताओ को उनको पुन लाने का आश्वासन दिया। कायक्रम आगे बढा। कई कवि आए और गए। मधुप को कई बार आना पडा किन्तु जनता उससे ऊबी नही। करीब एक बजे कवि सम्मेलन की समाप्ति हुई। उस समय श्रोताओ की इतनी सख्या रह गई थी कि मुझे स्टेज क समीप पहुँचने का अवसर मिल गया। बाहर निकलते ही मन मधुप को पकड लिया। मने अपने को राजस्थानी कहकर परिचय दिया और सुधा का प्रसग इस प्रकार आया कि मधुप को मेरे समीप आना पडा। मधुप ने कहा मेरे साथ ही चलिए। म सयोजक के यहाँ ही ऊपर के कमरे म ठहरा हुआ हूँ। मुझे आपसे कुछ बात करनी है। मैं बिना झिझक के उनके साथ चल पडा।

हमने एक सुसज्जित कमरे मे प्रवेश किया। मधुप न सोफे पर

बैठते ही चाय की माग की। चाय आने में विलम्ब नही हुआ। चाय की चुस्की लेते हुए मधुप ने कहा,

'आप कब आ गए थे कवि सम्मेलन म ?'

मने कहा मैं तो शुरू से ही वहाँ था।

'कैसा रहा ?' कवि ने पूछा।

'आपकी कविताओं का लोगों ने बहुत पसन्द किया।' मुझे कहना ही था।

कवि का हृदय हर्ष से गद् गद हो गया। अपनी प्रशसा किसको पसन्द नही यदि वह सच्चे हृदय स हो। फिर कला तो आत्म प्रशसा से ही फलती फूलती है।

कवि को मौन देखकर मैंने फिर कहा कुछ कवियों की तो कविता समझ म नही आ रही थी। पता नहीं क्या बोल रहे थे ? केवल स्टेज पर ही वाह' वाह हो रही थी।

मधुप बोला ये तो नये कवि है— प्रयोगवादी। प्रयोग करते हैं। कहते हैं कि हमारी कविता मे ही जीवन है। नग्न यथार्थ, जन जीवन से ऐन निकट, हृदय से नही मस्तक स निकली हुई। भावना से सम्ब ध रखने वाली को ये कविता नही कहते। कविता की परिभाषा ही बदल रहे है ये लोग।'

मैंने कहा 'जन जीवन की कविता को फिर जन जीवन पसन्द क्यो नहीं करता ?

कवि ने कहा, 'यह तो य लोग जानें। कहते हैं— समय आएगा तब हमारी कदर होगी।'

प्रेमलता

तब तक यह कविता ही मर जायेगी। मैंने कहा।

'हाथी तो मरने के बाद ही नौ लाख का होता है।' मधुप ने कहा।

इस पर हम दोनों को हँसी आ गई। फिर अचानक दूसरा प्रसंग आ गया। मैंने कहा, 'सुधा तो आपकी कविता की कायल है।'

मधुप ने एक लम्बी सांस ली जैसे कहीं एक गहरा दर्द उसके हृदय में हो। कहने लगा, दिनेश के साथ मजे में होगी सुधा तो।'

ठीक ही है समय निकल रहा है।' मैं बोला। हम इतने खुल गए कि मधुप ने भावावेश में आकर कहना प्रारम्भ किया, 'सुधा और मेरा घर समीप था। सुधा के पिता बलवन्तराय रेलवे में लेखा विभाग में एक उच्चाधिकारी हैं। उनकी पहली पत्नी से एक ही सन्तान थी सुधा। पहली पत्नी के मरने के बाद वे दूसरी पत्नी ले आए। दूसरी पत्नी से बलवन्तराय के कोई सन्तान नहीं हुई। सुधा का घर में लाड प्यार ठीक ही था। सुधा जवान हो गई। सुधा के यौवन में प्रवेश के साथ ही उससे मेरा परिचय हो गया। सुधा के पिता मुझे बच्चे की तरह प्यार करते थे। घर में आने जाने में कोई रुकावट नहीं थी। मैं उस समय कालेज का छात्र था और सुधा हाई स्कूल में पढ़ती थी। मेरी शादी हो चुकी थी। पत्नी का आना जाना नहीं हुआ था। सुधा मेरे घर में बिना किसी हिचक के आया जाया करती थी। पुस्तकों का भी आदान प्रदान हो जाया करता था। यह तो साधारण प्रेम था एक पड़ोसी का-सा प्रेम। मैं कविता किया ही करता था और कविताओं को गाकर ही सुनाया करता था।

एक दिन की बात है--

मैंने फिर समझाया, यह तेरा पागलपन है जो इस आयु में होना ही है। यह तेरे लिए घातक है।'

फिर भी वह नहीं मानी। मने उसे स्पष्ट शब्दों में समझा दिया म विवाहित हूँ, सुधा। तुम मेरे गले से प्रभावित हो। यह उसी का असर है। तुम दूर रहो। असर समाप्त हो जायेगा। नहीं तो यह तेरे लिए दुखदायी सिद्ध होगा और फिर उसका उपचार भी कठिन है।

कि तु सुधा मेरी गोद में लेट गई और मेरे बाहु पाश म बंध गई। म भी अपने आप को भूल गया। मेरी दुर्बलता मेरे पर हावी थी।

मेरी धर्मपत्नी मेरे घर आ गई। सुधा म मन म इसकी साधारण सी प्रतिक्रिया हुई किन्तु वह प्रकट रूप म नहीं आई। उसका क्रम पूर्ववत चलता गया किन्तु थोड़ा सतर्कता के साथ । वह केवल दिखाने के लिए एक दो पुस्तकें ले आती थी। मेरी पत्नी ने इस पर विशेष ध्यान नहीं दिया।

चार पाच दिन के लिए सुधा कहीं बाहर चली गई। मने यह पहली बार अनुभव किया कि जसे मेरी आँखों के सामने का प्रकाश ओझल हो गया हो। सर्वत्र शून्य केवल शून्य और म खोया खोया सा हो गया। मेरी मलिनता को मेरी स्त्री ताड़ गई। उसने साधारणत पूछा आज क्या हो गया ? बड़े उदास नजर आ रहे हो ?'

मधुप कह रहा था। मैं सुन रहा था। मधुप भाव विह्वल होकर बोला 'म ठीक कह रहा हू, प्रकाश। मेरी आखो म आंसू आ गए। में अपनी पत्नी का भोलापन ही पढ पाया था। मैं नारी की गहनता तक नहीं पढ पाया था। मेरी स्त्री इन आसुओं का अर्थ समझ गई। किन्तु

मैं उम अथ का अर्थ समझने मे असमथ था। मेरी स्त्री का सुधा के प्रति ममता का रूप घृणा म परिणित हो गया। इसी प्रकार की प्रतिक्रिया सुधा मे भी प्रारम्भ हो गई। मानव हृदय परस्पर एक अदृश्य तार से जुडे हुए है जो धीमी से धीमी ध्वनि को पहुँचाने का सामथ्य रखते हैं।

एक दिन सुधा मेरे कमरे मे बठी थी। मैं अपनी नई कविता सुना रहा था। सुधा तन्मय होकर सुन रही थी। अचानक मरी स्त्री ने कमरे मे प्रवेश किया। उसकी आखो से आग बरस रही थी। तडाक से वह बाली सुधा जी, यह काम भले घर की लडकी को शोभा नही देता।'

मेरी कविता वही बन्द हो गई। सुधा ने कोई जवाब नहीं दिया। वह सब कुछ छिपा कर वहाँ से उठकर चली गई। मैंने अपनी पत्नी से कहा 'रानी मुझे तुम से ऐसी आशा नही थी।

मेरी धमपत्नी ने कहा 'मुझे भी आप से ऐसी आशा नही थी। यह कहकर वह कमरे से बाहर निकल गई।

मेरा पत्नी के प्रति थोडा बहुत प्यार जो शेष था। वह भी समाप्त हो गया और वह धीरे धीरे घृणा मे बदल गया। सुधा भी उस दिन से मेरे घर मे नहा आई। मेरे लिए सुधा का रास्ता खुला था।

अब यह बठक सुधा के घर प्रारम्भ हुई। सुधा के पिता भी चाहते थे। सुधा की मौसी प्राय बीमार रहती थी। उसका कमरा अलग ही था। दो तीन घटे गपशप म गुजरना मामूली बात थी।

एक दिन सुधा ने एक बात कही, 'क्या आप मुझे प्रेम करते हैं ?

मैंने कहा, 'हाँ'

सुधा बोली, 'क्या आप अपनी पत्नी से भी प्रेम करते हैं।

मैंने कह दिया, 'नहीं तो।'

वह फिर बोली, मैंने कल आप दोनों को हँसते हुए देखा था।

'यह कैसे बन्द हो सकता है ? मेरा उत्तर था।

'म इसको सहन नहीं कर सकती। वह बोली।

बड़ी पगली है।' मैंने कहा।

मेरे तो आग लग जाती है। उसने कहा।

प्रकाश, मैं इस जाल म इतना उलझ गया था कि मुझे सुधा का आदेश मानना पड़ा। हमारे क्वाटरों म बीच की दीवार इतनी छोटी थी कि छोटी मोटी घटनाओं का भी आभास एक दूसरे को हो जाया करता। मैंने अपनी पत्नी से लगभग बोलना बन्द कर दिया। मुझे भय हो गया था कि सुधा नाराज न हो जाये। बोलता भी था तो भी बिल्कुल छिप कर ताकि सुधा को पता न चल सके।

मेरी धर्मपत्नी इस अवसाद से दबने लगी। वह बीमार रहने लगी। उस बीमारी का कारण था मानसिक अन्तर्द्वन्द्व रुग्ण मन स्थिति तथा भावी जीवन का दर्दनाक चित्र। उसको चमक दमक घटने लगा। सुधा भी इस दुष्परिणाम से वंचित नहीं रह सकी। वह भी दिन पर दिन इस व्यथा से घुलने लगी कि मधुप अपनी पत्नी से बोल रहा होगा हंस रहा होगा प्यार कर रहा होगा।

दूसरे दिन म जब सुधा के घर जाता वह मुझे पूछती, क्या आप आज अपनी पत्नी से बोले थे ?'

मैं कहता, 'नही तो

किं तु उसको विश्वास कहाँ ? वह इसी चिन्ता म घुल धुन कर निष्प्रभ होन लगी। मं एक अजीब सकट भँवर म फस चुका था। एक दुविधा थी मेरे सामन। घर पर मुझे अपनी पत्नी को आश्वासन देना पडता था कि म सुधा स नही मिला क्याकि यहा गृह-कलह का भय था। सुधा को यह विश्वास दिलाना पडता कि म अपना पत्नी से नही बाला क्योकि वहा प्यार की प्यास थी। एक भूल भुलैया थी जिसम सब भूल चुका था। केवल एक ही केन्द्र बिन्दु था जिसके चारों ओर मरा कल्पना, भावुकता, दशन, विश्वास और सिद्धान्त चक्कर काट रह थ।

एक दिन जब म सुधा क घर से निकला ता रात्रि के दस बजे चुके थ। मेरी पत्नी छत पर अकेली सो रही थी। मै जब ऊपर गया तो पत्नी न नाराज होकर जार जार से बोलना शुरू किया। मुझे ढाढस देना पडा सब प्रकार से झूठ बोल कर। सब तरह से उसके हृदय को सात्वना देनी पडी इतना सात्वना कि वह समझे कि दुनिया मे उसके सिवाय मरे लिए काई नही था। हम सो गए।

दूसरे दिन दोपहर को मैं सुधा के घर गया। वहा कोई नही था, केवल सुधा थी। मने उसे दखा जसे आँखें आग बरसा रही थी। मैंन पूछा, आज यह रूप कसे ? काई ताण्डव नत्य करन वाली हो ?' किन्तु रूप भीषण था।

'आपको शम नही आती। वह बाली।

मैंने कहा 'क्या हो गया ?'

'कल रात को जो बातें हो रही थी वह सब सुन रही थी वह सब

गुज रही थी मैं। वह बोली।

मेरा चेहरा उतर गया। दिमाग का निचला कमरे में , न निकल गया 'कहाँ ?

'दीवार के पास' वह बोली और जोर जोर से आंसू बहने लगा।

मैंने उसको अपने बाहों में बांध लिया। मुश्किल से मारे आंसू पूछ डाले, किन्तु यह सब कुछ किया प्रेम किया। उसका कोई सुधा को नहीं था। वह सुधा को कह गई थी कि मथुरा के घर जा रही हूँ और गई नहीं। मेरे आने ही वह दीवार के पास लग गई। मेरे जाने के बाद उसकी मामी ने सब कुछ सुधा को बतला दिया और अपनी भी कि वह उसके विवाह की बातचीत। सुधा ने सब तरह से माता से क्षमा याचना की किन्तु दुर्वासा की तरह बोला ही निर्णय कर गई। उसी रात्रि में अंधकार में निर्णय ले लिया गया कि शीघ्र सुधा की शादी कर दी जाय।

केवल चार दिनों में वर की तलाश हुई। दिनेश को इस काम के लिए पटाया गया। केवल सात दिन में शादी हो गई। फेरों की रात्रि में पहले सुधा मेरे से मिली और,

बोली मैं मर जाऊंगी।

मैंने कहा तुम जी जाओगी।

वह बोली 'यह नहीं होगा।

मैंने कहा, 'यही होना चाहिए। इसमें केवल तू न तेरे साथ दो और प्राणी जीवित रह सकेंगे। मैं और मेरी पत्नी।

सुधा की शादी दिनेश के साथ हो गई। मेरी सुभागी रत्ता-मेरी

पत्नी को मेरे प्यार का सिंचन मिला और वह फिर लहलहान लगी।

मधुप ने यह कहानी सुना कर एक लम्बी सांस ली।

मधुप की कहानी समाप्त थी। रात्रि के तीन बज चुके थे। मैंने कहा जीवन मे रोमांस का भी अपना महत्व है। मधुप ने कहा, विशेषत कवि के लिए है न।'

हम दोनो हँसने लगे। मधुप के चेहरे पर सुधा की स्मृति का खुमार था। उसने फिर कहा सुधा अच्छी लडकी है। उसको समझने की आवश्यकता है। मुझे मालूम है दिनेश उसको नही समझ सकता।

किन्तु दिनेश अच्छा युवक है उसे बुरा तो नही कहना चाहिए।' मैं बोला।

दिनेश अच्छा है किन्तु सुधा उससे सन्तुष्ट नहीं होगी। मधुप ने कहा।

हम इन्ही बातो के साथ सोने का प्रयास करने लगे।

१५

गाँव के अपने कमरे म प्रवेश करते ही ज्ञात हुआ कि रामसिंह फौज की नौकरी म चला गया। यह समाचार माजी ने दिया। शान्ति ने दूसरा समाचार दिया कि पुष्पा ससुराल चली गई थी। श्योलाल और हरिसिंह अपनी खेती के काम म व्यस्त थे। यह भी मालूम हुआ कि पतराम ने अपनी विजय की धूम बड जारो से बजाई। गाँव मे एक भारी जुलूस निकाला गया जिसम पतराम की जय के नारे लगाए गए। ये सब बातें माजी ने बताई। माजी उदास थी। वह हार को हार स्वीकारने को तयार नही थी। उसके हृदय मे प्रतिशोध की भावना थी। उसने यहाँ तक भी बतलाया कि कुछेक आदमी जो श्योलाल के कट्टर समथक थे पतराम से मिल चुके थे।

पचायत समिति का भी गठन हो चुका था। उसका प्रधान भी चुन लिया गया था। वह भी पतराम के ही दल का था। ज्ञात हुआ कि दोना दला ने तीस तीस हजार रुपये चुनाव म लगाए। पचो और सरपचो की बडी कदर हुई। कुछ सरपच और पच छिपा लिए गये कुछ खरीदे लिए गये और कुछ बाहर भिजवा दिए गये। प्रधान ने कांग्रेस सदस्य होते हुए भी कांग्रेस उम्मेदवार के विरुद्ध चुनाव लडा और उसने कांग्रेस के उम्मेद

वार को काँग्रेसियो का ही समथन नही मिला। श्योलाल न किसी प्रकार का भी रुचि नही ली। वह प्राय खेत मे रहने लगा।

दिनेश और सुधा पुन अपने घर लौट आए। पता चला कि दिनेश ने यह सब कुछ सुधा के आग्रह मे ही किया। चुनाव से दिनेश और सुधा मे क्या प्रतिक्रिया हुई इसका कोई आभास नही था।

रात को करीब दस बजे श्योलाल खेत से आया। वह खाना पीना करके मेरी ओर आ गया। श्योलाल ने आते ही अपनी थकावट जाहिर की। उसका तो केवल यही मतलब था कि थकावट खेती के परिश्रम से होती है किन्तु मन यह अर्थ लगाया कि इस थकावट का कारण उसका नैराश्य, उत्साहहीनता और ग्लानि थी जो उसे चुनाव के पराजय से मिली। श्यालाल के चेहरे पर कालिमा तो थी ही किन्तु दुबलता भी थी। हड्डियाँ निकल आई थी उसके चेहरे पर और बढ़ी हुई दाढी से और भी विकृत और भयावना लग रहा था वह। ऐसा मालूम हो रहा था कि वह बुढापे की ओर द्रुतगति से बढ रहा हो। नैराश्य ने जैसे झुर्रियो के नक्शे बना लिए हो उसके चेहर पर। कामना और आशा जसे डूब गई हो उसके चेहरे के गड्ढे मे। मैले कुचेले कपडे जसे हार के बाद उतार ही नही हो। मने कहा, श्योलाल इस हार को जीवन की हार म मत बदलो। जीवन संघर्ष है। जय पराजय का जोडा है। पराजय से हम सीखते हैं।

आन्तरिक पीडा पर उपदेश का कोई प्रभाव नही पडता किन्तु वह केवल परम्परा है जिसको म निभा रहा था। श्योलाल ने कहा मनुष्य अपने सुकाय को सुफल मानता है। मने अपने सरपंच काल म दिन रात मेहनत करके गाव के लिए काम किया, सच्चे दिल से और ईमानदारी से।

किन्तु गाव ने मुझे क्या दिया ? यह हार और वह भी धोखे से। मैने अपना घर लगाया, समय लगाया और उसका परिणाम यह निकला। अच्छा होता म अपन घर म जुटा रहता। घर वाले मेरे नाराज सम्बन्धी मर स नाराज और न मालूम किस किस की मुझे गरज करनी पडी। और धोखा सरासर धोखा।

मैंने कहा राजनीति और धोखा पर्यायवाची है। इतिहास को ही उठाकर देख लीजिए। सारा इतिहास धोखे स भरा है। क्या राजतन्त्र क्या जनतन्त्र बिना धोखे के काम चला है ? ईमानदारी और सच्चाई तो नैतिकता के अग है, राजनीति के नहीं। किन्तु जनतन्त्र म इस प्रकार के अनैतिक अस्त्रों का प्रयोग होता रहा तो जनतन्त्र अपना विश्वास खो बैठगा और फिर हमे किसी निरकुश सत्ता का सामना न करना पड जाय यह एक बहुत बडी आशका है जो जनतन्त्रवादियों को डराती है।

श्यामलाल ने कहा म अपनी भूल को स्वीकार करता हू कि मैं पूर्ण सतक नहीं रहा। मैं केवल अपनी ईमानदारी और सच्चाई का ढोल पीटता रहा। मुझे जन जन के हृदय मे मेरी सचाई की जड लगानी चाहिए थी। सामूहिक हित को व्यक्तिगत हित से अधिक महत्ता का प्रचार देना चाहिए था। मेरा घर ही मेरे वश म नहीं था। दोष किसका है ? मेरा ही तो। रामसिंह को अपने नियन्त्रण म नहीं रख सका। उसे क्या आवश्यकता थी कि इस अवसर पर बाहर शराब के निमन्त्रण पर जाये। न वह बाहर जाता और न यह नौबत आती।

मैंने कहा माफ करना श्यामलालजी आपने बात याद रखवा दी। म कह ही दू। आप पर हित म घर हित खो बैठे। आपके घर की

व्यवस्था अच्छी नहीं है। आपने पुष्पा के जीवन के साथ खिलवाड किया। रामसिंह के जीवन का तमाशा बना दिया। परिणाम आपके सामने है। पुष्पा पागल हो गई है और रामसिंह शराब पीकर वास्तविकता को विस्मृत करना चाहता है। यह सब कुछ आपके और माजी के नेतत्व म हुआ।

मैं सब कुछ समझ गया हूँ, मेरे बन्धु' श्यौलाल बोला, 'जो हो गया सो हो गया। म इस पर पछता रहा हूँ। किन्तु आज का युग बडा पेचीदा है। इस युग म मनुष्य की महत्ता धन शक्ति और मन शक्ति पर न होकर जन शक्ति पर है। यदि जन शक्ति है तो ऊपर तक उसकी कदर है और काम बनते है। यदि जन शक्ति नही है तो आप अपनी योग्यता विद्वता और कर्तव्य निष्ठता को लेकर एक कोने म उठ रहिए आपको कोई नही पूछेगा। आज का नियम है कि सत्ता म कही न कही हाथ डाले बठे रहिए, आप सुख से जिन्दा रह सकेंगे। सत्ता से अलग हो जाइये आप पर अन्याय, बरसने लगगा जुल्म आपकी जड उखाड दगे। आपका जीवन दूभर हो जायगा, किन्तु मैं कर क्या? मुझे नीति आती है, राजनीति नही।

इतना कहकर श्यौलाल ने एक बीडी निकाली और सुलगा कर पीने लगा। मैंने कहा यह बीडी कब से सीख ली आपने पहले तो नही पिया करते थे।

बीडी की जोर स सुट खीचते हुए श्यौलाल न कहा, पराजय सब कुछ सीखा देती है प्रकाशजी। बडी बडी कल्पनायें मरे दिमाग म थी, किन्तु सब कुछ मर चुका प्रकाश, सब कुछ मर चुका।

आप तो हार का चिपका कर बैठ चुक, मने कहा जीवन आधी और वर्षा का अद्भुत मिश्रण है। आप तो किसान है। क्या हर साल अकाल

पटता है ? क्या हर साल आँधियाँ आती है ? क्या हर साल खेत सूखे पड़े रहते है ? उतार चढ़ाव तो आता ही है । मनुष्य अपार शक्ति का भंडार है । मन जीवन के केन्द्र बिन्दु है । मन ही समग्र शक्ति का स्रोत है। महान् पुरुषों का मन बलवान् होते हैं और वे कितने बड़े हो जाते है और बड़ी बड़ी प्रतिभायें मन की निर्बलता से बैठ जाता है । यह हार मुझे स्वीकार नहीं । आप फिर अपने आप को सम्हालिए । कहिए क्या रस निरतरता है ।

मैने श्योलाल के पीठ पर एक थपथपी लगाई । अ ... पताविल नेत्रों म जैसे चमक आ गई हो और उल्लास की लहरें चहरे पर दौड गई हो और बुझी हुई बीडी के टुकडे को फेंकते हुए श्योलाल बोला, भाई अब एक काम करना चाहता हूँ और काम तो वह घर का ही है । सामने का यह तिरवारी देखते हो–टूटी फूटी । इसको बनाने का विचार है ।

माजी और हरिसिंह भी आ गए । शायद वे त्रिमूर्तियाँ इस तिरवारी के निर्माण की योजना म सम्मिलित हो ।

माजी और हरिसिंह फिर वही चुनाव की बात ले आए और उसमे विशेषत पतराम की चर्चा बाजी और रामसिंह पर लाछन । हरिसिंह की आँखो मे क्रोध की लालिमा थी कि वह बस पडते पतराम को छोडगा नही । और मैंने साफ साफ शब्दों म कहा इस चुनाव का परिणाम चाहे कुछ भी निकले हो, किन्तु यह तो सही है कि जनतन्त्र अपनी अच्छी पर परम्परा को लेकर नहीं आ रहा । भारत को एक सुदृढ़ जनत त्रीय देश बनना है । पूर्व और पश्चिम का सबसे बडा जनत त्रीय देश भारत जो अपने गांधी और नेहरू पर गर्व करता है इस तरह की परम्पराओं को लेकर आगे बढा तो भविष्य कैसा होगा ? यह कहना सम्भव नहीं । कुछ धुंधलापन नजर

आता है मुझे आगे। यह सब कुछ आ रहा है ऊपर से। ऊपर के लोग ऐसा करते है तो नीचे वाले भी उसी का अनुकरण करते हैं और यह सब कुछ होता है सत्ता के लिए कुर्सी के लिए और पद के लिए। पैसा लगाकर सत्ता लेना या तो बेईमानी है यदि व भ्रष्ट तरीके अपनाते हैं तो या बेवकूफी है यदि वे बुद्धू की तरह पड़े रहना चाहते है तो।

यह बेइमानी है भाई साहब' हरिसिंह भावावेश म आकर बोला, मैंने साफ साफ कह दिया इस बड़े भाई का कि हम इस पड़पच म पड़ने की जरूरत नही। यह तो दुनिया के सबस निकम्मे आदमियो का काम है जो हर तरह से गय गुजर हो। यह आपका पतराम जो अफीम की चोर बाजारी करता है सोन का तस्कर व्यापार करता है भ्रष्ट नौकरो से साठगाठ रखता है दुनिया भर का बेईमान है। हम नही टिक सकत इसके आगे। जरूरत क्या थी हम बिना मतलब पैसा लगान की। य मत्री और एम एल ए के बच्चे कितनी बार आए ह हमार यहा। हम किसी काम स जात ह तो दो दिन तो इनको मिलने की फुसत नही। फिर मिलने आते हैं तब पहचानते नही सीधे मुह बात नही करते। फिर किसी का सिफारिश करत है तो यह नौकरशाही इनकी बात नही मानती। याद नही इस स्योलाल का वह सिंचाई मत्री यहा आया था। हमारे पानी के मोगे का झगडा था। कई सौ रुपये उसके स्वागत म खच हुए थे। वह हुक्म दे गय एस डी ओ को। एस डी ओ सामने तो हाँ हा करता रहा। कि तु उनके निकलते ही ऐसा झगड़ा डाला कि काम आज तक नही बना। वरना केवल सौ रुपये की मार थी। ओवरसियर ने माग थे। काम बन जाता। किन्तु ये तो आदर्शवादी बनने जा रह है। मेरी बात नही मानी। ले लिया मोगा।'

माजी ने सिर खुजलाते हुए कहा, 'अपनी खेती सुधारो, बाड़ी करो और मौज करो। क्या रक्खा है इस पचायत म। खेती का होड नहीं होता। खती सबसे मोटा धन है। तुम्हारी इन पचायतों से सारी ती खत खराब हो गया और सारा घर बिगड गया। अब भी सम्भल जाओ तो भी अच्छा है।'

हरिसिंह ने बात बीच म काटते हुए कहा प्रधानजी आप एक राय देओ। सामने की तिवारी दीख रही है न आपको। यह टूट फूट गई है। मेहमानों के ठहरने की जगह है। इसको हम बनाना चाहते हैं। हम सब गोत्ररा जाति के लोगों ने इस पिछली बार बनाया था। गुरू म यह चमार जाति के लोगों का घर था। व उठकर चले गए। नम्बरदारी हम लोगों की थी। हमने उनकी जबानी इजाजत म उनकी इट काम म ली और यह तिवारी बनाली। अब हम फिर इसको बनाना चाहते हैं कि तु हमारे गोत्ररा म से एक घर हमसे अलग हो गया है। उसने हमारे खिलाफ वोट भी दिए थे। अब वह अडा हुआ है। हम सबने पच इकट्ठे कर लिए हैं कि तु वह तयार नहीं है। सुना है कि उसने सरपच से बात करली है। वह चाहता है कि इसमें झगडा हो। आपकी क्या राय है?

मुझे इस विषय पर सोचना पडा यद्यपि यह विषय नहीं था। गाम के सम्बन्ध म म राय दे सकता था। कि तु यह राय देना एक टेढ़ी खीर थी। मैं नी अनभिज्ञता जाहिर करता और भी मुश्किल थी। मैंने गाव समझ कर कहा मेरी राय म तो तिवारी बन जाना चाहिए। फिर भी आपस म बात कर लेनी ठीक है कि यह तिवारी आपकी है?

प्रधानजी ने जरा हसते हुए कहा इन पचायतों राज म कानून और कायदे से निर्णय नहीं लिया जाता। इसम तो अपना और पराया

ही कानून है। जिसने वोट ि्ए कानून उसका साथी है और जिसने नही ि्ए कानून उसका विरोधी है। आप सबूत की बात क्या कर रह है ? फसला ह्मार विपक्ष मे होगा क्योकि हम उनके नही है।'

फिर भी कोई आधार ता होगा ही ? बिना आधार के वे क्से किसी प्रकार का आदेश दे सकेंगे ? मने अपने सामा्य ्ान का प्रयोग करत हुए कहा।

ह्रीसिंह, 'इसमे एक शिलालख है जिस पर च्दा देन वालो के नाम खुदे हुए हैं।

माजी जरा क्रोधावश म बाली, सब गाव वाला को पता है कि गो्ारो ने मिलकर पसा लगाया है। फिर ए्क दुश्मन हमारा क्या कर सकता है ?'

'काचर का एक बीज मना दूध को फाड सकता है। ्योलाल न कहा।

हरीसिंह ने रोष म आकर कहा हम सब कुछ देख लेगे। हम क्ल ही इसको फुडवाने है। देखन है कौन माई का लाल सामने आता है। बाल्न वाल की जाड निकाल लगे।

माजी बोली वेग कोई कुछ कहने वाले नही। बुराई तो बुर काम म होनी है। अच्छ काम म शम किस बात की।

हरीसिंह ने फिर कहा नही मा हम तो दुनिया से डरते डरते तग आ गए। ठोडी के हाथ लगात लगाते अगुलियाँ घिस गई। मीठे बोल्ते बाल्ते जबान की क्डे लग गए। भुक्त भुक्त कुबड बन गए किन्तु यह दुनियाँ सचमुच जूत की है। अब मुझे परवाह न्ही। मेरा भाई हार गया।

एक भाई को शम के मारे फौज म भर्ती होना पड़ा। अब मैं ए
लगा।'

मांजी ने रोकते हुए कहा तुझे शोर करने क्या जरु
अपना काम कर। जो होगा सो देखा जायगा।

दूसरे दिन दयालाल और हरीसिंह ने अपने गोदारा
एक सभा बुलाई और निवारी के सम्ब ध म समस्त समस्याओं
डाला।

१६

मैं निशा के घर पहुँचा तो देखा कि सुधा कमरे में अकेली ही गुनगुना रही थी। ढीली-ढाली धोती बिखरे हुए बाल बिना मेकअप का स्वच्छ धवल मुखड़ा, कलाई में एक-एक चूड़ी, गोरी, पतली अंगुलियों में पेन और दूसरे हाथ में कागज। मुझे देखते ही मुस्करा कर धोती का पल्ला खींच कर सिर पर ले लिया और उठ खड़ी। 'आइये आइये' कह कर कुर्सी खींच कर बैठने का निवेदन किया। मधुप से मिलने के उपरान्त पहली बार मैंने सुधा को देखा था। मधुप की कही हुई कहानी चित्र की तरह जैसे एक बार दोहरायी गई हो ऐसा आभास हुआ मुझे। एक सैकण्ड में बहुत लम्बा समय लग गया हो, ऐसा लगा। मैं बैठ गया और अस्वाभाविक रूप से सुधा की ओर निरन्तर देखने का साहस कर लिया। मैं निशा की सुधा में मधुप की सुधा को देखने लग गया। अचानक सुधा ने हस्तक्षेप कर लिया, वह बोली—शीत पेय या गर्म पेय ?

पिलाये बिना तुम नहीं मानोगे। अतः शीत पेय ही ले आओ।'

मने वहा ।

सुधा ठडा शरबत बना कर ले आई म र गिलास रखकर ब
'शरबत की बोतल मगवाली थी पिछले दिनो जब बाबूजी महो गए
ऐसे अवसर पर काम आ जाता है ।

मने वहा आप भी ता पीजिए ।

मैं तो अभी अभी चाय पीकर बठी हू । वह बोली दिल नही
लग रहा था । इसलिए उस ही कलम उठाकर गुनगुनाने लगा । इतने
म आप आ गए ।

म बोला यह तो म स्मरण हुका था । मैंने अनुभव किया कि
निश्चय ही 'डिस्टब कर रहा हू किन्तु अब आ ही गया ।

बीच म ही सुधा बोल उठी वाह जी वाह डिस्टब किस बात
का ? अच्छे अवसर पर आ गए । कई दिनो से आपकी प्रतीक्षा म थी ।

म चार पाच घूट शरबत के पी चुका था । चाय की तरह ही
शरबत पीने लगा । सुधा दूसरे कमरे म गई और एक डायरी ले आई ।
तब तक म पूरा गिलास खाली कर गया । बठते ही बोली 'हाँ तो म
पूछना भूल ही गई कि आप कहाँ चले गए थ ?

मैंने मुस्कराते हुए कहा दिल्ली भारत की राजधानी ।

सुधा ने हसते हुए कहा अच्छा तो आप बहुत बडी जगह हो
आए । कोई विशेष काम था ?

हाँ विशेष ही समझिए । मैं बोला ।

मनुष का नाम मुह से निकलते निकलते रह गया । मने फिर कहा,

प्रमलता

'आजकल कविता की क्या गति है ?'

सुधा ने सकोच से डायरी आगे रख दी। मैंने डायरी के पन्ने पलटे। पहले पृष्ठ पर था 'प्रेमलता' यह डायरी का शीर्षक था।

मैंने पूछा यह क्या ?'

मैंने कविता संग्रह प्रकाशित करवाने का विचार कर लिया है' वह बोली।

मैंने कहा तो आपने यह साहस कर ही लिया।'

मैंने दूसरा पृष्ठ खोला। लिखा था— भेंट मधुप को। मैंने कहा 'तो आपने मधुप जी को भेंट कर दी अपनी प्रेमलता।

मेरा इतना कहना था कि सुधा का मुह लज्जा से रक्तिम हो गया। मुह से बोलने म असमर्थ हो गई। मुझे ही कहना पड़ा अच्छा है अपने गुरु का सम्मान तो होना ही चाहिए था।

मैंने दूसरा पन्ना उलटा। 'दो शब्द' म दो पृष्ठ लिखे हुए सुधा के। म आद्योपान्त पढ गया। साधारण भाषा मे कुछ मन की बातें थी। उसके उपरान्त कविता-संग्रह प्रारम्भ हुआ। केवल सौ पृष्ठो की पुस्तक थी। कुछ गीत थे और कुछ कवितायें। मैंने सुधा से एक गीत सुनाने को कहा। सुधा ने अपना प्रिय गीत सुनाया। कितना माधुर्य था इस गीत मे। एक पीडा, एक दर्द, एक टीस थी सुधा की अपनी। विरह और वियोग का गीत किसस ? क्या मधुप से ? मेरे मन म अनायास ही यह विचार आ गया। गीत समाप्त हो गया। मेरी इच्छा जागृत हुई कि सुधा से दूसरा गीत सुनू। किन्तु कहने का साहस नही हुआ। मेरा और सुधा का क्या सम्बन्ध था ? मुझे यहा बैठना ही नहीं चाहिए था इसके पति की अनुपस्थिति म। आ भी गया तो दो बात करके चले जाना

चाहिए था। किन्तु इतना आगे बढ़ना ही ठीक नहीं। मुझे क्या अधिकार था? मैंने केवल इतना ही कहा, सुधा जी आपमें प्रतिभा है। आप एक दिन हिन्दी की प्रसिद्ध कवयित्रियों में होंगी।

सुधा ने एक लम्बी साँस ली। इस साँस में भी दर्द का गीत था जिसका अर्थ मैं भली प्रकार समझ रहा था। कितना अन्याय होता है इस भारत भूमि में और इस हिन्दू जाति में। देश कितना आगे बढ़ने का ढकोसला कर रहा है। ये छोटे मोटे रीति रिवाज नहीं तोड़ सकता। फिर इस भारत की आत्मा शोषण विषमता और विदेशी आक्रमण को कैसे पार कर सकता है? इस देश का मनोवैज्ञानिक बौद्धिक परीक्षण करने लग गया है कि अमुक बालक के लिए अमुक विषय ही पढ़ाना चाहिए। क्या इस देश के बाप अपने पुत्र तथा पुत्री का परीक्षण कर उसकी रुचियों का ध्यान रखकर उसके लिए उचित वर नहीं ढूंढ सकता? क्या सुधा के लिए मधुप की तलाश नहीं हो सकती थी? सुधा का विरह किसी महान् मिलन में परिणित हो जाता और सुधा वास्तव में देश में सुधा बरसाता और भारत के मानस आँगन में रत्न के नहीं किन्तु जागरण के फूल खिलते और देश का भविष्य सुनहला बनता। मैं यह सोच ही रहा था कि किशोर ने आकर मेरे भाव प्रवाह को भंग कर दिया। उसकी आँखें लाल थीं चेहरे पर खुश्की थी। उसने कमरे में प्रवेश किया। अपनी नकली हँसी से मेरा अभिवादन स्वीकार किया किन्तु उसके मन की ग्लानि के भाव उसके चेहरे पर स्पष्ट थे। सुधा एक क्षण में किशोर के लिए पान का पानी ले आई। उसने पानी पी तो लिया किन्तु चेहरे पर चमक नहीं आई। सुधा फिर चली गई और स्नान के लिए पानी रखकर अन्दर आई

और बोली पानी रख दिया है आप स्नान कर लीजिए।'

दिनेश ने कपडे उतारे। मैंने दिनेश के मनामालिन्य को दूर करने के लिए बस ही कह दिया बडी गर्मी है आज।'

दिनेश के चेहर पर लक्षित भावो म कोई अन्तर नहीं आया। वह 'हाजी' कह कर स्नान के लिए चल दिया।

मैं अपराधी की भाति विक्षुब्ध हो गया। चोर की तरह भागने की सोचने लगा किन्तु सम्मान का भी प्रश्न था। मैं अकेला मन ही मन सोचने लगा कि मैं न तो अपराधी और न ही चोर फिर यह हृदय म दुर्बलता कसी आई ? मैं न तो तन स पापी और न मन से। मन के भावा की ध्वनिया अदृश्य तरगो द्वारा प्रत्यक मन के कोने तक पहुँच जाती हैं। व छिपाने स छिपती नही है रोकने से रुकती नही। मन अपन हृदय को टटोला तो देखा कि एक कोने म छिपी हुई एक सौन्दय की प्यास अवश्य है। यह प्यास कवल मेरे मे नही सभी हृदयो म होता है। सुन्दरता का प्यार करना तो बुरा नही पाप भी नही है। फिर यह झिझक क्या? समाज को अनुशासन चाहिए था। इसीलिए यह एकाधिपत्य से समाधान हुआ है। पाप और पुण्य की सज्ञायें दी गई हैं। मैं शायद अनुशासन भग करने का तो अपराधी नहीं था। फिर दिनेश का मूड खराब क्यो हुआ ? मैं सोच ही रहा था कि दिनेश खाना खाकर आ गया। सुधा उसके पीछे थी। दोनो आमने सामने बठ गए। दोनो मौन थे। मैंने मौन भग करने का साहस किया। मने कहा, 'आज काम अधिक था क्या ? बस बेचैन हो ?'

दिनेश का मुँह लाल हो गया। उसने अपनी पैंट से लिफाफा निकाला और मेज पर मारते हुए बोला, 'यह देखिए आपकी कवियित्री क

प्रेमलता

कारनामा।'

मेज पर डाला हुआ लिफाफा खुला था। सुधा ने लिफाफे की ओर हाथ बढ़ाया। दिनेश ने एक हाथ से सुधा का हाथ रोक लिया और दूसरे हाथ से मेज पर पड़ा लिफाफा उठा लिया। क्रोध से दिनेश के होंठ फड़फड़ाने लगे। सुधा का मुंह उतर गया। मैं मौन बैठा रहा। सुधा ने खड़े होकर लिफाफे को छीनने का प्रयत्न किया। सुधा हँसने का बहाना कर रही थी और दिनेश का पारा चढ़ता जा रहा था। दिनेश ने गर्म होकर कहा, छीन क्यों रही है? अभी बताता हूँ तेरी करतूत।

सुधा फिर से कुर्सी पर बैठ गई और कहने लगी बताइये बताइये। सुधा की नकली हँसी लुप्त हो गई थी।

दिनेश ने लिफाफे में से पत्र निकाला और पढ़ने लगा —

प्रिय सुधा,

दिल्ली,
७-७-६४

पत्र मिला। मुझे यह जानकर अति हर्ष हुआ कि तुम अपना कविता-संग्रह प्रकाशित करवाना चाहती हो। तुमने अपनी पुस्तक मुझे भेंट की है इससे भी मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। पुस्तक की पांडुलिपि तैयार करके तुम मुझे प्रेषित कर दो। मैं यहीं इसके मुद्रण की व्यवस्था कर दूँगा। रॉयल्टी आदि की भी उचित व्यवस्था करवा दूंगा चिन्ता मत करना। मैं अपनी पुस्तक भी प्रकाशित करवा रहा हूं। मैं यह पुस्तक तुम्हें भेंट कर रहा हूँ शायद तुम्हें एतराज नहीं होगा।

तुम अपने पिताजी के यहाँ कब आ रही हो, लिखना ताकि मैं भी

प्रेमलता

तुम से मिलने की व्यवस्था कर सकूँ। तुमसे मिलने को दिल करता है। तुम्हारे यहाँ आना तो इसलिए उचित नहीं समझता कि शायद तुम्हारे पति को किसी प्रकार का एतराज हो। तुम्हारी याद तड़पाती रहती है। तुमने मेरे कविहृदय को अनुप्राणित किया, इसके लिए मैं तुम्हारा बहुत बहुत अनुग्रहीत हूँ।

पत्र देते रहना। पाण्डुलिपि शीघ्र ही भिजवा देना।

तुम्हारे प्यार का ऋणी,

तुम्हारा–

मधुप।

पत्र का आद्योपान्त पढ़कर दिनेश अपने माथे पर हाथ लगाकर बैठ गया। सुधा चुप न रह सकी। वह अपने अपराध को छिपाने का तर्क ढूंढ चुकी थी। उसने तुरन्त अपने चेहरे का रूप बदल लिया और आवेश का कृत्रिम रूप बना कर बोली, 'आप तो वहमी हैं। इस वहम का इलाज लुकमान हकीम भी नहीं कर सकता। आप बताइये इसमें कौनसी ऐसी बात है जो मेरे चरित्र पर लाञ्छन लाती है। मैं मानती हूँ कि मधुप का और मेरा प्यार था, किन्तु प्यार का तात्पर्य केवल वासनात्मक प्यार से नहीं है। वह मुझे बहन मानता था और मैं उसे भाई। प्रकाशजी, आप भी निर्णय कर दीजिए।'

प्रकाश (मैं) तो सब कुछ जानता था। क्या कहता? क्या मैं इस बने बनाये महल को अपनी सच्चाई के अणुबम से ध्वस कर देता। मैंने भी यही कहा, दिनेशजी, ये तो साधारण सी बातें हैं इस युग में। आज की नारी घर की चहार दिवारी में नहीं रहना चाहती। हम क्या जानें इन

बातो की ?' हम तो युग बदलना है। युग बदलने मे नारी ही सहायक हो सकती है। ऊपर से नीचे तक आज की नारी मनुष्य के साथ कधे से कधा मिलाकर तभी रह सकेगी जब हम उसको ऐसा अवसर दग। जरा जरा सी बातो पर हम वहम करन लग गए तो फिर काम कस चलेगा ?

कि तु मेरी दलील दिनेश पर काम न कर सकी। उसका रोष कम नही हुआ। उसने फिर कहा सब कुछ ठीक है। किन्तु मैं यह नही पसन्द करता कि मेरी स्त्री को कोई दूसरा पुरुष पत्र लिखे। मैंन एक नही कई पत्र इसके पकडे है। सभी पत्रो म वही प्यार। क्या तमाशा है यह ? मुझे सुधा पर कतई विश्वास नही। आज तक मै खून के घूट पाता रहा चुपचाप रहा। मै अपनी काया को जलाकर जिन्दा रहना पसन्द नही करता। मुझे क्या पता था कि यह इतनी गन्द है। प कभी यह विवाह नही करता।

सुधा का पारा मेरा कुछ सहारा पाकर अधिक चढ गया। वह बोली रहने दीजिए मुझे सब मालूम है। आप तो भले हैं न। छिप छिप कर मिला करते थे पुष्पा से। वह पागल हो गई आपके वियोग म। मैने सब कुछ सुन रक्खा है। जो खुद पापी होता है उसका सारा जग पापी ही पापी दिखाई देता है। आप पापी हो तो क्या म भी पापी हू।

सुधा ने अपना अपराध छिपाने क लिए दूसरी दलील की। किन्तु दिनेश क हृदय म कब म पाडायो का यह पु ज छिपा हुआ था जो एक दम एक चिनगारी स दहकने लगा जो साधारण पानी क छींटो स बुझना सम्भव नहीं था। वह और भड़कने लगा तू क्या समझती है मर बार म ? मैंने पर नारी का स्पर्श तक नही किया। क्या म तेरा तरह गदा बीता हू जो

जगह जगह धूल चाटता फिरूँ ? कहा पुष्पा और कहाँ तू ? कहाँ राम राम और कहाँ टाय टाय ?

सुधा अपने व्यक्तित्व पर इतना प्रहार सहन नही कर सकी । वह अपनी समझ म पुष्पा से किसी रूप म कम नही थी । इस चोट से सुधा के होट फडफडाने लगे । उसने और क्रोध मे आकर कहा, 'यह मेरा दुर्भाग्य है कि मैं इस घर मे आई । मैं अपने आप का किसी भी तरह इस घर के योग्य नही समझती, आप क्या समझें मेरे बारे मे ? आपने मेरा सब कुछ चौपट कर दिया । आज तक मैं पता नही कहा पहुँचती और क्या करती ?'

दिनेश यह सुनकर खडा हो गया । मैंने समझा शायद यह सुधा पर हाथ चला देगा किन्तु उसने सुधा का हाथ पकडा और कहा आप अभी अभी इस घर से जा सकती हैं और अपना रास्ता ले सकती हैं । मुझे आपकी आवश्यकता नही । आप अपना रास्ता बनाइये, उन्नति कीजिए और जहा चाहे वहाँ जाइये ।'

सुधा यह सुनकर घबरा गई । वह रोने लगी और बीच बीच मे बोलती भी गई, 'मुझे यह पता नही था कि आप तीसरे आदमी के सामने मेरा इस प्रकार अपमान करेंगे । आप अकेले म मुझे कुछ कह भी देते मुझे अफसोस नहीं होता । अब मैं एक मिनट भी इस घर म नहीं रहूँगी ।'

मैंने फिर हस्तक्षेप करने का साहस किया । मैंने कहा दिनेशजी देखिए, घर म हमेशा छोटी छोटी बातें होती ही रहती हैं । न तो आपको इतना कहने की आवश्यकता है और सुधाजी, न आपको । अभी आप बच्चे हैं । हो सकता है दिनेशजी मेरी उपस्थिति से आपके दिमाग म ऐसी बातें आ गई हो । म भविष्य में ऐसा नही करूँगा ।'

दिनेश का पारा कुछ ठंडा पड़ गया। उसने कहा, 'नहीं नहीं, प्रकाशजी, ऐसी बात नहीं। मैं ठीक कहता हूँ और यह मानती नहीं।'

मैंने कहा मैं मानता हूँ दिनेशजी आप ठीक कहते हैं। किन्तु यह क्या करे? यह उनके पड़ोस में रही है। आपस में मिलते जुलते रहे है। दोनो कवितायें करते रहे है। इनका प्यार भी हो सकता है बहन भाई का सा। पत्र भी लिख दिया करते है। इसका एक ही उपाय है कि सुधा मधुप को लिख दे कि वह पत्र नहीं दे। जो हो गया सो हो गया आपको अपना गृहस्थ चलाना है। इस तरह की छोटी छोटी बातों से घर से निकलने और निकालने की बातों से होगी तो काम कब तक चलेगा?'

दिनेश शान्त हो गया और सुधा के आँसू भी सूख गए। सुधा वहाँ से उठकर अन्दर चली गई और मैं भी थोड़ी बहुत अपने बीच की बात करके घर आ गया।

मैंने दूसरे दिन सुना कि सुधा और दिनेश में फिर झगड़ा बढ़ा। सुधा नाराज होकर सुबह की ट्रेन से अपने पीहर जाने को बस के अड्डे पर पहुँच गई। दिनेश उसे मनाकर फिर घर ले गया। वह नहीं जानती।

इस गाँव म गादारा जाति के सौलह घर थे । इनमे दयालाल का ही घरा तकरा था । कहत है कि यह कौम किसी दूसरे गाँव से आकर बसी थी । उस समय इस गाव मे केवल प द्रह ही घर थे । इस जाति का केवल एक ही घर था । चारो ग्रोर जगल ही जगल था । ठाकुर जातने के लिए जबरन् जमीन दिया करता था । काश्तकार इससे बचने की कोशिश म रहता था । घन जन म यह घर माना जाता था इसीलिए गाँव की चौधर इसी घर की थी । समय के साथ इस जाति का भी इतना विस्तार हो गया कि कवल गोदारा जाति क सौलह घर हो गए । गाँव म प्राय रिवाज है कि करीब पन्द्रह सोलहवष की आयु म लडके की शादी कर दते है । अधिक उम्र मे लडका बीन (दुल्हा) सुन्दर नहा लगता । लडकी भा बराबर की उम्र की होती है । लडकी लडक से आयु में प्राय बडी दिखाइ दती है । लडकी थोड से वर्षों के बाद चार पाँच बच्चा की होकर बूढी नजर आने लगती है और लडके के शरीर पर कोई विशष अन्तर नही आता । कही कही तो यह भ्रम हा जाता है कि यह इसकी बहू है या माँ । थोडे ही समय म पुत्र पिता के सामने छोटे भाई स मालूम

प्रतीत होता

होते है। लड़का विवाहित होने से कुछ ही समय उपरान्त अपने बाप से अलग हो जाता है। वह अपनी जमीन और जायदाद बाँट लेता है और अलग होकर अपनी खेती करने लग जाता है। कहते है कि इसका कारण पुत्र स्वयं नहीं होता। पुत्र वधू अपनी सास और ननद से झगड़ा करके अपने पति को अलग होने को प्रेरित करती है। किन्तु श्योलाल का घर इसका अपवाद रहा। इसका विशेष कारण माता का सहिष्णुता, वाक्-पटुता, दूरदर्शिता तथा सभी के अधिकारों के संरक्षण की क्षमता हो माना जाता था। श्योलाल के पिता के दो भाई थे। श्योलाल तथा उनके भाई अपने पिता के बड़े भाई को 'बाबा जी' कहते थे। उनके भी चार बेटे थे। श्योलाल के बाबाजी का नाम बुद्धाराम था। बुद्धाराम श्योलाल के अन्य गोदारा भाइयों की तुलना में निकटतम था किन्तु बुद्धाराम के घर में श्योलाल के परिवार के प्रति सदा से ही ईर्षा की अग्नि दहकती रहती थी। घर तो पास था ही किन्तु खेत भी पास पास थे। कभी खेत में गाय घुस गई तो झगड़ा हो गया। तो कभी लड़के ने मतीरा तोड़ लिया तो झगड़ा हो गया। एक झगड़े के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा इस तरह झगड़ों की एक लम्बी कतार बन चुकी थी। श्योलाल का परिवार सदा से ही इन झगड़ों की उपेक्षा करता रहा। चुनाव के समय भी बुद्धाराम के परिवार ने कभी श्योलाल का साथ नहीं दिया। यह स्वाभाविक ही है कि ईर्षा की अग्नि निकट में ही प्रज्वलित होती है। यहाँ यह अपवाद कैसे होता।

तिवारी के निर्माण का प्रश्न उठा तो समस्त गोदारा जाति संगठित रूप से साथ हो गई। सभी गोदारा भाइयों को श्योलाल ने अपने

कमरे म एकत्रित किया। नियम से बुद्धाराम के परिवार को भी निमंत्रित किया कि उस परिवार का कोई भी व्यक्ति सभा म नहीं आया। आज से दस वर्ष पहले जब तिवारी का निमाण हुआ था तब भी बुद्धाराम ने एतराज उठाया था, किन्तु उस समय चुनाव आदि क बात चल नहीं थे अत वह इर्षा बह्नि अधिक विस्तार नहीं पा सकी थी। उस समय बुद्धाराम के परिवार ने एक बार तो आनाकानी की थी किन्तु अन्त मे मान गए थे और पसे भी दे दिए थ। इस बार यह परिवार पतराम से इतना घुलमिल गया था कि ईर्षा को प्रतिशोध का अवसर मिला और यह अवसर भी इसके लिए अधिक उपयुक्त था। दो चार बार बुलावा भेजन के बाद भी जब बुद्धाराम नहीं आया तो दयालाल न अपनी सभा की कार्यवाही प्रारम्भ की। उसने अपन सभी एकत्रित भाइयों स कहा, भाइयो आप इस बात से निराश न हो कि पचायत हमारे हाथ मे निकल गई है। हम चुनाव म हमारे साथ धोखा हुआ है। किन्तु हम काम करना है और मौजूदा पचायत को भी सावजनिक विकास कार्यों म सहयोग देना है। चन्दा आदि देने म कभी पीछे नहीं रहना है। हमारा गाँव अभी बहुत पीछे ह। अभी गाँव क बहुत काम करने है। हमे म लूम है कि कोई भी गाव का काम आपसी सहयोग के बिना आगे नहीं बढ सकता। इस समय मेरे सामने एक छोटा सा काम है। आज तक गाँव के काम म उलझा हुआ था, इसलिए इस काम की ओर ध्यान नहीं गया। आज मैं बड़ी जिम्मेदारी से मुक्त हो गया इसलिए यह बात ध्यान म आई। आपके सामन यह तिवारा है। इस तिबारी की छत गिर चुकी है। ईटें एक एक करके उठ रही है। तिवारी अपने बड़ो काम की रही है। आने वाले मेहमानों के लिए बड़ा

अच्छी व्यवस्था है। सभी का सोचा काम है। मैं चाहता हूँ कि यह इमारत ऐसी बने कि इसमें मेहमानों के लिए सभी सुविधाएँ हों। एक बड़ा कमरा एक स्थान पर, एक पाखाना और नाल में एक स्टोर बन जाए ताकि छोटे मोटे किसी मेहमान को कोई दिक्कत न हो। समाज तेजी से बदल रहा है और इस बदलते समाज के साथ हम भी बदलना है। मैंने कई स्थानों पर देखा है कि बड़े सुन्दर अतिथि गृह यानी रेस्ट हाउस बने हुए हैं। अपनी यह इमारत अब अतिथि गृह कहलायेगी। मेरे अनुमान में इस पर दस हजार से अधिक व्यय नहीं होगा शायद कुछ कम भी हो। हम यह पैसा आपस में जुटा लेंगे। प्रत्येक घर पांच सौ रुपये देवे तो काम चल जायगा। मैं सोचता हूँ और मुझे पूरा विश्वास है कि आपको मेरी बात अच्छी लगेगी और आप सभी की तरह सहयोग देंगे।

एक ने कहा, हमारे लिए भी बैठने बात करने, विचार करने के लिए अच्छी जगह बन जाएगी।'

दूसरा बोला हम अखबार भी मंगाते रहेंगे और इसमें बैठकर पढ़ते रहेंगे।

तीसरे ने कहा एक रेडियो सेट भी मंगा लें तो क्या हर्ज है ताकि सभी भाई बैठकर रोजाना की खबर भी सुनते रहेंगे।

चौथा बोला उनका कोई भी आदमी अन्दर प्रवेश नहीं कर सकेगा।

रुपोलाल को कहना पड़ा ऐसा न कहिए। यह गाँव के सभी साथियों की चीज होगी। अन्य जातियों के सामने यह एक उदाहरण होगा। वे लोग भी ऐसे ही अतिथि गृह बना सकेंगे।

फिर एक प्रस्ताव आया कि कुछ रुपये और बन जायें तो अन्य साधन भी उपलब्ध हो जायें।

श्योलाल ने कहा, य आप लागा की चीजें है। आप जानें। मैं तो आप जैसा कहेंगे वैसा ही करूँगा।'

इतने म बुद्धराम का भा प्रसग आ गया। यह बात भी चली कि वह उनके रास्ते मे रोडा अटकायेगा। श्योलाल ने जान बूजकर प्रसग की उपेक्षा की कि जस बात आई ही न हो।

दूसरे दिन तिबारी के खडहरों को धराशायी कर दिया गया। देखते देखते सारी तिबारी ईटों और कूडाकरकट मे बदल गई। छत का मलबा अलग कर दिया गया।

दूसरे दिन चदा एकत्रित हुआ जो नौ हजार तक पहुँच गया। शेष राशि दो चार दिन म आने की सम्भावना थी। दो कारीगर काम के लिए तैयार किए गये। मजूरा के लिए यह निणय लिया गया कि हरेक घर एक एक आदमी बारी से देता रह। दो कारीगरा के लिए पाच मजदूर पर्याप्त थे। एक मजदूर गारा बनाने के लिए दो गारा पहुँचाने के लिए लिए और दो ईट आदि सामग्री पहुँचाने के लिए। बीस हजार ईटा की साई दे दी गई और कुम्हार के गधे ईट ढोने लगे।

दो दिन के बाद काम शुरु होना था इसलिए उसी रात का एक मीटिंग बुलाई गई। अपने एकत्रित भाइयो को सम्बोधित करते हुए श्योलाल ने कहा, 'दो दिन के बाद हम काम चालू करेंगे। नौ हजार रुपये इकट्ठे हो गए है। मैं चाहता हूँ कि रुपया एक विशेष व्यक्ति के पास जमा रहे। एक आदमी इसका हिसाब रखे और एक साथी इसकी जाच करता रहे।

आठ पा'मियों की एक कमेटी बन जावे तो काम कराने का निणय करना रहे।'

न्यायालय के कथनानुसार आठ आदमियों की एक कमेटी का गठन हो गया। कोषाध्यक्ष और एक वक्ता की भी नियुक्त हो गई। यह निणय भी ले लिया गया कि दो दिन के बाद काम प्रारम्भ कर दिया जाय।

इतने म एक प्रश्न आया। प्रश्नकर्त्ता ने उठ कर कहा मुझे रात्रि को एक सूचना मिली है कि बुद्धराम सरपंच के यहाँ गया और उसने बतलाया कि यह जमीन जिस पर यह अतिथि घर बन रहा है वह अपना नहीं है। किसी हरिजन की है जो आज से पचास साल पहले छोड़ कर चला गया था। इस जमीन पर यह नाजायज कब्जा था। ईंटे उसी की बतलाई गई है जिनका उपयोग हो रहा है। पतराम सरपंच ने बुद्धराम का यह आश्वासन दिया बताते ह कि वह हरगिज अतिथि घर नहीं बनने देगा। ऐसी स्थिति म हमे क्या करना चाहिए ?

सभी एकत्रित सदस्य असमञ्जस में पड़ गए। आपस म काना फूसी करने लगे। अलग अलग मस्तक का अलग अलग मत था। किसी ने कहा, 'हमे काम शुरु ही नहीं करना चाहिए। किसी का विचार था, काम शुरु कर देना चाहिए। समय आने पर देखा जायगा।' आदि आदि। किन्तु छगनलाल ने खड़े होकर कहा हमने यह निणय लिया है कि हम काम शुरु करना है आज से दो दिन बाद। काम शुरु करने पर किसी प्रकार का भी आदेश आ जाए, हमें काम शुरु रखना है। जो भी परिणाम होंगे हम भुगत लेंगे।'

प्रेमलता

दयोलाल के प्रेरणादायक शब्दों से उनके साथियों का मनोबल बढ़ गया। सभी एक ही विचार के सूत्र में बंध गए। सबको दयालाल के नेतृत्व का विश्वास था। सभा के विसर्जन में विलम्ब नहीं हुआ।

१८

पुष्पा जब ससुराल से वापस आई तो उसको पहचानने में समय नहीं लगा। पहले का भोलापन पूर्ववत् बना नहीं था। ऐसा मालूम हुआ जैसे उसके शरीर से रक्त खींच लिया हो। ससुराल में बहुत काम कर रही थी इसलिए उसकी चाल-ढाल बहुत धीमी हो गई थी। न किसी से बोलती थी और न बात ही करती थी। इसके विपरीत निरंतर काम में संलग्न रहती थी। पाँच बजे प्रातः अपनी माँ के साथ ही उठती थी। गायों भैंसों को चारा डालती, दिन का उजाला होते ही बड़े बड़े घड़े भर कर पानी लाती और सारे पेड़ों में पानी ही पानी कर देती थी। खाने पीने से निवृत्त होकर घर के सारे बर्तन मांजती। खेत जाकर पशुओं के लिए हरा चारा ले आती और फिर शाम को उसी ढंग से पानी लाने में लग जाती। मांजी कहती थी कि पुष्पा अब सयानी हो गई। ससुराल जाकर समझदार हो गई। इसको एक महीने यहाँ रखकर फिर ससुराल ही भेज देंगे। मेरे से भी पुष्पा का बोलना करीब करीब बन्द था। मैं इस परिवर्तन का अर्थ नहीं समझ सका। मेरे विचार में इतना ही आया कि सम्भवतः इसकी बड़ी बहन का बर्ताव अच्छा रहा होगा। माजी को

दृष्टि मे देवता का दोष था और वह दूर हो गया। किन्तु यह सही था कि पुष्पा पहले वाली पुष्पा नहीं थी। उसकी क्षीणतर काया को देखकर मेरा अनुमान भी सही नहीं था। आश्चर्य की बात तो यह थी कि दिन रात काम करने के बावजूद भी उसमें कहीं थकावट का नामोनिशान नहीं था।

आसोज का महिना था। कुछ अजीब से दिन थे। वर्षा के दिन समाप्त हो चुके। दिन मे सूर्य के ताप में बडी तीव्रता थी और रात्रि को सर्दी अनुभव होती थी। किसानो के काम का समय था। लोग घरों में नहीं रहते थे। दिन भर खेतो मे ही व्यस्त थे। सावणी की फसल पकने जा रही थी। एक विशेष कारण और भी था। खेतो में खाने पीने का मिल जाता था। घर में रहने को दिल नहीं करता था। रविवार का दिन था। मैं घर पर पडा पडा ऊब गया। इतने में बाहर दिनेश की आवाज आई। क्या अन्दर ही हो क्या? मैं दिनेश की आवाज पहचान गया। मैं उत्सुकता से खडा हो गया। मैंने कहा 'आइए दिनेश जी, रास्ता भूल गए क्या? दिनेश ने बाहर से ही कहा, 'भाई जी आ जाओ, कुछ काम है आप से।

शिक्षित हो । वे नए ढंग से खेती करें । खेती का साझा रूप हो । मशीनों का प्रयोग किया जाय । पूरी सिंचाई हो पूरी खाद । देश का धन बढ़े ।

दयोलाल हसने लगा आपकी सरकार रूस और अमरिका की पुस्तकें पढ़ती है या जनता के पास से रूस और अमरिका हो आती है । उसी प्रकार का जीवन भारत के किसान पर थोपना चाहती है । देश की शहरी सरकार भारत के किसान को पोथियों के ज्ञान के चश्मे से देखती है । वह उसका दिल टटोल कर नहीं देखती । भारत की सरकार को भारत के किसान के मन को पढ़ना होगा । कल्पनाओं से उन्नत से किसान का महल नहीं बनता । कितना परिवर्तन आया है भारत के जीवन में ! किन्तु भारत का किसान वहीं है । पानी आया है हमारे पास किन्तु इसके साथ ट्रैक्टर के भेष में ऐसे भेड़िये आए हैं जिनका पेट हमारे खून से नहीं हमारे मांस से भरता है । शिक्षा आई है हमारे देहातों में किन्तु वह हमारे आदमी पकड़ पकड़ कर शहरों में ले जा रही है । जो नहीं जा पाते वे अब मिट्टी में और धूप में काम करने लायक नहीं होते । वे आवारों की भाँति या तो गलियों में फिरते हैं या किसी ठंडी जगह में बैठकर ताश चौपड़, जुआ खेलते हैं और शराब पीते हैं । इतना कहते कहते दयोलाल उठ गया और पास ही से एक मतीरा तोड़ कर ले आया । कहने लगा ये बातें तो होती ही रहेंगी । बहकने की आदत है । लो मतीरा खाओ ।'

दयोलाल ने अपनी कोहनी से मतीरे के पेट में छेद किया और मुष्टिका से मतीरे के दो टुकड़े किए । मतीरे की 'गीरी' लाल गुलाल की तरह मनोहर थी । एक खुपरी मेरे सामने और दूसरी खुपरी निदेश के सामने रख कर दयोलाल उठ कर चला गया । हमने सोचा कि दयोलाल

ग्रौर कुछ लाने गया होगा। दिनेश ने खुपरी खाते हुए कहा, खाग्रो यार, मीठा बहुत है।'

हम दोनो ने मतीरा खाना प्रारम्भ किया। मतीरा राजस्थान का सर्वोत्तम फल हैं। इसके मिठास की उपमा मिसरी से दी जाती हैं। किन्तु इसका मीठास अनुपम है। राजस्थान के किसान इसकी बडी प्रशसा करते हैं। इसको कई बामारियो की ग्रौषधि भी बतलाते हैं। मुझे तो इसका प्रत्यक्ष गुण यह मिला कि एक खुपरी खाने से ही पेट भर जाता है। इतने मे माजी और पुष्पा भी आ गई। माजी हमे देख कर बडी प्रसन्न हुई किन्तु पुष्पा अलसाई पत्ती की तरह अलग होकर बैठ गई। दिनेश पहले ही झेंपा हुआ सा बैठा था। पुष्पा को देखकर और सिकुड गया।

पुष्पा दिनेश के विपरीत मुह करके बैठ गई। माजी की मुस्कराहट का सकेत उसका एक दात था जो बेचारा अपने समूह म अकेला रह गया था। माजी ने बैठते ही कहा, 'मुझे तो दूर से ही दिख गए थे। आज दिनेश बाबू को यह खेत कैसे याद आ गया ?

दिनेश ने अपनी झेप मिटाते हुए कहा, 'आपके ही खेत आ रहा था मैं तो।'

आया कर, बेटा। हम कोई दूसरे थोडे ही है।' माजी बोली।

दिनेश ने बाद मे कुछ नही कहा। माजी ने अपनी झोली से बहुत-सी ककडिया निकाली। सभी पीले रंग की मोटी मोटी ककडिया थी। ककडिया के बाद माजी ने दो मोटे मोटे मतीरे निकाले। कहने लगी, तुम लोगो के लिए लाई हूँ। इस प्रकाश को तो कई बार कहा है। आजकल खेत तो स्वर्ग है। खेता मे बडा आनन्द है। खाने

पीने की बड़ी मौज है । यह एक महीने की और है । फिर यह मौज नहीं मिलेगी । यह तो घर पर ही पड़ा रहता है । बड़ा आलसी है ।

माजी ने अलग अलग करके सभी ककड़ियां सूंघी । यह अच्छी बुरी की पहचान का तरीका था । सर्वोत्तम ककड़ी का चयन करके दांतों से चीर कर, बीज निकाल कर अपनी ओढ़णी के पल्ले पर बंधी हुई नमक मिर्च की गठड़ी खोल कर दोनों भागों में उचित मात्रा में नमक मिर्च लगा कर हम दोनों को एक एक भाग दे दिया । हम दोनों ने ही कहा माजी हमने तो अभी मतीरा खाया है । पेट में अब जगह कहां ? माजी ने कहा यह नुकसान देने वाली चीज नहीं है बेटा । बड़ी हाजमी है यह । बहुत ही स्वादिष्ट है । मन सूंघ कर उठाई है । इसके खाने के बाद मतीरा बहुत अच्छा लगेगा ।

माजी के सामने हम इन्कार नहीं कर सके । अपना अपना हिस्सा हमने ले लिया । ककड़ी वास्तव में बड़ी स्वादिष्ट थी । ककड़ी को चखते ही मानो पेट में दूसरी थैली खुल गई । अब तो पेट पूर्ण रूप से भर गया । मांजी ने लपके ही मतीरा फाड़ लिया । एक एक खुपरी हमारे सामने रख दी । हम दोनों ने इन्कार किया । माजी के अधिक जोर देने पर मैंने कहा 'मांजी पेट में तिल रखने की भी जगह नहीं ।'

माजी हंस कर बोली 'वाह भाई वाह अच्छे जवान हुए । मेरे पिताजी इतने तगड़े थे इतने तगड़े थे कि जब मतीरे खाने बैठते थे तो इतना खाते थे इतना खाते थे कि मानो खुपरियों का ताना बाना नाक तक पहुंच जाता था और यह है आज के जवानों का रंग । एक मतीरा भी नहीं

खाया गया। मेरे ताऊजी इतने तगड़े थे कि मस्त ऊँट को लाठी मारते तो ऊँट गिर जाता था। इतना कहकर माजी ने एक एक सुपरी हमारे आगे रख दी और बोली, 'लो यह मेरे हाथ की और खाओ। बजाकर लाई हूँ। बहुत ही मीठा मतीरा है। माजी की बात तो माननी ही पड़ी, अन्यथा यह हमारी जवानी का अपमान था। ज्यों त्यों हमने मतीरा और खा लिया। माजी ने दूसरा मतीरा फोड़ा और खाना शुरू कर दिया। माजी को इस स्नेहसिक्त वातावरण में रामसिंह याद आ गया। माजी बोली 'जब कभी मैं मतीरा खाता हूँ, मुझे रामसिंह याद आ जाता है। मीठी भर गले में अटक जाती है। मेरा रामसिंह पता नहीं कहाँ होगा? उसको मतीरे बहुत पसन्द थे। इन दिनों में वह घर ठहरता ही नहीं था। कहते हैं, लड़ाई शुरू होने वाली है। माजी आगे नहीं कह सकी। उसका कंठ भर आया। मां की ममता आंखों से टपकने लगी। माजी ने अपने मैले आंचल से आंखें पोंछ ली। मैंने पुष्पा की ओर देखा तो मालूम हुआ कि वह भी इस वातावरण से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकी। माँ तू कितनी महान् है! कितनी विशाल है! मैं सोचने लगा, 'कितने कोमल तन्तुओं से बना हुआ है तेरा हृदय! ममता सहानुभूति प्रेम स्नेह, सहिष्णुता, उदारता आदि समस्त मानवीय गुणों से ओतप्रोत है तेरी काया। प्रेम का एक विराट समुद्र है तू। यह मनुष्य तो केवल तेरा अंश मात्र है।

दयालाल के आगमन से प्रसंग ही बदल गया। उसने दूर से ही यह प्रश्न कर दिया मानो वह उसी उधेड़बुन में घूम रहा था, दिनेशजी, कितने लड़के हैं आपकी स्कूल में?

दिनेश ने कहा, 'कक्षा ६ से लेकर ग्यारहवीं तक डेढ़ सौ से कम ही हैं।'

तब तो यह स्कूल टूटेगा। श्यामलाल बोला।

दिनेश ने कहा 'स्कूल की स्थिति तो क्या बतलाऊँ ? अध्यापक और प्रधानाध्यापक यहाँ रहकर सन्तुष्ट नहीं हैं। सभी भागने के चक्कर में हैं। सभी यह चाहते हैं कि शहर मिले।

शहर में क्या मिलता है इनको ? श्यामलाल ने कहा मकान का किराया लगेगा। लकड़ी पानी, साग सब्जी सभी का खर्चा है वहाँ। यहाँ सब सुविधायें हमने दे रक्खी हैं।

दिनेश ने कहा केवल इन सुविधाओं के भूखे नहीं हैं ये लोग। शहरी संस्कृति में पले हुए जीव हैं ये। हवादार मकान ताजी सब्जी ताजे फल सिनेमा नाई की पहले दर्जे की दुकान, घूमने फिरने को अपने ढंग की सोसाइटी यहाँ कहाँ है ?

कितना अन्तर है इस गाँव और शहर के जीवन में ?' श्यामलाल ने कहा हम चाहते हैं कि ऐसे लोग इन जगहों में आएँ जो गाँवों में सेवा का भाव रखते हों। किन्तु नेहरू युग ने तो उच्छृंखल और स्वार्थी युवकों को जन्म दिया है। इन देहातों में पैंट-सूट पहनने वाले व्यक्ति घूमते नजर आते हैं। स्वतन्त्र भारत में भारतीयता लोप होती जा रही है।

मैंने कहा सेवा भाव तो, चौधरी जी गाँधी के साथ गया। सच पूछो तो निश्चित नौकरपेशा आदमी तो यहाँ कमाने के लिए आता है। आप पैसा दो आराम दो सुविधा दो सब यहीं पड़े रहेंगे। सेवा भाव तो जैसे इस देश से उठ ही गया। आपके पंचों और सरपंचों में क्या रह गया है ?

अब तो गाधी की खद्दर को लज्जा आ रही है।'

इसके बाद दिनेश न स्कूल की वस्तु स्थिति का विवरण दिया जिसम ठेकेदारी भ्रष्टाचार और टयूशन का लज्जाजनक वणन था। अध्यापक टयूशनें करत हैं उत्तीण कराने मे ठेकेदारी करत हैं और उत्तर-पुस्तिकाओ मे अ क वृद्धि कराने म पसे लेते हैं। मैंने कहा, इस विभाग का भी भट्टा बैठ गया। देश का भविष्य जिन बालको पर निभर करता है उनके सस्कार इस भ्रष्ट वातावरण से निर्मित होगे तो भारत के उज्ज्वल भविष्य की कल्पना करना निरथक है।'

दिनेश ने एक और रहस्य का उद्घाटन किया, अध्यापक अकेले दोषी नही हैं प्रकाशजी अभी अभी जो तीन स्थानान्तरण हुए हैं व कृपा राम जी द्वारा हुए है। आपके एम एल ए साहब और प्रमुख व्यक्ति भ्रष्ट मार चुके। रुपया पहुँचा और काम बन गया। आपका भ्रष्टाचार ऊपर से नीचे आ रहा है। आत्मा रो रहा है, पिस रहा है और खाने पीने वाले मौज कर रहे है।'

दयोलाल का चेहरा जैसे उतर गया हो। उसने मन मार कर कहा क्या होगा इस देश का ?'

'जो होगा सो देखते जाओ। मने कहा।

माजी और पुष्पा इस बीच पता नही कब चली गई थी। दयालाल का किसान बकार न रहे यह सोचकर हम दोनो उठ खडे हुए। दिनेश ने उठत हुए कहा, 'इस युग म एक बात और समझने को मिली कि पाप बुरा नही है पाप को उघाडना अनय है बखेडा है अपने ऊपर आफत मोल लेना है। पाप म सम्मिलित होकर प्रफुल्लित हो सकते हो, चुप रह-

कर जो सकते हो और इसके विरुद्ध चलकर अपने लिए संकट मोल कर सकते हो।'

दयोलाल चुपचाप हाथ में दोनों लेकर चला गया। सूर्य अस्ता चल को जा रहा था। उसकी अंतिम लालिमापूर्ण किरणों से धोरों की धरती का आंचल मुस्करा रहा था। ऐसा लगा कि यह इन बन्दनी तस्वीरों पर व्यंग हो।

दिनेश के साथ अकेले होने का यह पहला ही अवसर था। चारों ओर हरे भरे खेत लहलहा रहे थे। किसान का धन धरती पर बिखरा पड़ा था। कपास और गन्ने की खेतियां भी कहीं कहीं दिखाई दे रही थीं। यह भूमि सोना निपजती किन्तु इस सोने की थाली में यह तरर क्या है जिससे इसकी आवाज बिगड़ गई है। चारों ओर नैराश्य और मुर्दनगी। भारत का जन मानस हँसना चाहिए था रो क्या रहा है ?

दिनेश ने मेरे विचार प्रवाह को यह कह कर मोड़ दिया,

'आपने पुष्पा को देखा ?'

'मैं तो रोज देखता हूँ।' मैंने कहा।

दिनेश का तात्पर्य पुष्पा को अपनी आँखों से दिखाना था।

'कितनी मुरझा गई है वह !' दिनेश बोला।

मैंने कहा 'मैंने तो उसे इसी रूप में देखा है।'

दिनेश ने कहा 'भोर के गुलाब की तरह सुन्दर थी यह। सावण की बदली की तरह उभरा हुआ था इसका भोला यौवन। हम दोनों का आपस का आना जाना था। मैं भी यहां पढ़ता था और वह भी। घरवालों में पहले कोई बातचीत नहीं था।

'क्या तुम निकट से मिले हो ?' मैंने पूछा ।

ग्रति निकट से' दिनेश बोला 'एक दिन पुष्पा अपनी मा के
थ मेरे घर आई था इसी नये घर म जिस नये घर म मेरे पिताजी रहते
। पुष्पा सदा स ही सकोचशील है । म ऊपर के कमरे म बैठा था । वह
मती फिरती मेरे कमर की ओर आ गई । मुझे इसका आभास तक नही
। ज्योही मेरी दृष्टि पुष्पा पर पडी वह भाग कर नीच आ गई । मने
पा को पहले ही कई बार देखा था कि तु उस दिन की नजरें ही कुछ और
। मैंने वसी आखें उस समय तक नही देखी थी । म उस दृष्टि से हिल
या । सारे शरीर के रोगटे खडे हो गए । सारा रक्त भनभना उठा । म
चे आ गया । वह अपनी मा के साथ जाने लगी । ज त समय वह मुड
र एक बार फिर भाक गई ।

दिनेश फिर चुप हो गया शायद अपनी पूव स्मृतियो को बटोर
हा था ।

मुझे भी सुनने की उत्सुकता जागी । मने कहा फिर

'पुष्पा मुझे बचनी दे गई । दिनेश न कहना प्रारम्भ किया,

ऐसी बेचनी मन पहल कभी अनुभव नही की थी । स्कूल मे पुष्पा
नल्ली ही थी । कभी कभी आंखें चार हो जाती और शरीर म एक कम्पन
गी दौड जाता ।

'एक दिन पुष्पा किसी पुस्तक के बहाने मेरे घर फिर आ गई ।
ाताजी घर थी । पुष्पा ने निबन्ध की पुस्तक मागी । मने पुस्तक द दी ।
ाताजी के पास हम दोनो बैठ गए । हम दोनो ने चाय पी । वह जाने को
ी । मैंने वसे ही बहाना बनाया पुष्पा, तुम्हार खेत से हमारा खत अच्छा
 ।

मलता

पुष्पा ने कहा 'नही, हमारा खेत अच्छा है।'

मैंने फिर जिद्द की। उसने कह ही दिया, 'अच्छा दिखाओ।'

'हम दाना खेत देखने के बहाने खत म चल पड। ज्वार के भुरमुट मे हम अकेल खडे थे। शीतल बयार बह रही थी। सावण की घटाओ ने नभ को छिपा रक्खा था। मैंने पुष्पा का हाथ अपन हाथ म ले लिया। मने कहा पुष्पा, तुम बहुत सु दर हो। पुष्पा ने अपना हाथ छुडा लिया और वापिस भाग गई। मेरा चेहरा फक हो गया। मैंने समझा कि पुष्पा बुरा मान गई। पुष्पा घर चली गई।'

मैं रात भर इसी उधेड बुन मे रहा कि कभी बात पिताजी क पास पहुँच गई तो क्या होगा? वह अपनी माँ को मरी शिकायत कर देगी और फिर उसकी मा मरे पिताजी का। रात भर मुझे नींद नहीं आई।

दूसरे दिन स्कूल म मैं पुष्पा से अकेल म मिलन का अवसर ढूँढने लगा। मध्यविराम म वह पानी पी रही थी। म भी जा पहुचा। मने धीर से कहा नाराज हो गई हो पुष्पा। उसकी मुस्कान स मरा भ्रम दूर हो गया और मरा हृदय स्वप्ना की जगती म तिरोहित हो गया।'

कुछ ही समय उपरान्त हम कुछ समय क लिए इस गाँव क घर मे रहन को बाध्य होना पडा। पुष्पा प्राय मर घर आ जाती और घण्टो बठी रहती। कभी कभी किसी प्रश्न को पूछन क बहाने मरे निकट बठ जाती।'

रात का समय था। पुष्पा मर घर आ गई थी। गणित का प्रश्न पूछन मर पास बठ गई। उसन पुस्तक मर आगे रख दी। प्रश्न का उतर नहा मिल रहा था। माताजी को नींद आन लगा। वह अपन कमरे म

जाकर सो गई। प्रश्न का हल न मेरी समझ मे आ रहा था और न उसके। मेरे सामने दूसरा प्रश्न आ गया जिसकी उसे प्रतीक्षा थी। मेरा हृदय धक् धक् करने लगा। रक्त की गति तीव्र हो गई। हाथ से कलम छूट गई। सम्भवत यही स्थिति पुष्पा की होगी। मैंने पुष्पा को कह ही दिया 'तुम एक दिन भी नहीं आती हो तो मैं मन उचाट हो जाता है।'

पुष्पा ने कहा ऐसी क्या मैं परी हूँ।

तुम बहुत सुन्दर लगती हो मुझे।' मैंने कहा।

'आप तो मुझे बना रहे हो।' पुष्पा बोली।

मैंने पुष्पा के गालो पर थपकी लगाते हुए कहा कितनी प्यारी हो तुम! पुष्पा का चेहरा लज्जा से लाल हो गया। वह मारे से आँख नहीं मिला सकी। मैंने उसको निकट लेकर उसके कपोलो को चूम लिया। उसने मुझे हटाते हुए कहा ऐसे थोड़े ही किया करते हैं। कोई देख लेगा।'

कितना माधुर्य था उन क्षणो म ! मैं उनका वर्णन नही कर सकता। मुझे ऐसे क्षण आज तक नही मिले। मैं पुष्पा को घर तक पहुँचा कर आया।'

दिनेश कहता गया एक दिन और— भादों की श्यामल घटाओ ने नभ की नीलिमा छिपा रक्खी थी। भीनी भीनी शीतल हवा बह रही थी। कितना मिठास था उस वातावरण म ! मैं और पुष्पा एक वृक्ष के तले बैठे हुए थे। कोई नहीं था वहा— केवल मैं और पुष्पा। चिड़ियो का एक जोडा वृक्ष पर एक नीड का निर्माण कर रहे थे। पुष्पा ने कहा, मेरी माताजी मेरे भाई साहब से एक बात कर रही थी।

मैंने पूछा, 'क्या ?'

वह बोली यह तुम्हारी और हमारी थी।'

'यह बात तो करीब करीब तय हो गई है।' मैंने कहा।

पुष्पा हँसकर मेरी बाहुपाश में आ गई। मेरे अधरों के निकट अधर लेकर बोली तुम कितने अच्छे हो। मैंने उसके अधरों को चूम लिया। उन अधरों में अलौकिक माधुर्य था और हृदय में एक दुर्लभ धड़कन। पुष्पा जैसा सौन्दर्य मुझे आज तक किसी नारी में नहीं दिखाई दिया इतनी सुन्दर लग रही थी वह। यह पुष्पा वह पुष्पा नहीं है प्रकाश। वह पुष्पा तो गई राख में मिल गई।

हमारी सगाई हो गई। उसके बाद का मिलन एक कल्पना की दुनिया थी और भावी आशाओं की भूमिका। दुर्भाग्यवश पंचायतों का प्रथम चुनाव आया। मेरे पिताजी और दयोलाल के दो दल बन गए। हमारा प्रासाद ढह गया। मुझे पुष्पा अंतिम बार मिली उसी स्थान पर जहाँ पर हम प्रायः मिला करते थे। पुष्पा मेरे से लिपट गई लता की तरह बुरी तरह बिलखती हुई दिनेश मैं डूब रही हूँ। मुझे बचा लो। मैं तुम्हारे में समाना चाहती हूँ। भाग चलो दिनेश यहाँ से। मैं इस दुनियाँ में नहीं रहना चाहती।'

मैं इस विलाप का कारण नहीं समझा। पुष्पा ने बताया कि उसकी सगाई उसके बहनोई से हो चुकी थी। मेरे पर लड़खड़ा गये। मेरा हृदय काँप गया। मेरे आँसू सूख गए। हमारे सुनहले सपनों पर तुषारापात हो गया। पुष्पा चली गई और सदा के लिए चली गई।

दिनेश की बात समाप्त थी। सूर्य भी छिप चुका था। उसकी किरणें अब भी अवशेष थीं। पश्चिम की आचल की लालिमा में पुष्पा के यौवन रूप की कल्पना थी। दिनेश की वार्ता का उपसंहार उसको गहरा

सास से हुआ।

हम दोनों चल पड़े। रास्ते में अकेली सुधा को देखकर मैंने कहा, आप अकेली इधर कैसे? दिनेश जी रूठ कर तो घर से नहीं निकल गए थे।

सुधा ने नतमस्तक होकर कहा, 'आप तो मजाक करते हैं।'

'दिनेश तो सचमुच आपसे नाराज है।' मैंने मजाक की।

ये तो सदा ही नाराज रहते हैं। उसका उत्तर था।

बातों ही बातों में सुधा की पुस्तक के प्रकाशन की बात आ गई। सुधा ने कहा मैंने मुद्रण के लिए अपनी 'प्रेमलता' भेज दी है।

गाव के समीप आकर हमने अपने रास्ते अलग कर दिए।

१९

युग का नेतत्व अपने पीछे अपनी प्रतिच्छाया छोड़ जाता है। उसका प्रतिरूप देश की गली गली म लक्षित होता है और उसकी झकार प्रत्येक अ तर म झकृत हो जाता है। भारत का निर्माण-युग अपनी भव्य भावनाओं क साथ आया और देश के कोने कोने मे पहुँच गया। गाँवो म इसकी लहरो का इतना प्रादुर्भाव हुआ कि यह अपनी विभूतियो के साथ भी गतिहीन नही हो सका। श्यौलाल क सस्कार इसी युग की देन थी किन्तु अधिकार से च्युत होने क कारण अतिथिगृह का निर्माण ही उसका कायक्रम बन सका। निश्चित तिथि क निश्चित समय कायक्रम प्रारम्भ हुआ। श्यौलाल म जितना लगन और साहस था उससे किसी भी अ श म उसके साथियो म कम न था। दो कारीगरो ने अपना 'करणी सम्हाली, दो मजदूरो ने बटठल, एक आदमी न गारा बनाने लगा और दो ईटें पहुँचाने म जुट गए। नीव खुदने क बाद यह कायक्रम चालू हुआ। इट के खण्डरो स नीव भर दी गई और दीवार ऊँची उठने लगी। सभी इस आशका मे थे कि सरपच की ओर से 'काम ब द करो' का आदेश आएगा। सूयास्त स पूव ही सभी अपना काम छोडकर चले गए कि तु आशका आशका

। बनी रही ।

रात्रि के समय पूर्ववत दयोलाल के यहा सम्भवत एक सभा जुड ई। 'काम बन्द करो' का आदेश आने पर सभा चकित थे। इस सम्बन्ध में भिन्न भिन्न मत सामने आए। एक ने कहा पतराम का विचार इस साधारण झगड़े में पड़ना नहीं है।' दूसरा बोला, 'वह हमारे संगठन से आतंकित हो गया।' तीसरे का मत था, 'बुद्धराम हरिजन को अपना नहीं बना सका। एक आवाज यह भी आई कि पतराम ने अपना गुप्तचर अवश्य भेजा था। इसी असमंजस में सभा विसर्जित हो गई। रात्रि को दयोलाल और मांजी को कुछ देर जगना पड़ा। बूढ़ा बीमार था। खांसी के कारण उसे बेचैनी थी। इसलिए मुझे भी देर तक नींद नहीं आई।

करीब ग्यारह बजे आंख लगी। मुझे एक भयंकर स्वप्न आया। मैंने देखा कि सारे गांव में आग लग गई थी। एक विशालकाय राक्षस अर्द्धनग्न अवस्था में अट्टहास कर रहा था। वह गांव के एक आदमी को पकड़ पकड़ कर फेंकने लगा। इतने में उसका पुष्पा भी दिखाई दी। राक्षस को देख कर पुष्पा भागी किन्तु दैत्य ने उसे पकड़ लिया। मेरे गले से अचानक एक चीख निकली और मैं जाग गया।

मैंने देखा कि मेरा सारा शरीर पसीने से तर था। आकाश में केवल तारे टिमटिमा रहे थे। रात मुझे अत्यन्त डरावनी लगी जैसे सारे गाँव को अपने में समाना चाहती हो। सामने का दुर्ग भी तममय हो रहा था। मेरा भय खाने को दौड़ा। मैंने अपने शरीर का पसीना अपने तौलिए से पोंछ लिया। उठकर पानी पिया और सिगरेट सुलगाई। मेरे मस्तक में से विचारों की लहरें दौड़ने लगी, मेरे मां बाप, भाई, बहन और

प्रति निकट आने वाला साथी। प्रेम, मा बाप का प्रेम, भाई बहन का प्रेम और साथियो का प्रेम। कितना विशाल हृदय होता है माँ का! प्रेम की चरम सीमा है माँ! मा के प्रेम की समता इतिहास की कहानियाँ नही दे सकी। माँ नारी का उत्कृष्ट रूप है। यौवन की नारी के प्रेम की विषमता के कारण ही कुछ आदर्श बन कर जीवित रह गई है। मैं अपने व्यक्ति पर आ गया और आकाश अधिक शून्य हो गया। तारे भी आखो से ओझल होने लगे। अडिग ध्रुव को देखने लगा। अडिग प्रेम की भाति तुम अटल हो, अमर हो।

बिस्तर पर शरीर को इधर उधर लुढकाने पर भी नींद नही आई। आखें बन्द कर फिर प्रयास करने लगा। विचारो का फिर ताता बन गया। मन स्थिति कुछ विचित्र सी बन गई। दिमाग के पर्दे पर फिर कुछ चित्र आए जिनके निकट तक मै गया था। चित्र एक से एक मनोहर थे। जीवन के अति निकट आकर लुप्त हुए वैसे ही पर्दे से मिट गए। एक चित्र अधिक समय पर ठहरा। बात भी हुई। पहले वह चित्र हँसने लगा मचलने लगा और फिर अट्ठखेलियाँ करने लगा। बडे वायदे किए। विवश होकर वह भी चला गया और फिर वही शून्यता अन्धकार और नैराश्य। आखो ने कुछ झपकी ली और पास मे खुद की आवाज से नींद उचट गई। बिल्ली पांव कर दूसरे कमरे में गई थी। कितनी बुभुक्षा है इसे! पेट की भूख! अरे यह सबसे बडी भूख है। भूख से ही दुनिया गति शील है। पेट ही पाप और पुण्य का स्रोत है। पेटो मे भी अन्तर है। किसी का पेट मोटा और किसी का छोटा। मोटा पेट मोटा पाप करता है और छोटे का शोषण करता है। समाज मे कितने कितने

महारथी श्राए। सबने अपनी अपनी फिलासफी रक्खी इस पट को खुमुक्षा के लिए, किन्तु सब हार गय। यह नापण जिन्दा है। गाधी जैसा देवतुल्य सन्त भी सतप्त था। नेहरू भी इस ताप को नहीं जला सका। हार कर चला गया बेचारा। उसकी मौत हार की मौत थी। उसका भी एक स्वप्न था। वह स्वप्न पूरा नही हो सका। वह उलझ गया और मर गया। भगवान् की विचित्रता मनुष्य की नविन म पर हैं। लनिन और मावस भी अपना स्वप्न रख गए। पूरा नही हो सका उसक चेलो से। केवल साम्यवाद की डीग हाकत है य। इन्सान की इन्सानियत को फल के पुर्जों म ढालकर विश्व क बाजार म ढोल पीटते हैं। ढाल का स्वर बिगड चुका है। किसी और मावस और गाधी की प्रतिक्षा मे है यह मानव जाति। बहुत श्रायेंगे और अपनी ढफली बजाकर चले जायेंगे। भगवान् की सृष्टि यथावत् बनी रहगी।

फिर भी नीद नही आई। विश्व-कल्याण का चितन करने वाला को कभी नीद नही आई। मन म शाति नही तो विश्व के मन में शान्ति कहा? लो यह सुधा का चित्र आ गया। मधुप से प्यार करती थी, दिनेश के घर म आ गई। मधुप को अधिकार नही था समाज क नियम के अनुसार किसी स प्यार करन का इसलिए प्रेम की भिखारिन को दिनेश के गल म बाध दिया। मन क प्यार और समाज के प्यार म इतना अन्तर! समाज ने श्रय पर तो नियन्त्रण कर ही रक्खा है मन पर भी नियन्त्रण है। इधर पुष्पा हाथ धोकर रह गई। नय राज की नइ व्यवस्था ने इसका दिनेश छीन लिया। दिनेश पुष्पा का रोता है सुधा मधुप को और पुष्पा? यह दिनेश को अवश्य रोती होगी।

अति निकट आने वाली साथी । प्रेम, मा बाप का प्रेम, भाई -
और साथियो का प्रेम । कितना विशाल हृदय होता है मा
की चरम सीमा है मा ! मा के प्रेम की समता इतिहास की
नही दे सकी । मा नारी का उत्कृष रूप है । यौवन की नारी
विषमता के कारण ही कुछ आदर्श बन कर जीवित रह गई है
व्यक्ति पर आ गया और आकाश अधिक शून्य हो गया । तार
से ओझल होने लगे । अडिग ध्रुव को देखने लगा । अडिग प्रम
तुम अटल हो, अमर हो ।

बिस्तर पर शरीर को इधर उधर लुढकाने पर भा
आई । आखें बन्द कर फिर प्रयास करने लगा । विचारो का ि
बन गया । मन स्थिति कुछ विचित्र सी बन गई । दिमाग क
फिर कुछ चित्र आए जिनके निकट तक मे गया था । चित्र ए
मनोहर थे । जीवन के अति निकट आकर लुप्त हुए वस हो प
गए । एक चित्र अधिक समय पर ठहरा । बात भी हुई । पहले
हँसने लगा, मचलने लगा और फिर अट्ठखेलिया करने लगा । ब
किए । विवश होकर वह भी चला गया और फिर वही शून्यता
और नराश्य । आखो ने कुछ झपका ली और पास म खुद व
से नीद उचट गई । बिल्ली फाद कर दूसरे कोने म गई थ
बुभुक्षा है इस ! पेट की भूख ! अरे यह सबसे बडी भूख है
दुनिया गति शील है । पट ही पाप और पुण्य का स्रोत है ।
अन्तर है । किसी का पेट मोटा और किसी का छोटा । मो
पाप करता है और छोटे का शोषण करता है । समाज म

साधारण भोंकों से शान्त नही होगा। इस बडवानल को मलयानिल शीतल नही कर सकेगी। ममत्व तुम्हें मिला नही नही मिला और न मिलेगा पुष्पा। वह सो गई होगी। उसको नींद नही आई होगी और मुझे भी नही आई।

प्रभात के पक्षियो के कलरव से पूर्व ही मैं घर से निकल गया। दूर क्षितिज के आसपास अलगोजा की रागिनी हृदय को खींचने लगी। सडक के एक ओर एक धोरे पर बैठकर उस राग का रसपान करने लगा। मैं इतना तन्मय हो गया था कि मैं जीवन भर इसी स्वर में लीन हो जाऊँ। तम का आधिपत्य अभी दूर नही हुआ था। अलगोजा का स्वर अचानक बन्द हो गया और मेरा मन फिर चलायमान होने लगा। वातावरण में वातायनो से एक हो चित्र कई रूपों में भासने लगा। पुष्पा निशा की पुष्पा और फिर नग्न पुष्पा? फिर निशा की सुधा या मधुप की मुधा अखण्ड सुधा। इतने में एक मधुर गीत दूर से कानों में आने लगा मूमल हालो मा पधारो म्हार देश (मूमल चलो हमारे देश आओ) कितना माधुर्य था इस गीत में। मैं फिर झूमने लगा। पूर्वाकाश से आभा फूटने लगी। खट खट करता एक घोडे पर एक सवार नजर आया दूर से स्पष्ट नही देख सका। समीप आने पर मुझे खडे होकर नमस्कार करना पडा। सरपच पतराम था यह।

घोडा ठहर गया। पतराम ने उपालम्भ के स्वर मे कहा, प्रकाशजी, कई महीनो से मिले हो नही। क्या बात है? नाराज हो क्या?'

समय ही नही मिलता। और क्या कहता?

आखो ने फिर झपकी ली। सट कौन ? मन म पुकारा। मुह से आवाज नही निकली था।

यह क्या ? प्रत्यक्ष रूप से पुराना चित्र नया रूप लकर आ गया। मैं पहले नही समझ सका। हृदय की धडकन बढ गई। शरीर श्रमकणो से भीगन लगा। वस्त्र विहीन नारी चेहरे पर केवल बालो का बिखराव और चोटी स एडी तक केवल नग्न रूप। नग्न सौदय मृत्यु का आह्वान लेकर आ गया क्या ? भय स विस्फारित हो गई मरी आख। मन म सोचने लगा यह कौन है। मुह से आवाज नही निकल सकी। नारी बोली आग आग पानी पानी। इस आवाज से कुछ ढाढस मिला। यह पुष्पा थी। पुष्पा तुम नग्न निरावरण ? इस विचार से हृदय आलोडित होने लगा। चार की तरह दबा हुआ सीना नही था किंतु डाकू की तरह सीना तान थी। आखें जलती हुई नजर आई। आक्रोश और वितृष्णा का मूत्त रूप था वह। कितना भयावह था वह नारी का नग्न रूप। मेरा आँखो को विश्वास नही हुआ। स्वप्न का प्रत्यक्ष देखने म असमथ था म। मन अपने मुह को आवत कर लिया। इस हलचल स पुष्पा उ ही परो स वापिस लौट गई।

मनाविकारा का एक तरगित प्रवाह मस्तक म पूरे वग से दौडने लगा। पुष्पा का नारीत्व। कली विकसित हात ही आधी क झकोरा स गिर गई और कुचल दी गई एक बूट खूसट वल क खुर स। आलाकित करने वाला मातृत्व नही मिल सका। तुम बचन विकल विह्वल हा। रात्रि क तमावत्त कालाहल विहीन शातलता स अपने विकल हृदय का शात करन क लिए निकल पडी हा। अशात सागर का यह वभावात रूप

साधारण भोज से मान न होगा। इस बडवाग्नि को मलयानिल शीतल नहीं कर सकती। ममत्त्व तुम्हें मिला नहीं नहीं मिला और न मिलेगा पुष्पा। वह सो गई होगी। उसको नींद नहीं आई होगी और मुझे भी नहीं आई।

प्रभात के पक्षियों के कलरव से पूर्व ही मैं घर से निकल गया। दूर क्षितिज के आसपास अलगोजों की रागिनी हृदय को खींचने लगी। सड़क के एक ओर एक धोरे पर बैठकर उस राग का रसपान करने लगा। मैं इतना तन्मय हो गया था कि मैं जीवन भर इसी स्वर में लीन हो जाऊँ। तम का आधिपत्य अभी दूर नहीं हुआ था। अलगोजों का स्वर अचानक बन्द हो गया और मेरा मन फिर चलायमान होने लगा। वातावरण के वातायनों से एक ही चित्र कई रूपों में झाँकने लगा। पुष्पा, निर्मेश की पुष्पा और फिर मग्न पुष्पा? फिर निर्मेश की सुधा या मधुप की सुधा अरहड़ सुधा। इतने में एक मधुर गीत दूर से कानों में आने लगा, सूमल थारो सा, पधारो म्हार देस (सूमल थारो हमारे देश आओ) कितना माधुर्य था इस गीत में। मैं फिर झूमने लगा। पूर्वाकाश से आभा फूटने लगी। खट खट करता एक धोड़े पर एक सवार नजर आया दूर से स्पष्ट नहीं देख सका। समीप आने पर मुझे खड़े होकर नमस्कार करना पड़ा। सरपंच पतराम था यह।

घोड़ा ठहर गया। पतराम ने उपालम्भ के स्वर में कहा, प्रकाशजी कई महीनों से मिले ही नहीं। क्या बात है? नाराज हो क्या?'

समय ही नहीं मिलता।' और क्या कहता?

आओ कोठी चलें। कहकर पतराम घोड़े से नीचे उतर गया। पतराम और मैं दोनों पैदल साथ चल पड़े। जाते ही चाय का आदेश देकर पतराम बात करने के मूड में मेरे सामने बैठ गया। पतराम ने बैठते ही कहा आप शायद मेरे से नाराज होंगे या यह कहूँ की मेरे सम्बन्ध में आपके विचार अच्छे नहीं होंगे।

मैंने इतना ही कहा नहीं तो।

प्रकाशजी, पतराम बोला जनतन्त्र समूह का ज्योतिपुंज है। व्यक्ति का अस्तित्व समूह के साथ है। जनतन्त्र का व्यक्ति स्वयं में मूल्यवान है। मैं सरपंच हूँ। सरपंच व्यक्ति रूप में महत्वहीन है। सरपंच एक समुदाय है जिसमें अपने साथियों का सहयोगी स्वर है। समुदाय की इच्छा ही सरपंच की इच्छा है। सरपंच दोषी है तो उसका समुदाय दोषी है। मैं फौज का सेनापति नहीं हूँ मेरा नेतृत्व तो उस ग्वाले के समान है जो पीछे रहता है।

पतराम क्या कहना चाहता था मैं इस बात से किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँचा। मेरे मन में एक प्रश्न पैदा हो गया। मैंने पूछा आप अपने अनुभव के आधार पर बतायें कि चुनाव में कौनसा बल अधिक महत्वपूर्ण है?

पतराम कई चुनाव लड़ चुका था। मेरा प्रश्न उसके मन की बात पूछनी थी। वह बोला आज का मतदाता इतना अपरिपक्व है कि उसको किसी भी प्रवाह में बहाया जा सकता है। भले और बुरे की पहचान नहीं है। जिन क्षेत्रों में कांग्रेस ने कार्य किया वहाँ वह बुरी तरह परास्त हुई और जहाँ कार्य बिल्कुल नहीं हुआ वहाँ वह जीत गई। मैंने अपने प्रथम

सरपंच काल में निमाए में मन लगाकर काम किया। मेरे पर अनेकों लाछन लगे और मैं बुरी तरह परास्त हुआ। राजनीति, छल, कपट और धोखे के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।

दिनेश की मा ने भी चाय रखते हुए मेरे आगमन पर आश्चर्य प्रकट किया आज सूरज किधर उगेगा ?'

ऐसी क्या विशेष बात होगई ? मैंने पूछा।

मैंने तो सुना है कि दिनेश के पक्के दोस्त हो, फिर हमसे नाराजगी क्यों ? वह बोली।

पतराम भी बीच में बोल गया, 'जरूरी थोड़ा ही है कि बेटे का दोस्त बाप का भी दोस्त हो। आज भी पकड़ कर लाया हूँ।'

अपने आप ही आए।' वह बोली 'कौन बूढ़ी मा को सम्हालता है ? कभी उसे भी पकड़ कर लाओ न।'

'दिनेश कभी आता ही नहीं क्या ? मेरा प्रश्न था।

'वह तुम्हारा ही तो दोस्त है। तुम आओ तो वह आए।' पतराम का उत्तर था।

'अबकी बार मैं लाऊँगा पकड़कर। आता कैसे नहीं ? मैंने अपनी ओर से बात समाप्त कर दी।

ब्याह के बाद बेटा बहू का होता है, बेटा।' दिनेश की माँ बोली।

उसमें भी तो नहीं बनती उसकी।' पतराम ने कहा।

फिर पतराम ने दिनेश और सुधा के सम्बन्धों के बारे में विवरण के साथ कहा। पतराम के इस कथन से इन बातों का अन्त हो गया, 'वह

मेरे चारा आर श्यौलाग के अस्तित्व का घरा था इसलिए पतराम का चेहरा भी मेर सामने स्पष्ट था। इस धुँधलपन म उसकी निमन्त्रा भी दाग की तरह दिखाई द रही थी।

पतराम स भी मैं भारी मन लकर उठा रास्ते की लम्बाई भर विचारा की गुत्थियां न ग्रन्थी कर दी और उस प्रवाह म दिनेश के घर चला गया। मैंने देखा कि दिनेश अकेला ही एक टूटी खाट पर पडा एक तिनके स जमीन पर उल्टा माधी रखायें खीच रहा था। मकान के सभी दरवाजे खुले पडे थे। 'आइये कहकर दिनेश ने मेरे आगमन का स्वागत किया। म बठ गया किन्तु दिनेश वैस ही लेटा रहा। मैंने पूछा, आज ऐसे कैसे ?'

एकाकी जीवन भर एकाकी। दिनेश ने कहा और उसकी आँखें छलछला आई।

दिनेश का साथ आशा की राह स बिखरने लगा। उसका गला भर गया और वाणी अवरुद्ध हो गई। मन बात पूछन क लिए सात्वना क कुछ म त पू क। दिनेश न आव पाछ नो। उसका गला साफ हो गया। वह कहने लगा आज सुधा चली गई अपने पीहर। वह जाने वाली ता नहीं था तुमने कुछ बुरा भला कहा होगा। म बोला।

म क्या बोलता ? साधारण सी बात का था राजाना का तरह। कल उस कवि क बच्चे का फिर पत्र आ गया। दमन कहा।

सुधा कुछ लिखती विखती है। इस सम्बन्ध म पत्र डाल दिया होगा। मने कहा।

'वह हराम की बच्ची उसका पत्र लिखती होगी तभी तो वह डालता है। वह बोला।

मैंने फिर समझाया, सुधा की पुस्तक प्रेस मे गई है। इस सबंध में उसने कुछ लिखा होगा।'

दिनश फिर आवेश म आकर कहने लगा 'मुझे पसद नही यह कविता वविता। मैं सौ बार उसे कह चुका हूँ। उसने तो मेरा मजाक बना रखा है।'

मैंन धैयपूवक उसके आवेश पर छींट डालते हुए कहा 'भाई आखिर उसम प्रतिभा है। उसका उपयोग तो होना ही चाहिए।'

'उपयोग के अनेकों रास्ते हैं। वह फिर जोर से बोला जरुरी है कि दुनियाँ म प्रकाशन का सारा केन्द्रीयकरण उस मधुप के बच्चे के पास ही है।'

आखिर तुमने सुधा स क्या कहा कि वह चली गई।' मने पूछा। वह बोला 'मैंने साफ साफ कह दिया कि मेरे घर मे कोई स्थान नही है।'

'और वह चली गई ? मैंने पूछा।

'वह क्या करती ? उसने कहा।

'आपने उसे निकाल दिया। यो कहना चाहिए।' मने कहा।

तुमने और कुछ भी कहा होगा ? मने पूछा।

वह आवेश म बोला, मैंने कहा कि तेरे हाथ पर काट दूँगा यदि तू यहा रही तो।

'तुमने अच्छा नही किया, दिनेश। मने कहा, नारी का भी अपना व्यक्तित्व होता है। वह भी अपने व्यक्तित्व का विकास करना चाहती है। पुरुष को उसम बाधक नहीं

नारी का यह कतव्य है कि ५

के लिए। दिनेश अश्लील बोल गया।

'तुम्हे इस प्रकार का समन्वय करना चाहिए था जिससे उसका विकास भी चलता रहता और तुम्हारी प्रतिष्ठा को भी धक्का नही लगता। मैंने समझौतावादी बात की।

'मुझे यह सह अस्तित्व का सिद्धान्त पसन्द नही। उसने कहा। मुझे भी जोश आ गया। मैंने कहा 'तो तुम्हारा मतलब यह हुआ कि नारी पुरुष के कठोर नियन्त्रण म रहे और पुरुष उसको अपना खिलौना बनाकर खेलता रहे।

दिनेश कुछ ढीला पड गया। वह बोला, 'नही, ऐसी बात तो नही का मेरा प्रकाश। गुस्सा क्यो करते हो? तुम्हारे सामने क्या मने उसे समझाया नही? क्या मैंने कम सहन किया है? वह बात बात मे रौब डालती है। यहाँ तो रुखे सूखे टुकडे है। खाओ और मौज करो। इज्जत से घर मे रहो।

खैर छोडो वह गई हा। झक मार कर तुम ही लाओगे।' मने कहा।

वह फिर रौब भरे शब्दो म बोला, अपने आप कभी नही जायेंगे। मुझे उसकी परवाह नही। रोटी बनायग और खायेंगे।

अच्छा बाबा मत लाना। अब ता छोडो। हो गया।' मने कहा।

मैं उसी रूप म दिनेश को छोडकर आ गया। मुझे दिनेश और सुधा के झगडे म विशेष सार नजर नही आया। म घर आया तो माजी बहुत प्रसन्न थी। उसने जोर स आवाज दी, प्रकाश आज तो रामसिंह आ

गया है। एक महीने की छुट्टी है। माजी को मैंने बधाई दी और खाना खाकर निश्चिन्त सा हो गया।

रात की नींद थी और कुछ थका हुआ भी था इसलिए नींद आ गई।

चिड़िया ने कोलाहल से मुझे जगा दिया। मेरे कमरे में चिड़िया ने कई नीड़ निर्मित कर रखे थे। वे दिन भर चरचराहट करती थीं। मैंने कई बार तंग आकर उनको भगाने के लिए एक कपड़े की गेंद बना रखी थी और रस्सी को छत के कड़े में बांध रखा था और उसी के द्वारा उनको भगाने का प्रयास किया करता था। कभी कभी उन पर सहानुभूति और दया के भाव भी उमड़ पड़ते थे इसलिए वे मेरी दुर्बलता का पूरा लाभ उठाती थीं। मैं इनकी दुनियां को गौर से देखता भी था। इनकी प्रकृति का मानवीय प्रकृति से तुलनात्मक अध्ययन भी कर लिया करता था। इनका भी एक समाज है। मानव की तरह इनके भी नियम हैं। ये अपने बनाये नियमों का उल्लंघन भी करते हैं। इनको न्याय के लिए कोई न्यायालय नहीं है फिर भी इनकी समस्याओं का समाधान भी होता है। आज भी एक झगड़ा था जिसने मुझे नींद से जगाया। एक मादा पर दो नरों का झगड़ा था। दोनों में मल्लयुद्ध हो रहा था। आखिर मादा का निर्णय भी हो गया। एक नर को वह मादा मिल गई। दूसरे नर ने अपनी हार स्वीकार कर ली क्योंकि मादा उसके पास नहीं थी। वह परास्त होकर उड़ गया। प्रेम पक्षी में भी विद्यमान है और अन्तिम विजय प्रेम की ही होती है। इसके विपरीत मनुष्य ने प्रकृति के नियम बदल कर अपने ही ढंग से नियम बना रखे हैं। यह अनन्त बार का गर्वोदार मान कर गाये

इतिहास के अनुभवों की उपेक्षा करता आ रहा है और हिंसा और प्रतिशोध के खूनी खेल करने मे लगा हुआ है। क्या आज का पशु इस मानव से अधिक समझदार नही ?

मैंने अपनी छत की ओर दृष्टि डाली। सभी युगल अपने निर्माण कार्य म लगे थे। मैंने स्टोव सिलगा कर चाय बनाकर पी और एकांत म सभी तरह के दृश्य देखता हुआ मन रंजित करता रहा।

२०

रामसिंह का पुष्ट शरीर देखकर मैं प्रफुल्लित हो गया। उसके रंग रूप में भी अन्तर आ गया था। जब वह घर में मिलने आया तो अति प्रसन्न था। मैंने उसको उसकी नौकरी पर बधाई दी और स्वास्थ्य निर्माण पर कुछ प्रश्न किया। इस पर रामसिंह ने अपने सैनिक स्वभाव से सारी दिनचर्या का विवरण दिया। उसके वर्णन में नियमित जीवन तथा अच्छे खानपान की प्रशंसा थी। बातों ही बातों में चीन और पाकिस्तान के आक्रमण का भी जिक्र आ गया। मैंने कहा, हम अखबार में पढ़ते हैं कि भारत की सेना का मनोबल बहुत ऊंचा है। रामसिंह ने कहा, हम लोगों का दिल बड़ा मजबूत है। हम तो चाहते कि हमें एक बार आदेश मिल जाय, फिर देखो हमारी हिम्मत। दुश्मन को चार कर फाड़ देवें। मैंने कहा, हमने तो सुना है कि हमारे पास बड़े पुराने हथियार और पुरानी ट्रेनिंग है।

रामसिंह ने उत्तर दिया वे दिन गए। अब तो हम पूर्ण रूप से सुसज्जित हैं। पाकिस्तान तो हमारी आंखों में डरता है। मैं आजकल कश्मीर में लगा हुआ हूँ। पाकिस्तान की फौज उधर खड़ी हुई जरूर

है किन्तु एसा मालूम होता है कि उनका शरीर ही जिन्दा है हृदय टूटा हुआ है । कमी केवल हमारे नेताओं की है कि हमें आक्रमण का आदेश देते ही नहीं । डिफेन्स' की गोलियाँ चलाते हैं ।'

मैंने कहा नेताओं की नीति खराब नहीं है, रामसिंह । युद्ध की विभीषिका बड़ी भयंकर है । हम और हमारे साथी आदेशों में बात करते हैं । ये बातें बहुत सोच समझ कर करने की । आज भारत, चीन और पाकिस्तान तथा अन्य पड़ोसी देश बहुत पिछड़े हुए देश हैं । अभी समस्त एशिया युद्ध करने की स्थिति में नहीं है हम अभी अपने निर्माण और विकास में लगे हैं । चीन की छेड़छाड़ उसकी भयंकर भूल थी । एक ओर उसको भी अपनी आर्थिक स्थिति को दृढ़ करने का प्रश्न है और दूसरी अपने सिद्धान्तों को फैलाने की चिन्ता । वह दोनों ही दृष्टियों से घाटे में रहा । पाकिस्तान और भारत के सामने भी अपनी जनता के लिए रोटी और रोजी का प्रश्न है । यदि ये तीनों देश युद्ध में उलझ जायें तो जो कुछ उन्होंने पाया है उसको पुनः प्राप्त करने के लिए कई दशक और बीत जायें । आज भी तीनों देशों का अपनी सुरक्षा के लिए अरबों का खर्चा है और उसका कोई उपयोग वास्तविक उत्पादन में नहीं है ।'

सैनिक प्रवृत्ति का व्यक्ति मेरी दलील से प्रभावित नहीं हुआ । युद्ध के दुष्परिणामों की कहानियाँ इनको नहीं सुनाई जातीं । विधवाओं का क्रन्दन, अनाथों के आंसू, लूले लंगड़ों की विवशता और इसके साथ युगों से अर्जित संस्कृति का विनाश एक अपरिमित धनराशि और अरबों की जन-हानि से द्रवीभूत होने की गाथायें इनके शिक्षण में नहीं होतीं । प्रेरणादायक साहित्य की इनको हमने हँसते मौत की ज्वाला में गिरने की

आह्वान करता है। रामसिंह ने उसी प्रवाह म अपनी प्रशिक्षण की बातें, अपने साथियो की कथाय और मोर्चे पर घटित होन वाली घटनाओ का विशेष विवरण था। इतने म बाहर कुछ हल चल दिखाई दी। हमने खिडकी से देखा कि तिवारी के काय म सलग्न सभी कारीगर एव मजदूर एक स्थान पर एकत्रित थे। रामसिंह भी यह दृश्य देखने वहा चला गया। रामसिंह न पुन आकर मुझे सूचना दी कि स्टे आडर लेकर चपरासी आया था। पचायत का आदेश था। श्यौलाल ने आदेश लेकर उसे फाड कर फेंक दिया। चपरासी को भी खरी खोटी सुना दी। दिन भर काय पूववत् चलता रहा।

रात्रि को श्यौलाल ने अपने साथियो से गोपनीय मत्रणा की जिसका भेद मुझे नही मिल सका। माजी काय मे निवत्त होकर समय काटन की नियत से मेरे पास आ गई और बठते ही बाली बेटा, समय कितना खराब है?'

मने कहा माँजी, कैसे?

माजी ने अपने उस समय की बात की जब गढ़ म ठाकुरशाही और किलो मे राजशाही थी और किसाना के घरा म जूशाही और गुण्ड शाही थी किन्तु ससार म सबसे मीठी अतीत की स्मृतियां होता है। मैं माँजी का ताप कसे देता? माजी का असली रोष तो आज की घटना पर था। मैंने मजाक म माजी स पूछा माजी एक तरफ देश का प्रधान मत्री और दूसरी आर अपन राजाजी खडे हो तो वोट किसको दगे।

माजी ने भट से कहा अपन राजाजी को बेटा राजा के राज म बडा सुख था।

कैसा सुख था, माँजी ? मने पूछा।

'बडा तप था गजा का बटा। माजो बोली, पतराम जसे ऐरोगरा की थोडा ही चलती थी। मर्जी आई जैसे कलम रगड दी और काम बन्द करने आ गए। उनके बाप की जमीन है। बरसा स हम सब का कब्जा है उस पर।'

शांति ने बीच ही म आकर दो चार उल्टी सीधी गालिया पतराम और उसके परिवार को निकाल डाला। दोनो उठकर चली गई।

दूसरे दिन दोपहर का म दिनेश के यहाँ चला गया। दिनेश उल्टा मुँह किए एक पलग पर पडा था। सारा घर कूडा ककट से भरा पडा था शायद सुधा क जाने क बाद कमरे म झाड़ू ही नही लगी थी। कुर्सी मज, सभी अपने उचित पदा म अपदस्थ थ। कुर्सी की गद्दी ने दिनेश के तकिय का स्थान ले रक्खा था। कुत्ता का आवागमन निर्विघ्न और सरल था। व स्वच्छदता स घूम रह थ। मरे पैरा की आहट स दिनेश की तन्द्रा भग हा गई और वह अपनी आखा को मसल कर उठ बठा। मैंने पूछा घर का यह क्या हाल है ? सुधा के बाद झाड़ू ही नही निकली।

निकाल लग यार दिनेश बाला अभी क्या जल्दी है ? आज लडको का बुलाया है। व आकर निकाल देंगे।

मैंने कहा, यह ठीक रही। खाना पीना ता कर लिया होगा। वह बोला आज तो भूख ही नही थी। शाम को बनायेगे कल शाम को घर आकर खा लिया था।

'घर तो चोरों का ही है यार तुम सुना तो। मैंने कहा, सुधा थी तो प्यार न था। अब तो आपकी पूरी पूरी रानियाँ हों तमाम नहीं होगी।

'उसका तो नाम ही मत लो। उसने कहा 'घर में शान्ति तो है। वहाँ तो रात दिन बक बक झक झक रहता था।'

मैंने कहा 'रहने दो भाई। कमरे पर झाड़ू पड़ा हुई है। दो दिन से पट में खिड़कियाँ खिलखिला रही हैं। कमरे का सामान चला गई है। घर धूल से भरा पड़ा है। तुम्हारा ही रहा क्या आपका और मेरा घर क्या?'

'रहने दो यार इस बात को तो। दिनेश ने कहा मैं आपके लिए चाय बनाता हूँ लेकिन दूध नहीं है। अच्छा आप ठहरो तो दूध ले आऊँ।

मैंने कहा अच्छा मैं स्टोव जलाता हूँ और तुम दूध ले आओ। आज 'सेल्फ सर्विस' होगी।

दिनेश दूध लाने चला गया। मैंने स्टोव उठाया। दो दिन से उस पर भी गर्द जमी थी। कुत्ता की चाटी हुई पतीला का मांज कर लाया और पानी ढूँढने लगा तो घर में कहीं पानी नहीं था। नेत्र को विनाश से बचाने के लिए पड़ोस से पानी माँगा और पानी चढ़ा दिया। ढूँढ कर चाय तो ले आया किन्तु चीनी नहीं मिली। इतने में दिनेश आ गया। मैंने कहा 'भाई सुधा के साथ आपके पास सुधा थी किन्तु अब जल भी नहीं।

दिनेश ने झेंप मिटाते हुए कहा हाँ हो पानी तो आज मंगाया

हाँ नही । आपने कैसे किया ?'

'पडोस से मांगना पडा क्या समझा होगा उन्होने ?' मैंने कहा ।

वह बोला 'समझना क्या है ? मैं दो दिन से पडोस से काम चला रहा हू । नई बात थोडे ही है । आज मगाने का विचार है ।'

चाय उफनने लगी । दूध डाल दिया । कुछ ही क्षणो के बाद चाय उतार ली गई । हम दो कपो मे चाय छान कर पीने को तैयार हुए । दिनेश ने घूँट लेते हुए कहा 'इसमे चीनी तो है ही नही ।'

मैंने कहा चीनी मैंने ढूढी थी । मिली नही । मैं पूछने वाला था लेकिन भूल गया ।' मैंने अपना उपालम्भ उतार दिया ।

दिनेश ने अन्दर जाकर चीनी की तलाश की । चीनी नही मिली । वह फिर भागा और बाजार से चीनी लाया । चाय का ताप शान्त होने से पूर्व ही चीनी आ पहुँची । चाय का स्वाद अटपटा था किन्तु प्रयास का फल मीठा था ।

चाय पीने के बाद साधारण सी बातें हुई । दिनेश और मैं दोनो ही साथ चल पड़े । हम दोनो एक गली को पार कर दूसरी गली में पहुँचे तो श्यामलाल के घर की ओर कोहराम सा सुनाई दिया । हम जल्दी जल्दी आगे बढे । तिवारी के पास एक अच्छा जमघट था । एक ओर श्यामलाल और रामसिंह खडे जोर जोर से बोल रहे थे और दूसरी ओर पतराम था उनके चारो ओर अच्छी खासी भीड थी । हमारा अनुमान था कि भीड और झगडे का कारण तिवारी के सम्बन्ध मे काम बन्द करो का आन्दोलन ही होगा जिसे श्यामलाल ने फाडकर फेंक दिया था । दिनेश ने यह दृश्य देखकर कदम तेजी से बढ़ाने शुरू किए । मैं भी उसी प्रकार पीछे चलने लगा । दिनेश

भीड़ में घुस गया। बात यहाँ तक बढ़ गई कि हाथा पाई की नौबत आ गई। औरतों की भी अपने अपने घरों के आगे भीड़ लग गई। औरतों की ओर से गालियों की भी बौछारें प्रारम्भ हो गई जो हर प्रकार से अश्लील थीं। माजी और पुष्पा भी घर से बाहर निकल आईं। माजी भी भीड़ में जा फंसी। उसके पीछे पुष्पा भी चली गई।

शिष्ट व्यक्ति अशिष्टता पर उतर चुके थे। क्रोध की भयानक अग्नि की ज्वाला ने मानवीय व्यवहार को ध्वस्त कर दिया था। कुछ लोग बीच बचाव में भी पड़े किन्तु पतराम और श्यामलाल दोनों द्वन्द्वयुद्ध में उलझ चुके थे। माजी की ओर से भी गालियों की भीषण वर्षा हो रही थी। शिक्षा से शासित किया हुआ दिनेश भी गर्म हो गया। उसने माजी की चोटी पकड़ ली। धड़ाम से गोली की आवाज आई। गोली दिनेश पर चली थी किन्तु पुष्पा का शरीर शिथिल होकर नीचे गिर गया। एक बार भयानक शांति छा गई और उसके एक क्षण उपरान्त पुष्पा के शरीर को गिरा हुआ देखकर क्रन्दनमय कोहराम शुरु हो गया। माजी पुष्पा पर धड़ाम से जा गिरी। पतराम और दिनेश नाटकीय ढंग से गायब हो गए। सबने रामसिंह की ओर देखा। गोली रामसिंह ने छोड़ी थी। रामसिंह कब अन्दर गया और कब बन्दूक लेकर बाहर आया यह किसी को भेद नहीं था। रामसिंह हक्का बक्का बन्दूक लिए खड़ा था। श्यामलाल ने झपटे से रामसिंह की बन्दूक छीना और उसे अन्दर ले गया। पुष्पा के चारों ओर पड़ौस के आदमी और औरतों की भीड़ लग गई। पुष्पा का शरीर अभी छटपटा रहा था। गोली छाती के पास लगी थी और शरीर के आर पार हो चुकी थी। कपड़े सारे लाही लुहान हो गए। भूमि पुष्पा का रक्त पीने

लगी ।

किसी ने तुरन्त डॉक्टर लाने की भी सम्मति दी। किन्तु कुछ छटपटाहट के बाद पुष्पा का शरीर शिथिल हो गया । घरा पर केवल पुष्पा का शिथिल पार्थिव शरीर था और प्राणो का पछी उड चुका था। पुष्पा गई सदा के लिए इस भौतिक ससार को छोडकर चली गई।

पुष्पा के मृत शरीर पर एक धवल आवरण डाल दिया गया। लाश स्थान से नही हिलाई गई। घर म कोहराम मच गया और उसके साथ एक आतक का वातावरण आच्छादित हो गया जिसका स्पष्ट रूप सबके सामने था। पुलिस के आने और लाश के पोस्टमार्टम मे श्यालाल की कार्यपटुता के कारण तीन चार घण्टे से अधिक नहीं लग सका। रामसिंह अपनी बन्दूक के साथ पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया। बूढे से लेकर एक बच्चे तक के चेहरा पर एक काली छाया आ गई। विषाद और वेदना का जो वातावरण इस घर मे व्याप्त था उसका वर्णन किसी कवि की लेखनी के वश का बात नहीं थी।

सभी के प्राण जैसे शून्य हो गए हैं। रोने की चिघाड धीरे धीरे सिसकियो म बदल चुकी थीं। सहानुभूति के लिए आने वाला औरतो से सामूहिक रोदन फिर पूववत् व्याप्त हो जाता और फिर घटना के विवरण का पुनरावत्ति हो जाती। सूर्यास्त से पहले पहले आसपास के सम्बधियो की भी भीड लग गई। श्योलाल पुलिस के साथ ही चला गया था। घर म समझदार पुरुषो मे केवल पुष्पा का बाप हरीराम था जो बार बार अन्दर आकर 'राम भज, राम भज' की ध्वनि के साथ सान्त्वना देकर पुन कमरे मे चला जाता। आने वाला की भीड के उपरान्त बूढे की

फुसत नही मिली । कुछ समय पश्चात ही पुष्पा की लाश घर में आ गई। फिर कोहराम मच गया। अर्थी अविलम्ब तैयार कर दी गई। दो घटे के पश्चात् पुष्पा का भौतिक शरीर भी राख हो गया।

पुष्पा की मृत्यु उस दिन घर घर की चर्चा थी। अनेकों विचार इस मौत को लेकर चले। कुछ लोगो के मत म पुष्पा को जान बूझकर गोली का निशाना बनाया गया क्योंकि घर वाल उससे तग थे। कुछ लोगो क विचार म गाली पतराम को मारी जा रही थी कि तु निशाना ठाक न होने पर पुष्पा के लग गई। वास्तविक स्थिति इससे भिन्न थी। रामसिंह दिनेश पर गोली चला रहा था और पुष्पा जान बूझकर इसक बीच आ गई। गोली चलाने के बाद रामसिंह गुमसुम होकर घर मे पडा रोता रहा और पुलिस के आत ही स्वय ही पेश हो गया। रामसिंह को फरार कराने की बात घर के किसी व्यक्ति के दिमाग म नही थी। रामसिंह पुलिस की हिरासत म आने तक मौन हा रहा।

सहानुभूति के लिए आने वालो मे उन लोगा की सख्या अधिक थी जो वास्तविक तथ्य की खोज में थे और इसीलिए उनक प्रश्न भी गोप पूर्ण होते थ। माजी ही उत्तर देने म अग्रगण्य थी इसलिए वह यह कहकर ही टाल देती थी तकदीर हमारी मारी है कि बहन गई और भाई गिरफ्तार हो गया।

पुष्पा की मृत्यु की रात्रि मेरे जीवन की भयानक रात्रियो म थी। इस शाम को किसी ने खाना नहीं खाया। घर के चूल्हे म आग सुलगी ही नहीं। अडोस पडोस म भी इस मौत का इतना विषादमय प्रभाव हुआ कि किसी घर ने रोटी नहीं पकाई। परम्परा क अनुसार कुछ निकट

के व्यक्तियो के घरो मे रोटियाँ आई किन्तु घर के कुत्ता ने भी रोटिया का नही छूआ। घरवालो का दद तो पिघल कर आँखो की राह बह रहा था किन्तु मेरा दद अन्दर ही अन्दर घुलने लगा। रात्रि के बारह, एक बजे तक घर वालो की सिसकिया बन्द नही हुई थी। उसके बाद सभी ने सोने का चेष्टा की। इस धधकती आग मे शीतल वायु भी शोले बरसा रही थी। ढलती रात निस्तब्धता भूत सी भयावही लगने लगी। पुष्पा की तस्वीर मेरी आँखो से ओझल नही हो रही थी। समस्त वायुमडल पुष्पामय बन गया। मृतपुष्पा का भूतरूप मेरे सम्मुख आने लगा। और म अपनी खाट उठाकर दरवाजे के बाहर आ गया। बूढा हरीराम और हरीसिंह भी वही सो रहे थे। मै बूढे की खटिया के पास खाट डालकर लेट गया। बूढे ने लेटे लेटे ही कहा

'कौन ? प्रकाश।'

'हाँ, बाबा।' मने कहा।

'नीद नहीं आई, बेटा ?' बाबा ने कहा।

'नहीं, बाबा' मैंने कहा।

'नीद नही आएगी बेटा, नीद ले गई पुष्पा। रामसिंह ने यह क्या किया।' बाबा ने कहा।

भावी प्रबल है, बाबाजी। किसी का कसूर नही।' म बोला।

बाबा बोला हाँ बेटा, भावी प्रबल है।' यह कहकर उसने एक लम्बी सास खींची और अपने स्वभाव के अनुसार वही राम भज की रट लगाई।

मैंने कहा नीद ले लो, बाबा।'

'नीद नही आएगी, बेटा ।' बाबा बोला, नीद ले ली जितनी लेनी थी । मेरा बुढ़ापा खराब होना था सो हो गया । मुझे भगवान् पहले ही उठा लेता तो ये दिन देखने नही पड़ते ।' बाबा ने सिसकियाँ भरनी शुरू कर दी ।

आसमान के तारे भी रो रहे थे । बहती हुई वायु सिसक रही थी । दूर कुत्ते कराह रहे थे । कितना डरावना रूप था इस रात्रि का । जीवन इस प्रकार की पीड़ा लेकर आता है तो इस संसार से विरक्ति हो जाती है । सभी निरर्थक हैं, बेकार है निस्सार है । यह भाग दौड़ किसके लिए है ? किसलिए है ? क्या है ?

२१

विचारा क मथन के उपरान्त जनमत सही निर्णय ले चुका था। पुष्पा ने दिनेश का बचाने के लिए अपना जीवनोत्सग कर दिया। पुष्पा और दिनेश की कहानियाँ भी साथ ही चलने लगी। धनराम के हृदय मे प्रतिशोध का भावना धधकने लगी। तिवारी का काय तो स्वत बन्द हो गया। दयालाल मुकद्दमे के चक्कर म भाग दौड करने लगा। रामसिंह पर भारतीय कानून के अन्तगत धारा ३०२ लागू हुई। दयालाल चाहता था कि मुकद्दमे की जड कमजोर कर दी जाय और यह तभी सम्भव था जब कि पुलिस इसमे पूरी महायता करे। दयोलाल अपने सरपच काल म अपने निकटवर्ती गावा म अच्छा प्रभाव जमा चुका था। पुलिस विभाग के बडे बडे अधिकारी उसके घर आया जाया करत थे। उसने कई अभियोगो म पुलिस की सहायता भी की थी। दयोलाल को पूरा विश्वास था कि महान् सकट म पुलिस की सहानुभूति उस मिलेगी।

पुलिस का सब इन्सपक्टर दयालाल से परिचित था। वह इसी थाने म पहले हैड कान्सटेबल पद पर रह चुका था। इस परिचय का अब तक एक ही लाभ मिला कि कारागृह म खाना रामसिंह की रुचि के अनुकूल पहुँचने

एगा । इन बातों का ज्ञान मुझे पहले घर वालों से ही हो गया था किन्तु
दयोलाल ने रात को अपने वार्तालाप म इनकी पुष्टि कर दी ।

दूसरे दिन दयोलाल से फिर बात चीत हुई । प्रश्न मेरा था क्या
पुलिस स्थिति को सुधारने का प्रयत्न कर रही है ?

दयोलाल ने कहा 'मैं इस सम्बन्ध म पूरी कोशिश म हूँ किन्तु
पतराम हमारे विरोध म बुरा तरह से लगा हुआ है ।

आपने अपने प्रयत्न म कितना कर लिया है मैने पूछा ।

'गाँव का कोई आदमी सबूत नहो बन रहा । पतराम दिनेश को
तैयार कर रहा है । दयोलाल ने कहा ।

क्या पतराम की पार्टी भी तयार नही है । मैंने पूछा ।

'इससे पतराम की पार्टी का क्या नुकसान हुआ ? दयोलाल
बोला, यह मामला तो पतराम का व्यक्तिगत बन गया ।

'पुलिस ने आपको क्या आश्वासन दिया ? मने पूछा । दयोलाल
ने कहा, यहाँ केवल एक ही प्रश्न है जो अडा हुआ है । पतराम पुलिस का
जोर दे रहा है कि वह गवाह स्वय तयार करे । वहाँ दिनेश की भी आव
श्यकता नही पडेगी । किन्तु पुलिस गवाह तयार क्यो करे ? यह सब कुछ
आर्थिक प्रलोभन पर निभर रहेगा । मैंने यह भी सुना है कि पतराम पाच
हजार रुपये देने को तयार है । सब इ सपक्टर के एजेंट ने मेरे से दस हजार
रुपये मागे है । मेरी आत्मा भ्रष्टाचार के लिए साक्षी नही देती ।

मैं भी चिन्ता में पड गया । दयोलाल मेरी सम्मति की अपेक्षा
करने लगा । मैंने कुछ विचार करके कहा भ्रष्टाचार के युग म आप
इससे अलग रह कर जीवित कस रहगे ?' दयोलाल ने विश्वास पूवक

प्रेमलता

यहा में एम० एल० ए० साहब की मारफत जाऊँगा। वे मेरे निकट के आदमी हैं।

मैंने दयालाल के मत को स्वीकार कर लिया। दयोलाल हे भगवान' कह कर उठ गया। इस हे भगवान में एक प्रतिध्वनि थी जो उसकी विवशता की द्योतक थी।

तारा की धुंधली छाया में मैं दिनेश के यहाँ पहुँचा। दिनेश लाल टेन के प्रकाश में सरकारी फाइलों को टटोल रहा था। कुर्सी पर बैठते ही मैंने कहा, खाना पीना कर लिया है या बिना भोजन भजन कर रहे हो ? दिनेश फाइल के पन्ने से ध्यान हटा कर बोला आजकल तो घर वालों को बड़ी गरज है।'

तो बड़ी सेवा होती होगी ? मैंने पूछा।

खाना यहीं आ जाता है नौकर के साथ, दिनेश बोला।

'अब तो सुधा को भूल गए हो है न ? मैंने कहा।

'आज तो सुधा का पत्र आया है दिनेश बोला।

'क्या लिखा है उसने ? मैंने पूछा।

लीजिए, पत्र भी पढ़ लीजिए। आपसे क्या छिपाना है।

दिनेश ने यह कह कर सुधा का पत्र आगे कर दिया।

खुले लिफाफे से पत्र निकाल कर मैंने पढ़ना शुरू किया। पत्र इस प्रकार था —

— ——

दि० — ।

मेरे प्राणनाथ

चरणस्पर्श !

प्रेमलता

मैं जब से आप से बिछुड़कर आया हूँ मेरा चित्त बड़ा बेचैन रहता है। दिन भर उदास पड़ी रहती हूँ। न तो काम करने को दिल करता है और न पढ़ने लिखने को। रात्रि को आपके विरह में नभ के तारे गिनती रहती हूँ। अब सोचती हूँ कि मैं आप से क्यों लड़ी ? किन्तु वह समय ही ऐसा था कि सावन के साथ मैं भी उत्तेजना में बह गई। सामीप्य में जितना आपका प्यार कम था उतना ही अब बढ़ गया है। पिताजी और मासी जी मेरी उपेक्षा ही करते हैं। मैं अकेली यहाँ कितनी विकल हूँ इसका अनुमान आप इसी से लगा सकते हैं कि मेरे शरीर का भार पाँच पौण्ड कम हो गया है। शहर की चहल पहल मुझे खाने को दौड़ती है। प्लाजा थियेटर में सरगम पिक्चर आया। सभी ने इसकी तारीफ की। मुझे सहेलियों ने साथ ले जाने के लिए आग्रह भी किया किन्तु मैं नहीं गई। आज तक एक भी पिक्चर देखने नहीं गई।

मैं अपनी भूल को स्वीकार करती हूँ। आपको मधुप से चिढ़ है। मधुप मेरे लिए श्रद्धा का पात्र है। वह कवि एवं साहित्यकार है। वह मेरी कविता का गुरु है। उसने मेरा मार्गदर्शन किया और अब भी कर रहा है। आप उसके प्रति इस प्रकार के भाव न रखें जिससे मेरे नारीत्व पर किसी प्रकार की शंका हो। नारी हमेशा अपने पति की ही होती है। भारतीय नारी का आदर्श आपके सम्मुख है। आप मेरे पर किसी प्रकार से भी अविश्वास न करें। जब आप इस प्रसंग पर आते हैं, मेरी इच्छा होती है कि मैं आपको अपना हृदय चीर कर दिखा दूँ। आप उसमें आपकी ही तस्वीर पायेंगे। मेरे हृदयेश्वर, नारी अपने पति का परमेश्वर

तुल्य मानती है। मेरे दिल मे आप मेरे परमेश्वर है। किन्तु साथ रहने से पारस्परिक झगडे स्वाभाविक ही हैं। हरेक घर म ऐसी घटनायें होती ही है। मेरे पिता और मासी का भी इस प्रकार का झगडा रहता है। मेरे पिता कभी मांमी का नही निकालते। व दो तीन दिन तक कभी कभी नही बोलते। रोटी भी में ही पकाकर खिलाती हूं। मैं जब कभी बाहर चली जाती हूँ लौटने पर मुझे हँसत हुए मिलते हैं।

पिछले दिनों इस शहर म एक घटना हो गई तब से म और भी बेचैन हो गई। एक मुहल्ले म दम्पती म झगडा हो गया। स्त्री ने रात को पति का गला काट दिया और स्वय कुए मे गिर गई। उनके कोई बच्चा न था सुनने म इतना हो आया कि अकेले म रहा करते थे। उनके घर में दिन रात कलह थी। रात को पति ने उसको धमकाया कि वह उसका रात को साई हुई का गला काट देगा। पता नही औरत के दिमाग मे क्या उन्माद उठा कि वह सोये हुए पति का गला काटकर स्वय मौत के मुह मे चली गई। यह घटना सुनकर हृदय कापने लगा और आज तक मेरे हृदय को शान्ति नहीं मिली। इच्छा होती है कि उडकर आपके पास आ जाऊँ और गले म लगकर खूब रोऊ इतना रोऊँ कि आपका दिल पसीज जाये। मेरे सर्वेश्वर मेरे देवता, आप मुझे कैसे लगते है ? इस पर मैंने एक कविता भी लिखा है। म आपको सुनाना चाहती हूँ किन्तु आप मेरे निकट होते हुए भी बहुत दूर है। यदि विद्रोह की वेग अधिक लम्बी हुई तो मुझे भी कालिदास की तरह मेघदूत लिखना होगा। मेरे दुष्यन्त, मुझे शकुन्तला की तरह सताओ मत। मैं तो सीता की तरह वनवास म भी आपकी सेवा करना चाहती हू।

'आपको एक खुशखबरी और सुना दू । मुझे लिखते हुए शम आती है। अब अपने घर म भूला खरीदना होगा। फिर हमारे दिन और भी_मान * से गुजरेंगे । आप जब दफ्तर से लौटेंगे, मुना आपक जी को बहलायेगा। कि तु जब म खाना पकाऊँगी तब आपको उसे लेना होगा। बस, आठ महिने की देरी है। म आगा म निर्माण काय करना चाहती हू ।

मेरी इच्छा यही है कि आप आ जाय। मन पिताजी और मौसी जी को कुछ भी नही कहा है। मने तो यही बहाना बनाया है कि उनको फुसत न ी थी। मेरा आना आवश्यक था। पिताजी भी आपके आने की प्रतीक्षा मे है।

आप मुझे पत्र अवश्य लिखें कि आप कब तक पधार रहे है। अभी 'सगम चल रहा है। मेरी हार्दिक कामना है कि हम दोनो साथ साथ सगम देखें।

पत्र की प्रतीक्षा म

आपकी ही–

सुधा '

मैं पत्र को आद्योपात पढ गया । सुधा क सम्ब ध म अनेक विचार लाने स पूव दिनश का बधाई दा और उससे अनुरोध किया कि वह तुरत जाकर ले आए। दिनेश ने कहा म उसको लान क पक्ष म नही हू ।

दिनेश जिद्द नही किया करते है। मैंने कहा।

दिनेश बोला, 'तुम क्या जानो स्त्री की बात। तुम तो अभी

कुँवारे हो।'

मैंने कहा, 'स्त्री कोई दुनिया से निराली है।'

दिनेश ने कहा, 'स्त्री के सम्बन्ध में सुधा ने अपने पत्र मे लिख दिया है कि वह अपने पति का मार कर कुएं मे गिर गई। इससे बढिया सबूत आपको और सुधा को क्या मिलेगा ?'

पाचो अगुलिया तो बराबर नही होती। मैंने कहा, यदि ससार की सारी स्त्रियाँ ही ऐसी होती तो ससार कैसे बसता ?' दिनेश ने कहा, 'राजा भोज चौदह विद्याओ का पारगत होने पर भी त्रिया चरित्र को नहीं समझ सकता था।

मैंने कहा अरे यार इस बीसवी सदी मे कसे चौथी सदी की बात कर रहे हो ?'

दिनेश ने तब जोर देकर कहा भाई मेरे समाज बदल जाता है, राज बदल जाता है किन्तु मनुष्य की प्रकृति सभी युगा मे समान होती है। आज बीसवी सदी की स्त्री तो अधिक पेचीदा हो गई। यह तो मशीन का युग है। स्त्री का मशीन के कल पुर्जे इतने उलझ गए हैं कि समझ मे नही आते।

तुम ता वहमी हो यार मैंने कहा।

वहम नही है यह सही है। दिनेश बोला 'उपशा कर लो तो दूसरी बात है।

मैंने कहा, 'हम इतना गहनता म जायें ता जीवन दुष्कर हो जायगा। आज नारियाँ आदमी के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम कर रही हैं। किसी क्षेत्र म चले जाइये, आपको शिक्षित महिलायें आदमी के

गाल पाप करना सिखेंगे । क्या ये सभी युग हैं ?

उन्हें युग होने की सम्भावनायें हैं । दिनेश बोला हाँ आज कल बुराई की परिभाषा ही बदल गई घर की कलह तो मिट गयेगी किन्तु बुराई नहीं मिट सकती ।

मैंने कहा पाप पतन नारी का हो या पुरुष का हो किन्तु पुरुष की नतिकता स्त्री की नैतिकता की तुलना कितनी भिन्न स्तर की है, जरा विचार तो करें ।'

यह मैं मानता हूँ । दिनेश ने कहा, किन्तु स्त्री का प्रजनन का दायित्व है । वह मा बनने का अधिकार रखती है । मा संसार की सर्वोपरि सत्ता है । वह विकृत हो गई तो समाज विकृत हो जायगा और वही इस संसार में सर्वनाश का मार्ग बनेगा ।

दिनेश के कथन में बल था । मैं उसको अस्वीकार नहीं कर सकता था । मुझे दूसरे विषय पर आना पड़ा ।

मैंने कहा 'क्या पुष्पा ने तुम्हारे लिए अपना उत्सर्ग नहीं किया ?

दिनेश का मस्तक नत हो गया जैसे कि उस महान् देवी के बलिदान का भार वहन करने में असमर्थ हो । दिनेश के आँखों में पानी चमकने लगा । वह बोला संसार में शीरी फरहाद लैला मजनूँ हीर-राँझा की कहानियाँ प्रचलित हैं । इनमें नायिकाओं का बलिदान किसी भी स्थिति में पुष्पा से अधिक नहीं ठहरता । दीपक जलता है इसलिए पतंग जलता है किन्तु इस कहानी में दीपक बुझा हुआ था और पतंग जल कर मर गया । मैं नहीं समझ रहा था कि पुष्पा मुझे प्रेम करती थी । वह

पागल थी शारीरिक दृष्टि मे नही किन्तु मानसिक दृष्टि से । मने उसको नही समझा । किसी ने नही समझा । अब दुनिया समझ गई । मैं कुछ नही दे सका और न दे सकूँगा ।' यह कह कर दिनेश ने एक लम्बी सास ली ।

मने पूछा 'क्या तुम्हारे पिता इस मुकदमे म तुम्हे भी घसीट रहे है ?

'प्रयत्न तो यही हो रहा है किन्तु म इस पाप का भागी नही बन सकता । दिनेश बोला ।

सत्य को सत्य कहना पाप है । मने मन की बात जानने की नियत से पूछा ।

दिनेश ने दृढ़ पूर्वक कहा सत्य से किसी का अनर्थ होता होता हो वह सत्य किस काम का ।

'क्या रामसिंह ने गोली नही चलाई ? मैंने पूछा ।

गोली रामसिंह ने चलाई । दिनेश का उत्तर था ।

'क्या रामसिंह की नियत आप पर गोली चलाने की नही थी ।'

मेरा प्रश्न कानूनी दृष्टिकोण का था ।

'नियत निश्चित रूप से मेरे ऊपर थी । दिनेश बोला यह मरे कुकर्मों का परिणाम नही मरे बाप के कुकर्मों का फल था । गोली दिनेश पर नही पतराम के बेटे पर चल रही थी । जब समाज न्याय नही करता, तब मनुष्य स्वय कानून को हाथ म ले लेता है । इसम रामसिंह और उसके परिवार का दोष नही सारा दोष मरे बाप का है । उसम प्रतिशोध की आग है ।

'क्या आपके पिता ने इस सम्बन्ध में कुछ कहा है ?' मैंने फिर पूछा।

कहा कुछ नही है कहने की नियत है।' श्रीनाथ का उत्तर था। दिनेश को फाइलों में उलझा कर मैं घर चला गया।

दो दिन के बाद की बात है—

श्यामलाल अपने मुर्झाये हुए चेहरे के साथ घर आया। सौभाग्य मनुष्य की चमक दमक है तो दुर्भाग्य उसका विपरीत रूप। श्यामलाल का दुर्भाग्य उसके चेहरे पर विभ्रम रेखायें ही नही किन्तु पूर्ण चित्र बना चुका था। बढ़ी हुई दाढ़ी, पुती हुई कालिमा, सूखे हुए होठ गालों में पड़े हुए गड्ढे। पूर्णिमा के चाँद पर ग्रहण लगा हुआ था। जिस चेहरे को व्यस्तता में भी मैंने फूल के समान खिलता हुआ देखा बुरे दिनों ने उसको कितना कुरूप बना दिया था। हृदय में दुर्दिनों की वह्नि का केवल धुँआ था। उसके चेहरे पर उस आग के प्रज्वलित रूप का पता तो केवल श्यामलाल का ही था और किसी को नही। अति निकट के साथियों की सहानुभूति तो शीतलता का काम अवश्य करती है किन्तु लाख में हंसने वालों की संख्या इतनी अधिक होती है कि उस आग मे गिरते हुए घी पर शीतलता का प्रभाव नही पड़ता।

बैठते हुए श्यामलाल ने अपनी मां से कहा मां शरीर टूट सा रहा है। पर जैसे प्राण विहीन हो गये हैं। दिल का जैसे दम निकल रहा हो।

पास मे बैठी हुई मां का हृदय आंसुओं में उमड़ आया। श्यामलाल ने भी अपने आंसू पूंछे। दोनों का हृदय शीतल होने के बाद ही वाणी

का रूप ले सका। मा ने कहा बेटा, दूध पीले। तुरे दिल किसी से पूछ कर नही आते। घबराना नहीं चाहिए। तुम आदमी हो। ढाढस बधाने वाली मा और जार से रोने लगी, पुप्पा कहा गई ? मेरी बेटी, मेरी आखा की कोर, लाडली तेरी मा को अकेली छोड कहा गई ?'

दयोलाल के आसू सूख चुके थे। वह माजी को ढाढस बधाने लगा, 'मा, तू कह रही थी न घबराना नही चाहिए। तू खुद रो रही है। दिल के दद का उफान निकलने पर माजी फिर शान्त हो गई। उसने दयोलाल को दूध पिलाया। धीरज आन पर माजी न पूछा, रामसिंह का क्या हाल है ?'

'ठीक ही है मा। दयोलाल बोला।

माजी कानूनी बारीकियों को क्या समझे ? इसलिए दयोलाल ने इतना ही कहा सब ठीक हो जायेगा।'

म जी बोली, 'मेरा चाहे सारा घर फुक जाये मेरा रामसिंह छूट जाये।'

दयोलाल से दोपहर म बातें हुई। दयोलाल न बताया, म और एम० एल० ए० साहब दोनो थानेदार के पास गए। एम० एल० ए० साहब थानेदार साहब से अलग होकर मिले। एम० एल० ए० साहब ने मुझे बताया कि बात अधिक सन्तोषप्रद नहा रही। तभी मैंने पूछा।

दयोलाल ने कहा एम० एल० ए० साहब ने बताया कि पतराम की ओर से मन्त्रियो तक की सिफारिशें गई हैं कि मुकद्दमा दबना नही चाहिए। वह पैसे भी दे रहा है। मने आखिर कोई तरीका पूछा। तब एम० एल० ए० ने समझाया कि विष्णु भगवान् भी लक्ष्मी के आगे झुकते

'पैसा के बल पर सैकड़ों दिनेश तैयार हो सकते हैं ।' स्योलाल बोला, आज तक चोटों की होड थी अब नोटों की होड होगी ।'

स्योलाल टूटे हृदय से बाहर चला गया ।

२२

पतराम ने रात्रि को दस बजे अपने दल के साथ गुप्त मत्रणा की । इस आयोजन म खाने और पीने का कायक्रम था । पतराम ने विशेष रूप से 'केशर कस्तूरी' की तीन बोतलो की व्यवस्था की । मासाहारियो के लिए दो मुर्गे थ और शेष व्यक्तियो क लिए शाक सब्जी के साथ मिष्ठान भी था । इस विशेष कायक्रम का अथ उसके दल के लोग पहले ही लगा चुके थे । पतराम को भी पूव आभास हो गया था कि उसके साथी उसको योजना मे साथ नही दे रहे थे इसलिए उनको झुकाने के लिए सुरा से उत्तम कोई आयोजन सम्भव नही था । सुरा से साहस बढता है और सस्कार घटता है । यदि सस्कारो ने कही दल म निबलता लादी होगी तो सुरा उनको निस्तेज करने के लिए उत्तम साधन था । समय पर सभी लोग आ गए । मदिरा पान ने कुछ ही क्षणो म अपना प्रभाव जतला दिया । पतराम ने उचित अवसर देखकर अपनी बात छेड दी । पतराम ने कहा श्योलाल के साथ खूब हुई ।

हा ठीक हुआ बच्चू के साथ बहन भी गई और भाई कद म

गया।' एक ने कहा।

'अजी साहब खूब तिबारी बनी।' दूसरा बोला। तीसरे ने कहा, 'उसको अपने कर्मो का फल मिल गया।'

पतराम ने या तो जान बूझ कर कम पा या उसको अपनी चिन्ता से नशे का असर कम हुआ किन्तु वह होश म बात कर रहा था। उसने कहा, किन्तु मुकद्मा बल नही पकड रहा।'

मदिरा का घूँट लेते हुए उसके एक साथी ने कहा, क्यो ? उसने खूब किया है। उसको कद होगी ही।

पतराम बोला कैद कैसे होगी ? पुलिस को अब तक सबूत नही मिला।

उसके दूसरे साथी ने कहा 'सबूत की क्या कमी है ? उसने भरे गुवाड मे गोली मारी है।

पतराम ने जज की तरह प्रश्न किया, किसने देखा ?' उसी साथी ने कहा, सबने देखा।'

इस समय तक एक बोतल समाप्त हो चुकी थी। पतराम ने दूसरी बोतल रखी। बोतल रखते हुए पतराम ने कहा—

नशा नही आ रहा है। ठेकेदार की बेईमानी मालूम होती है।'

'नशा तो ठीक दे रही है। शायद आपको नशा नही आया होगा। उसके एक साथी की राय थी।

'खर ! यह और खोलो।' पतराम ने कहा।

पतराम ने पहली घूँट ली और गिलास का यह कहते हुए आगे किया, यह तो ठीक मालूम होती है।'

और फिर दौर शुरू हो गया।

घूमते घामते वही विषय फिर आ गया। पतराम ने अपने साथियों को समझाया कि हमारे दल को रामसिंह के विरुद्ध अब तक सबूत नहीं मिल रहा और बिना सबूत के मुकद्दमा बिगड़ रहा है।

पतराम के इस सीधे प्रश्न को कोई उत्तर नहीं मिला। अन्त में उन्हीं में से एक साथी ने सुझाव दिया, सबूत तो दिनेश है ही। आपको चिन्ता करने की आवश्यकता ही नहीं है।

सभी का ध्यान दिनेश की ओर गया किन्तु पतराम इस वाक्य से सन्तुष्ट नहीं था। उसका शायद यह भ्रम नहीं था कि दिनेश उसके आदेश का उल्लंघन कर सकता था किन्तु उसको इतना ही विश्वास नहीं था कि उसके बयान में कहीं बलिष्ठता आ सकती थी। इसको अपने मुँह से प्रकट करना भी नहीं चाहता था। उसने फिर कहा, वह तो है ही, किन्तु आप में से कोई तैयार हो तो ठीक रहे।

उसके सभी साथियों ने मौन धारण कर लिया। पतराम के सपनों पर तुषारापात होने लगा।

पतराम का पारा गरम होने वाला था किन्तु बुद्धिमान् राजनीतिज्ञ की भांति उसने अपने आपको सम्भाल लिया और अपने स्वर को स्वाभाविक बनाते हुए कहने लगा, आपका मैंने साथ दिया है। अब आप मुझे साथ दें।

इस प्रश्न पर बात तीसरी बार सामने आ गई। पतराम का दम घुटने लगा। एक ने साफ साफ कह दिया 'आपने हमारा साथ दिया। अब हम आपका साथ देंगे लेकिन क्यों ?'

अपमना

दूसरे ने इस वाक्य को पूरा किया 'आप अब क्या चाहते हैं ? श्योलाल ने अपनी बहन भेंट कर दी और भाई जेल में

वाक्य पूरा नहीं था किन्तु अर्थ स्पष्ट था। पतराम का दिमाग हिल गया। उसने बीच ही में खाना लाने का आदेश दे दिया। पतराम को खाने के बाद में प्रश्न करने की आवश्यकता नहीं थी। पतराम के प्रश्नों का उत्तर हर स्वर में अलग अलग भाषा में गूँजने लगा जिसका एक ही अर्थ था, पतराम, तू फालतू श्योलाल के पीछे लगा है। श्योलाल लुट चुका है। यही हम चाहते थे। अब वह सहानुभूति का पात्र है। अब उसका पीछा करना बेकार है।'

खाना समाप्त होने तक एक वाक्य और सामने आ गया 'तुम्हें कुछ करना है तो अपने बलबूते पर कर। तेरे पास पैसा भी है और तेरे पास सबूत भी। अन्तिम वाक्यों का सारांश इस प्रकार था बूढ़े बड़ेरों की परम्परा समाप्त होने जा रही है। हमारा श्योलाल से कोई वैर नहीं था। यह परम्परा कायम रहेगी। गाँव को उजाड़ना ठीक नहीं है।

पतराम शायद यह कहना चाहता हो कि तुम सब मेरे यहाँ से निकल जाओ किन्तु कह नहीं सका। उसका दिमाग घूमने लगा। उनके चले जाने के बाद वह ठीक स्थिति में नहीं आया। उसने पलंग पर गिरते हुए हताश स्वर में कहा दिनेश बेटा अब तेरे सिवाय कोई नहीं है।

पिता की इस झूठी पकड़ पर दिनेश मौन रहा। पिता पुत्र के इस मौन को सम्मति लक्षण मान कर सो गया।

उपरोक्त विवरण मुझे दिनेश से मिला। मैं इस विषय पर मंथन नहीं कर पाया था। इससे पूर्व ही दिनेश ने अंगड़ाई लेते हुए कहा 'यार

रात का स्वप्न बड़ा अच्छा आया।'

'स्वप्न सुधा का था या पुष्पा का ?' मैंने पूछा।

मार गोली सुधा को' दिनेश ने कहा।

'सुधा के प्रति तुम्हारे इस प्रकार के विचार शोभनीय नहीं हैं।' मैंने कहा।

'मैं उसको छोड़ चुका हूँ, प्रकाश। दिनेश बोला।

'छोड़ चुके हो ? एक उच्छ्वास के साथ मैंने कहा।

'हाँ हाँ, छोड़ चुका हूँ,' दिनेश बोला, इसमें आपको संशय नहीं होना चाहिए। मेरे घर में उसके लिए जगह नहीं है। मेरे लिए चाहे वह कहीं जाये।

'यह हठधर्मी अच्छी नहीं है। मेरा मत था।

'यह हठधर्मी नहीं मेरा सही निर्णय है।' दिनेश बोला।

'यह निर्णय लेने से पहले तुम्हें फिर सोचना होगा। मैंने अपना मत दिया।

दिनेश ने कहा मैं खूब सोच चुका हूँ। यह सोचकर ही निर्णय लिया है। नारी वह खिलौना नहीं है कि उससे हरेक खेलने की कोशिश करे। नारी पर पुरुष का एकाधिपत्य ही समाज की मर्यादा है। इन स्थायी मान्यताओं का नवीनीकरण करना घातक होगा।

मैंने कहा, इन बदलती परिस्थितियों में नियमों की उदारता आवश्यक होगी, दिनेश। खैर! छोड़ो इन बातों को। अभी बचपन है। इस आयु की ये विशेषतायें हैं। समय आने पर सब ठीक हो जायगा। मुझे वह स्वप्न सुनाओ।

प्रेमलता

दिनेश के गम्भीर और उदास चेहरे से फिर हास की चमक आई। उसने मलिनता की कालिमा को उडाने का प्रयास करते हुए कहा हा, तो मैं सुबह देर तक सोता रहा। मैंने स्वप्न देखा। स्वप्न क्या था एक स्वग लोक का दृश्य था। रात्रि की चादनी की छटा चारो ओर फैल रही थी। गुलाब कनेर जुही, मोतिया न मालूम कितने फूल खिल रहे थ चारो ओर। मैं था और थी पुष्पा। उसी रूप म जिस रूप मे मरा उससे मिलन हुआ करता था। भाला भाला चेहरा, गुलाबी लालिमा हँसती आख, मुस्कराते होठ और चमकते दात।'

'क्या चित्र खींचा है तूने कवि का-सा!' मैंने कहा। हा हाँ सुनो तो हाँ म कह रहा था। वह बैठी थी एक लॉन पर और चारो ओर फूल खिल रहे थे। मुझे यह आभास ही नही हुआ कि पुष्पा मर चुकी है। मैंने उस देखा। उसने आवाज दी दिनेश।' मैं निकट चला गया और उसके पास बैठ गया। वह बोली कहाँ थ तुम इतने दिन?

मैंने कहा तुम्हें ढूँढ रहा था।'

अब तो मिल गई न।' वह बोली।

अपने गोल उरोजो को जिन पर मेरा प्राय ध्यान जाता था और केवल उन्ही पर मेरा स्वत्व था आचल से आवृत करती हुई वह बोली, आपके बिना मेरा दिल नही लगता।'

'तुम तो विवाहित हो। मरा अधिकार नही है तुम्हें छूने का। मैंने कहा।

वह बोली, 'समाज ने मुझे विवाह का नकली बाना पहनाया था। मैं विवाहित नहीं हूँ। जिनसे मरा विवाह हुआ व मेरे पति नही थे। वे तो

पिता तुल्य थे। मैंने उनको अपना पति माना ही नहीं और न उन्होंने मु
पत्नी का रूप दिया। उन्होंने अपना मूल स्वीकार कर लो थी। वे मु
अपनी बेटी की भांति ही मानते रहे और मानते रहते। उन्होंने मुझे बच
म बेटी की भांति गोद म बिठलाया था और उनकी गोद बेटा की गोद र
पत्नी की नही।

मैं इसको कैसे स्वीकार करूँ ?' मैं बोला।

'आप अपनी वस्तुओं का सम्भाल कर देख लीजिए' वह बो
और अपने आंचल का आवरण दूर कर दिया।

मैंने उसके उरोजों को स्पर्श कर लिया। उनकी कठोरता यथाव
थी।

उसने अपनी शरीर को मेरी गोद म डाल दिया और मेरे गो
से चिपक कर आँख पूछने लगी। मैं उसके गुलाबी कपोलों पर हाथ फेर
हुए पुचकारने लगा। वह आँसू पूछते हुए बोली दिनेश आज मैं स्वत
हूँ, समाज के बंधनों से मुक्त हूँ। तुम भी भाग आओ।' मैंने अपने हो
उसके अधरों को चूमने के लिए आगे बढाये और आँखें खुल गई।

दिनेश ने एक लम्बी सांस खींची और सिगरेट की आखरी क
लेते हुए कहा, 'प्रकाश, दुनियाँ म प्रेम ही सवस्व है। प्रेम नही तो य
संसार ही बेकार है बेकार। विवाह तो झूठा ढोंग है। सुधा से मेरे लि
प्रेम नही है। यह तो विवाह म लपेटा हुआ एक फरेब है जिसका नैतिकत
की दुहाई देकर समाज बनाये रखना चाहता है। समाज अपनी दुर्बलताओं
पर पर्दा डालने के लिए अपने जालों का फैलाव करता है। मैं सुधा को
दोषी नहीं ठहराता।'

मैंने कहा, 'दुबलता किसमें नहीं ? हम क्या दुबल नहीं है। मनुष्य न दानव है न देव। वह तो सबल और दुबल के बीच का जीव है। ईश्वर तो सवगुण सम्पन्न की कल्पना है जिस तक पहुँचने या प्राप्त करने की बात को हम धम कहते हैं। समाज के नियम मनुष्य के दानव रूप को मोड कर उसे मानव से ऊपर ईश्वर तक पहुँचने की बात करते हैं। मनुष्य की पशुता अराजकता पैदा कर सकती है यदि उसे पूर्ण मुक्त कर दिया जाय। मनुष्य वास्तव में पशु है किन्तु उसका पशुत्व बधा हुआ है समाज के नियमों से। उसे उच्छ खल नहीं होने दिया जाय। पुष्पा तुम्हारी थी। तुम्हें मिलनी चाहिए थी। तुम्हें नहीं मिल सकी। यहाँ मैं समाज के नियमो का समथक नहीं हूँ। किन्तु अब वह नहीं है फिर सुधा की उपेक्षा ठीक नहीं है।'

दिनेश सम्भवत कुछ और बोलता किन्तु उसी समय डाक से एक पत्र आ गया। दिनेश ने लिफाफा खोला और यह कह कर कि यह पत्र सुधा का है मेरे हाथ मे दे दिया।

मैंने कहा 'पत्र आपके नाम से है, पढ लीजिए।'

दिनेश ने कहा, एक ही बात है, कोई विशेष बात नहीं। आप पढिए, मैं सुनूँगा।

मैंने पूछा, 'आपने पत्र लिखा था क्या ?

'नहीं तो दिनेश बोला।

'खैर लाइये, मैं पढ देता हूँ'। मैंने कहा और पाच पृष्ठों स रगा पत्र हाथ में लेकर पढने लगा।

पत्र इस प्रकार था —

प्रत्यक्ष रूप मे अनुभव कर चुकी हूँ। मैं आत्म समर्पण करती हूँ आप मुझे अंगीकार करें। नर के सबल हाथो मे ही नारी का सौन्दर्य सुरक्षित रह सकता है। बाह्य झंझावातो का सामना करने का सामर्थ्य पुरुष म ही है। नारी तो केवल घर की रानी है और घर म ही सुशोभित होती है। मेरे मन के राजा मैं अपना घर छोड आई थी। मुझे अपना घर प्रदान करें। मैं अब आपकी रानी बनूगी।

एक घटना अभी अभी हुई है। मै आपको सुना दूँ। शहरो मे प्राय ऐसी घटनायें घटित हो रही है। एक रईस की लडकी अपने बाजा मास्टर के साथ भाग गई। रईस ने पुलिस म सूचना दी। पाच सात स्टेशनो के बाद एक स्टेशन पर दोनो लला मजनू गिरफ्तार हो गए। लला तो अपने घर आ गई किन्तु मजनू की पुलिस ने बडी दुर्दशा की। ऐसी घटनायें नारी जीवन के लिए अपमान जनक हैं। मैं इसको क्षणिक भावुकता मात्र मानती हूँ।

अभी अभी मेरे पिताजी ने कहा है कि आप शीघ्र हो आ जायें और मुझे ले जायें। पिताजी स्वय पत्र लिख रहे थे किन्तु मैने ही उनके स्थान पर पत्र लिख दिया है। आशा है आप शीघ्र ही पधारने का कष्ट करेगे। आने स पूर्व पत्र से सूचित करें।

म आशा करती हूँ कि आपने मुझे क्षमा कर दिया होगा।

अर्द्धांगिनी आपकी,

सुधा।

सुधा का पत्र दिनेश के हाथो म थमाकर मैने कहा, लीजिए, सुधा के निर्दयी पति, अपनी सुधा को सद्भावनाए। उस बेचारी का म

प्रसन्नता

आइये। चलो मैं आपके सामान को बाध देता हूँ। आज नाम को चले जाओ।'

'आप त्रिया चरित्र को नही समझते, प्रकाश बाबू यह पति को मार कर सती हो जाती है। दिनेश ने कहा।

मैने कहा आपने ता लोक-कथायें सुन रक्खी है। मध्यकाल मे समाज का कुछ ऐसा ही वातावरण बन गया था कि स्त्री केवल मनुष्य के ऐशआराम की साधन थी। आज की नारी जागरूक है। वह मनुष्य से समान अधिकार की बात करती है। वह अपने कर्त्तव्यो से भी विमुख नही है। भोलेपन की भूलो की आपको उपेक्षा करनी होगी।'

दिनेश ने फिर कहा आपने अभी सुधा का पत्र पढा है। वह लिख रही है कि एक रईस की लड़की एक बाजामास्टर क साथ भाग गई। यह क्या है ?'

मैंने कहा हा हा मैं भी तो यही कह रहा था कि यह आयु का ही प्रभाव है कि यौवन के प्रारम्भिक काल युवक तथा युवती क लिए सबसे खतरनाक होते हैं। कुछ मन चले युवक अपना उत्तरदायित्व नही समझते। मा बाप ऐसे ग़ैरजिम्मेदार व्यक्तियो को अपनी युवा पुत्रियो को शिक्षा के प्रलोभन मे सौंप देते है। नारी कोमल वृत्तियो की सुकुमार कृति है। वह सगीत और काव्य के प्रवाह म बह जाता है। काम की प्रवृत्तिया की उत्सुकता उनको पतन के गड्ढे म डाल देती है। म इसम नारी को कतई भूल नही मानता।

पतन पतन ही होता है दिनेश ने कहा, 'इसका सशोधन नही नहीं होता। यह मेरी मान्यता है।

मैं अनुभव कर रहा था कि दिनेश के हृदय में कोई गहरी अनुभूति चोट कर चुकी थी। वह सुधा को विकार ग्रस्त मानता था। मैं यह भी अनुभव कर रहा था कि सुधा दिनेश के माप दण्ड के अनुसार दोष से मुक्त नहीं हो सकती थी। मधुप से उसका शारीरिक सम्बन्ध भी था। दिनेश को इसका पूर्ण भेद नहीं होना चाहिए था। केवल अनुमान मात्र से उसको संशय था और उसको विश्वास मान कर सुधा को फेंकने का निर्णय कर चुका था।

२३

घमाटाराम जीवन को घसीट रहा है। रूपसिंह रूपविहीन होते हुए भी दिन भर अपना मुँह दर्पण में देखता है और सूखे हुए अनार के से ऊबड़खाबड़ चेहरे को देखकर स्वयं ही लज्जित हो जाता है। भागवती लूखी खिचड़ी खाकर रात को टूटी खाट पर सोकर रात बिता देती है। नृसिंह काल्पनिक भूत की छाया से डरता है और रात को बाहर निकलने का ही साहस नहीं करता। रामनारायण राम के नाम में रत है। रावत राम दिन भर कमाता है, रात को अनाज उधार लाता है। तब उसकी औरत अपनी घिसी पिटी चक्की से आटा पीस कर रोटी बनाती है और साग के स्थान पर पानी से ही रोटी निगल कर सो जाती है। फूलाराम अपनी चिलम में ही जीवन की मुक्ति मानता है। उमाराम एक पौवा शराब का पी लेता है। मांगने वाले आते हैं तो दो चार गालियाँ सुना देता है। खेताराम खेती में ही मस्त है किन्तु सेठ भगवानाराम हर साल अनाज उसके खलिहान से ही उठा ले जाता है। बूढ़े बडेरे हुक्के की 'गुड़गुड़' में ही मस्त हैं और अपने अतीत की स्मृतियों पर जिन्दा हैं। लोकनेता युग के परिवर्तन की बात बखानते हैं किन्तु परिवर्तन घर का ही नहीं होता। भविष्य की लम्बी लम्बी कल्पनाओं को लेकर वोट मांग रहे हैं किन्तु पास घर के छोकरे

हो न ी होत। भूखे देश के भूखे नेता न देश की ही भूख मिटा सकते है। अपनी ही। पाच साल का एकत्रित धन फिर चुनाव के जुए म लगा देने। और फिर फकीर के फकीर। जनता की गालियों और दुश्मनों की गोलिय से घिरे हुए एक झूठी मुस्कान के साथ त्रस्त हृदय से इधर उधर उद्घाटन करते नजर आते है। मत्री लोग जोड़ तोड़ म लगे हैं उनको अपनी फिक्र से ही फुरसत नहीं। एक्स ई एन के बाबू ने अपना मकान बना लिया है और सेठ सुगनच द ने अपनी हवेली पटवारी फूलच द ने अपनी औरत के नये गहने बना लिए। शहरो म नवनिर्माण के धुएँ उठ रहे हैं। गावों म विकास का दलदल हो गया है। इस उपन्यास का पात्र श्योलाल चाहे दुनियाँ की नजर म भरा पूरा होगा किन्तु अन्दर से खोखला था। कहते है कि सम्वत छप्पन के घोर अकाल में सारे गाँव को अनाज इस घर से मिला था। उस समय श्योलाल के बाप हरीराम के कोठे बाजरी स भरे हुए थे। खेत म घास फूस के ऊचे छीवर लगे हुए थे। वह धन कई गुना होकर बहियो म पड़ा रह गया क्योकि श्योलाल वोट के बदले नोट छोड़ता गया। श्योलाल न अपने निजी पैस वालो क पास चक्कर काटे किन्तु लोगो क पास पैसा नही था। पैसे वाले पैसे ले चुके थे। उनकी बहियो में केवल देनदारो के अगूठे लगे हुए थे। गत चार पाच सालो से सरकार जमीन की नीलामी कर रही थी। गाव वालो ने जमीन खरीद ली। उसके बदले सरकार पैसा ले गई। अब पैसा कहा था? पैसा था लेकिन जमीन के बदले म। निराश श्योलाल माजी से सलाह मशोरा करने लगा। माजी ने पूछा

"बेटा कहा कहाँ घूम आया ?"

'सब जगह भच मार आया, मा' श्योलाल बोला।

'सेठ मनीराम के पास गए थे ?' माजी बोली।

गाव के सारे चौधरियों और सेठो के पास हो आया। श्योलाल बोला।

'पसे कब चाहिए ?' माजी न पूछा।

'आज चाहिए शाम को, श्योलाल ने कहा, 'शाम को चार बजे का समय एम० एल० ए० साहब न दिया है। हम दोनो जायेगे, पूरे दस हजार रुपये लेकर। तब मुकद्दमा कुछ अपने हक मे होगा।'

माजी हतप्रभ हो गई। दस हजार रुपये कितने होते हैं ? एक आदमी बठा बठा खाए तो दस साल तक उसको काम करने की जरूरत नही। यदि दस हजार ब्याज पर दे दिए जायें तो उम्र भर उसे खेत जाने की आवश्यकता नही। फिर माजी को अपने बेटे की याद आ गई। माँजी न कहा, बेटा, दस हजार देने होगे ?'

हा, माँ, दस हजार, पूरे दस हजार। श्यालाल ने कहा।

माजी के बेटे की कीमत दस हजार से भी ऊपर थी। पुप्पा का दद बेटे के दद के नीचे दब चुका था। बेटे की याद ने उसे यह कहलवा दिया कितने ही हजार लग जायें बेटा छूट जाना चाहिए। लकिन तू ता कह रहा था कि थानेदार मरा दोस्त है।'

'दोस्ती का जमाना चला गया, मा। आज दोस्ती पसा का है।' श्योलाल न कहा।

अच्छा बेटा कोई नही पसे तो हाथ का मल है। आदमी के लिए पसा है। पसे के लिए आदमी नही। माजी ने कहा।

किन्तु माँ आज का सिद्धान्त दूसरा है। आदमी पैसे के पीछे भागता है।' दयोलाल बोला।

माँजी बोली 'नहीं रे बेटा, आदमी बड़ा नहीं है। पैसा बड़ा है। पहले आदमी बड़ा था। आदमी की जबान की कीमत थी। आदमी की अपनी कीमत थी। आज आदमी बड़ा नहीं है इसीलिए आदमी के आदमीपन की कीमत नहीं। अब इन्सानियत नहीं है। इन्सानियत पैसे के पीछे बिकती है। लेकिन यह धरती है। धरती धर्म पर टिकती है। अभी धरती पर धर्म है। तभी तो धरती खड़ी है। अभी इन्सानियत है दुनियाँ में। बिलकुल गई नहीं बेटा। तू धीरज रख।

धीरज की भी हद है माँ' दयोलाल ने कहा।

'नहीं बेटा' माँजी बोली, 'इन्सान बड़ा है। बहुत बड़ा है। इसकी इन्सानियत भी बड़ी है। सब दिन एक से नहीं होते। यह संकट है। आदमी को सब कुछ झेलना पड़ता है। सुख दुख का तो जोड़ा है। दुख तो बरसात के पहले ही तपन है। इसमें घबराना नहीं है। सब ठीक हो जायेगा। अपनी जमीन पड़ी है। यह कब काम आयेगा? यह बेच दो। मैंने पूछा है। मनसुख जमीन ले रहा है। पैसे उसके पास है। तुम जाओ और बात कर आओ।'

दयोलाल ने अपनी बीस बीघा जमीन बारह हजार में बेच दी। सौदा आठ हजार में तय हो गया। एम० एल० ए० साहब साथ थे। लोगों का कहना था कि एम० एल० ए० साहब पैसा पूरा नहीं पहुँचाते। इस प्रकार दयोलाल ने अपने मित्रों की सहायता से इतना काम कर पाया कि अब थानेदार धनराम के कहने से रामसिंह के विरुद्ध गवाह तैयार

नही करेगा। थानेदार ने अपनी दोस्ती के बदले मे दयोलाल से एक कानूनी मुकसा और तैयार किया कि वह मौका घर के बाहर का न बना कर घर के अन्दर का दिखा देगा। एम० एल० ए० साहब से इस काय म जो सहायता मिली उसकी कृतज्ञता प्रकट करके दयोलाल रात को अपने घर आ गया। माजी को सारी बातें बतला कर यह भी बतला दिया कि रामसिंह को अब किसी प्रकार का कष्ठ नहीं होगा। थानेदार ने सब कुछ अपने जिम्मे ले लिया था। अब दयोलाल के पास चार हजार रुपये शेष थे जिनका वह मुकद्मे के शेष काय मे व्यय के लिए पर्याप्त था।

किन्तु एक घटना और घटित हो गई —

दूसरे दिन माजी ने शान्ति से भैस का दूध निकालने के लिए कहा शान्ति ने जब दूध निकालने के लिए बाल्टी उठाई उसी समय उसका नक्शा चढा हुआ था। वह बाल्टी लेकर दूध निकाल कर लाई और सारी बाल्टी का दूध बिखर गया। माजी से न रहा गया। माजी ने सदा की भाँति उसे फटकारा तेरे हाथ जल गए थे क्या ? कुलक्षणी, इतना भी नहीं सूझता।'

शान्ति माजी के स्वभाव को जानती थी। वह कभी प्रतिवाद नही करती थी। लेकिन आज वह चुप नही रह सकी। उसने कहा, मेरे हाथो का बखान करने की जरूरत नही कर लिया करो अपना काम। मेरे से तो जैसा होगा वैसे ही करूगा।'

माजी चुप कैसे रहती ? वह तो आगे ही दुख से भरी हुई थी। वह तडक कर बोली अरी तेरे मुँह म जीभ कहा से आ गई कुमाणस ?'

शान्ति ने आज माजी की बिल्कुल ही शम नही की। शायद

बर्तनों का ढेर समेटे हुए थी। वह आँगन में आकर बोली, 'मेरा सारा माथा तो काट खाया है। अब जीभ और काट ला।'

मांजी से न रहा गया। वह आँगन में आकर बोली, 'बड़ी आई तू जीभ कटाने वाली, कंजरी। वह दिखती है बाल्टी, उठा कर सिर फाड़ दूँगी।'

शान्ति ने लाज के घूँघट के साथ अपने मुँह का भी घूँघट हटा लिया और मांजी की ओर सीधी आई, 'सिर फाड़ने वाले मर गए। तू फाड़ कर तो देख। कैसा मजा चखाता हूँ?'

मांजी ने शान्ति को जोर से धक्का दिया और बाल्टी को लेकर चली कि दयालाल का पिता हरीराम राम भज राम भज करता आ धमका और माँ से बाल्टी छीन कर दोनों को गालियां निकालने लगा। मांजी ने कहा, 'मैं क्या करूँ? यह तेरा ही कसूर है कि इस कुघराने की मेरे माथे मढ़ दी।'

शान्ति अपने श्वसुर की लाज भी नहीं रख सकी। वह घूँघट की ओट लेकर तड़ाक से बोली 'कोई जरूरत नहीं मेरे पीहर वालों को बुरा भला कहने की। अब मैं कुछ नहीं सुनने वाली।'

मांजी फिर उसकी ओर चली लेकिन हरीराम ने मांजी का हाथ पकड़ कर रोक लिया और झटका देकर बोला, 'भलीमानस, क्या यह वक्त लड़ाई करने का है?'

मांजी धड़ाम से जमीन पर गिर गई और जोर से लगी रोने, 'अरी कंजरी, तू मेरी पुत्र को खा गई। मेरा बेटा जेल में चला गया। जिस दिन से यह घर में घुसी उसी दिन से मेरे घर का सत्यानाश हो गया।'

आदि आदि।

उधर से शान्ति भी बडबडाने लगी। वह कम्बल ओढ कर अन्दर के कान म जाकर सो गई।

रात म माजी ने श्यौलाल क और शान्ति न अपने पति हरीसिंह के कान भरने शुरु किये।

दूसरे दिन सुबह ही हरीसिंह ने माँजी को आडे हाथो से लिया। उसन कहा मा तेरी अकल अभी ठिकाने नही आई।'

माजी कब चूकने वाली थी। उसने फौरन कहा 'तू उस राड के सिखाये कह रहा होगा।

म सब कुछ जानता हूँ। हरीसिंह बोला।

क्या जानता है तू? माजी बोली।

कसूर तेरा है। हरीसिंह बोला।

माजी बोली, हा आज कसूर मेरा है। वह भली आदमन म बुरी और वह भली। मर सामने बोलती है वह कुलखणी।'

इतने म शान्ति भी आ गई। अपने पति के बोलने से पहल ही वह जवाब पर उतर गई, 'इसक तो मुँह म जीभ नही। म सुनाती हूँ तुम्हे। यह तो कमा कर आपको खिलाने वाला है। रात दिन यह पचे और खाओ तुम।

अच्छा माजी बोली, यहा तक बात बढ गई। तू कौन है कमाई टालने वाली। अपने पीहर से लाई थी क्या? यह तो मेरा बटा है। कमायेगा और खिलायेगा। तू कौन है दाल भात म मूसलचन्द।

और भा बेटे है तेरे, शान्ति बोली कितना कमाते है व?

खोट के सिवाय है क्या तुम्हारे पास ?'

बूढ़े ने फिर हस्तक्षेप किया और मामला एक बार फिर शान्त हो गया।

हरीसिंह दो दिन से खेत नहीं गया। शान्ति शाम को घड़ा पानी का लाने गई तो घड़ा फोड़ आई। रात को माँजी ने दयालाल से बातें कहीं। दयोलाल बोला 'माँ, यह समय लड़ाई करने का नहीं लड़ाई बुझाने का है।'

माजी ने समस्या को सामने रखते हुए कहा 'दो दिन से ऊँट घर खड़ा है। हरीसिंह खेत ही नहीं जाता।'

दयालाल ने ढाढ़स देते हुए कहा 'माँ, मैं उसको समझा दूँगा। कोई गड़बड़ी नहीं होगी।'

माजी ने फिर कहा 'बहू ठीक ढंग से काम नहीं कर रही। आज घड़ा फोड़ आई।'

दयोलाल बोला 'उसको काम की कहने की जरूरत नहीं। तेरी बड़ी बहू भी तो है।'

'घर में जो जीव हो उसको काम का कहना ही पड़ता है' माजी ने कहा।

दयोलाल समस्या की गम्भीरता को सोच चुका था। बात अन-सुनी करके चला गया। दूसरे दिन उसने हरीसिंह को समझाया। बात उसके दूसरी समझ में आई हुई थी इसलिए भाई की बात समझ में नहीं आई।

जब मन में गाँठ पड़ जाती है तो छोटी छोटी बात भी बिगड़

रूप धारण कर लेती है अन्यथा बडी बडी बाता का भी कोई महत्व नही होता। शान्ति ने माजी से बालना करीब करीब ब द ही कर दिया था। जो कुछ करती थी अपनी मर्जी से करती थी। कभी घी का बतन खुला छोड दिया तो कुत्ता चाट गया। कभी दूध बिना ढके छोड गई तो बिल्ली ने बिखेर दिया। एक दिन खुले बिलोवने म कुत्ते ने मुँह डाल दिया तो माँजी से नही रहा गया। माँजी ने कहा, 'काम नही करना है तो मत किया कर। तेरा सहूर कहा चला गया ? यह तेरा बाप बिलोवने को जूठ गया।

मरा बाप क्यो तेरा बाप ।' शान्ति ने जोर से कहा। माजी के हाथ मे लौटा था। उसने शान्ति के पीठ पर लगा दिया 'यह ले तेरा बाप। तेरी अवल ठिकाने करू ।'

शान्ति ने रा कर घर उठा लिया। लगी शोर मचाने अरे मार दिया रे मेरा शिर फाड दिया रे। उधर माजी ने बेटी को याद करके विलाप शुरु कर दिया। घर मे कोहराम शुरु हो गया। बूढे का हस्तक्षेप भी असफल हो गया। उसने माजी के दो जूत लगा दिए। अडौस पडौस की स्त्रिया और बच्चे यह तमाशा देखने इकट्ठे हो गए।

सूर्यास्त होन से पूव ही हरीसिंह और श्योलाल म सघप शुरू हो गया। इस सघप की ऐसी ही प्रक्रिया होती है। हरीसिंह ने साफ साफ कह दिया मैं इस घर मे एक मिनट भी नहीं रह सकता।'

अपनी लडाई के दौरान उसने यह भी स्पष्ट कर दिया कि श्योलाल को बीस बीघा बेचन का हक नही था इस बीस बीघे मे उसका अधिकार छीना नही जा सकता।

इस पर श्यामलाल का माथा ठनका। वह असमंजस में पड़ गया कि जिस घर में आज तक अशान्ति नहीं फैली वहाँ अचानक विस्फोट कैसे हुआ ? यह बात अकारण नहीं हो सकती थी। उसने सोच समझ कर कह दिया 'यह जमीन तुम्हारी नहीं बिकी, हमारी बिकी है। जो बाकी जमीन जो पहले अपनी थी उसका तीसरा हिस्सा तुम्हें मिलेगा।'

किन्तु माजी फिर बीच में कूद पड़ीं। उसके स्वर कठोर थे। वह बोलीं, 'तुम दोनों घर से निकल जाओ। तुम्हें एक बीघा भी जमीन नहीं मिलेगी। अपना कमाओ और खाओ। श्यामलाल कौन है जमीन देने वाला ?

शान्ति इन स्वरों को कैसे सहन कर सकती थी। उसने कहा 'माजी आज तक हमने कमाया है। तुम लोगों ने खाया है। बड़े बेटे ने पंचायतें की और छोटे बेटे ने पढ़ाई। कभी खेत जाकर देखा वहाँ। मेरा आदमी काम करता करता काला पड़ गया और मेरी कमर झुक गई। अब जब बांटने के दिन आए तब कहती है कि एक बीघा जमीन नहीं मिलेगी। हम तो अपनी जमीन लेकर रहेंगे। घर में से घर लेंगे और जमीन में से जमीन।

माँजी का स्वर कुछ ढीला पड़ गया। वह बोलीं 'ले लो जमीन रोकता कौन है ? अस्सी बीघा में से जितना हिस्सा आती है मिल जायेगी।'

'हम तो अपने बाप का हक लेंगे। हरीसिंह बोला।

श्यामलाल ने माजी को शान्त होने के लिए कहा। हरीसिंह को भी धीरज बंधा कर अलग कर दिया। श्यामलाल समस्या की गम्भीरता को अनुभव कर चुका था। थोड़ी देर पश्चात् सबने मिल कर यह निर्णय ले

लिया कि हरीसिंह को सारी जमीन का तीसरा हिस्सा मिलेगा और घर का भी।

दूसर दिन हरीसिंह अलग हो गया। गाँव के पाच सयाने बुला लिये गये। खेत म जाकर अच्छी म से अच्छी और बुरी मे से बुरी जमीन के तीन हिस्से हो गए। हरीसिंह को कह दिया गया कि अपनी मर्जी से एक हिस्सा ले लव। हरीसिंह न अपनी मर्जी का एक हिस्सा ल लिया। घर म से भा इसी प्रकार हिस्से कर दिए गए। बतन भाडे भी बट गए। गहने आदि मे किसी प्रकार का बटवारा नही किया गया। शान्ति अब सतुष्ट थी।

श्योलाल और रामसिंह का हिस्सा अब श्योलाल के हाथ मे था जिसम से बीस बीघा जमान बिक चुकी थी। इस जमीन की चिन्ता श्योलाल का था। श्योलाल और उसकी औरत ने कभी पसीना बहाकर काम नही किया था। औरत तो प्राय बीमार रहा करती थी। हरीसिंह अलग क्या हो गया श्योलाल की बाह टूट गई। श्योलाल नही चाहता था कि यह स्थिति पदा हो। हरीसिंह को मनाने का भी प्रयत्न किया था किन्तु असली तार तो शान्ति की ओर से चल रहे थे। माँजी भी अगर समझ बूझ स काम लेती तो गाड़ी और निभ सकती थी किन्तु माजी अपना अधिकारपूर्ण दायित्व कसे छोड़े। अब माजी और श्योलाल को नानी याद आ गई। खेती का सम्हालना न श्योलाल के वश की बात थी और न बहू के।

काल चक्र अपने निर्दयी करा स इस घर का पतन की ओर ढकेल रहा था। दर्शको मे इन पात्रा के प्रति सहानुभूति की मात्रा उपहास की मात्रा स कम थी। परिस्थितियाँ कभी बनाये नहीं बनती वे तो स्वभावत

ही बनती हैं। आलोचक भले ही अच्छी बुरी आलोचना करे, यह तो प्रकृति की प्रक्रिया है। श्योलाल को ये दुर्दिन देखने ही थे।

मनुष्य साहस रखता है किन्तु जब भगवान् पीछे पड़ता है तो उसके साहस को भी झकझोर देता है। उसके दिल और दिमाग दोनों शून्य हो जाते हैं। श्योलाल ने आज तक ऐसी परिस्थितियां नहीं देखी थी। मां बाप के बल पर कूदने वाला अपने भाइयों के बल कूदने लगा। अब बूढे मां बाप का बेटा भाइयों की भी सहानुभूति से भी हाथ धो बैठा। अब उसका कौन था ? उसने आंखों में आंसू भरते हुए कहा 'प्रकाश, इन्सान का भी नहीं अब तो ईश्वर का सहारा चाहता हूं।

मैंने श्योलाल की पीठ थप थपाई जैसे कि मैं साहसहीन को साहस दे रहा होऊं।

२४

दिनेश ने सुधा को पत्र लिख ही दिया। उसकी नक्ल उसने मेरे सामने प्रस्तुत की --

केवल सुधा,

तुम्हारे दो पत्र मिले। बाबू जी मनोवृत्ति के अनुसार मैंने तुम्हारे पत्रा का उत्तर नहीं दिया और न देखने वाला था, किन्तु प्रकाश ने जो नारी हृदय को नहीं पहचानता बहुत आग्रह किया तो मुझे उत्तर देने को विवश होना पड़ा।

तुम कवियित्री हो कविता करती हो और कविता करती रहो। कहते हैं कि कवियों को निराशा निधनता और निराश्रयता कविता करने मे बडी सहायक होती हैं अत तुम्हारे लिए यह अनुकूल अवसर है।

तुमने अपने हृदय परिवतन की बात लिखी और कुछ विलाप के अश्रु भी बिखरे, किन्तु नारी के आसू तो कृत्रिम होते हैं। मैं तुम्हारे आसुओ मे कहीं भी वास्तविकता का अनुभव नहीं करता।

तुम नारी हो और फिर कवि हृदय भी रखती हो। तुम्हारे में

नारी और कवि में दो हृदयों का समन्वय है। कवि के हृदय में तो कल्पना द्वारा अनुभूतियाँ उद्भव हो सकती हैं, अतः तुम्हारे पद में मुझे संशय है।

मैं नारी को ईश्वर की महान् कृति मानता हूँ, किन्तु मैं यह भी स्वीकार करने में नहीं हिचकिचाता कि वह प्रकृति की अद्भुत रचना है। इसको समझना पुरुष के सामर्थ्य से परे की चीज है। नारी का हृदय स्पष्ट नहीं है। उसमें अनेकों पर्यायें हैं जिनको टटोलना साधारण बात नहीं।

मैं नारी को महान् मानता हूँ बशर्ते उसकी निर्मलता सन्देहप्रद न हो। मोती का मूल्य तभी तक है जब कि उसका प्रत्येक कोर सुरक्षित हो। मोती का सौन्दर्य उसके मूल रूप में है। नारी बाह्य सौन्दर्य से अलंकृत नहीं होती। वह सौन्दर्य ही क्या जो समय के प्रहारों से विकृत हो जाय। सौन्दर्य तो हृदय का है जो अनुभूतियों में निखरता है।

तुम्हें दिनेश को याद करने की क्या आवश्यकता पड़ी? तुम्हारे तो कई कविमित्र हैं जिनसे तुम कवितायें सुनो और अपनी कवितायें उनको सुनाओ। तुम तो शहरी वातावरण में रहती हो। वह चहलपहल और रंगरलियों की दुनिया है। हम ग्रामीण वातावरण में पले हुए ऊबड़ खाबड़ पुरुष तुम्हें याद कैसे आने लगे? आश्चर्य!

मैंने एक निर्णय लिया है और मैं यह आवश्यकता अनुभव करता हूँ कि तुम्हें अपने निर्णय की सूचना दे दूँ। मैं तुम्हें त्याग चुका हूँ और सदैव के लिए त्याग चुका हूँ। तुम यह सूचना अपने माता पिता को दे देना।

शायद तुम यह अनुभव करो कि मैं कोई दूसरा विवाह रचाने के फेर में हूँ। मैं तुम्हें यह भी बतला देना चाहता हूँ कि मैं अब विवाह के

पक्ष में नहा हूँ । मैंने तुम्हारा झंझट भी पत्र में मोल ले लिया जिसमे तुम्हार जीवन को भी धक्का लगा । तुम दोषी हो या नही हो मे इस विवाद म नही फमना चाहता । मुझे तो यह विश्वास हा चला है कि तुम्हारा और मेरा सयोग सस्कारा से विपरीत पडता है । मैं अपनी ही असमयना प्रकट कर दता हूँ इसलिए म तुम्ह निबाह नही सकता ।

मैं यह भी लिखने म नही हिचकिचाता कि तुम्हारा रास्ता अब खुला है। मैं तुम्हारे पथ का बाधक न ी हूँ । तुम स्वछ द विचरण करो म मेरी ओर से स्वतन्त्र हो ।

तुमने पुष्पा के सम्ब ध म पूछा है अत लिख दता हूँ । पुष्पा सभा के लिए चली गई । रामसिह को उसका हत्यारा माना जाता है । वह पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया है । मुकद्मा चल रहा है ।

प्रकाश अब भी यहा है । तुम्हार जाने से उसक ध धे को नुकसान पहुँचा है । वह तुम्हारा बहुत पश करता है, किन्तु उसकी प्रेरणा का अभी तक मेरे पर कोई प्रभाव नही है ।

माताजी और पिताजी दोना प्रस न है । दाना ही तुम्ह याद करत है ।

रोटी म स्वय बना लता हूँ इसलिए तुम्हारी याद आने का प्रश्न नही पैदा होता । कभी कभी खाना घर वाले भी खिला देत हैं ।

तुम्हार माताजी और पिताजी को नमस्त कहलवाने म मुझे कोई एतराज नही है ।

तुम्हारा हितैषी,
दिनेश ।

प्रेमलता

मैंने पत्र को मेज पर रखते हुए कहा, 'क्या तुम यह पत्र डाल चुके ?'

'बिल्कुल,' दिनेश बोला ।

'तुम वास्तव में विचित्र प्राणी हो,' मैंने कहा 'भले आदमी, औरत बड़ी महगी चीज है । अरे भाई औरत मिलती कहां है ? औरत लक्ष्मी है लक्ष्मी । घर आई लक्ष्मी को ठुकराते हो । यह जवानी है मेरे दोस्त । इसके मद में झूम रहे हो । रोओगे अपनी करतूतों को । बुढ़ापे में नानी याद आ जायेगी । कोई पानी पूछने वाला भी नहीं मिलेगा । भगवें पहन कर हरिद्वार में बैठ जाना ।'

दिनेश ने कहा 'मैं न तो साधु बनूँगा और न ही दूसरा विवाह करूँगा । मैं तो इसी तरह रहूँगा फक्कड़ । ऐसी औरत से तो फक्कड़ जीवन ही अच्छा । औरत घर की कलह के अलावा क्या है ?'

मुझे फिर गुस्सा आया । मैंने कहा 'अरे भाई यों कहो कि मुझे घर का धंधा करना पसन्द नहीं । औरत होगी तो नमक मिर्च का भी इन्तजाम करना होगा । घी दूध की भी व्यवस्था करनी होगी । उसका हित भी सोचना होगा । उसकी कभी कहीं जी हजूरी भी करना होगी । किन्तु औरत के मजे औरत के साथ ही हैं । अरे भले आदमी, सुधा जैसी सुशील औरत कहां मिलेगी ?'

दिनेश को कहने का मौका मिल गया 'तुम उसकी गुणगाथा की बार बार प्रशंसा करते हो । मुझे उसका गुणगाथा में ही शक है ।'

'क्या शक है ? मुझे बताओ ।' मैं बोला ।

दिनेश का चेहरा गम्भीर हो गया । 'मुझे विश्वास है कि मधुर

का सम्बन्ध सुधा से अच्छा नहीं था।' दिनेश ने कहा।

मैंने कहा, दिनेश तुम वास्तव में पागल हो। मधुप मेरा मित्र है। मैं दिल्ली में उससे मिला था। रातभर मैं उसके साथ रहा। सुधा की भी बात चली थी। उसने जो कुछ बतलाया उसमें संशय करने का कहीं भी स्थान नहीं है। मुझे सुधा के जीवन के लिए झूठ बोलना पड़ा।

दिनेश अपने मत में अटल था। उसने कहा 'प्रकाश, संसार का सारा काव्य, साहित्य और संगीत प्रेम और वासना से ओतप्रोत है। प्रेम तो सात्विक है किन्तु वासना के बिना वह अधूरा है। वासना प्रेम का मूल स्रोत है। तन की वासना न सही किन्तु मन की वासना तो विद्यमान रहती ही है। मैं इसको स्वीकार नहीं कर सकता कि सुधा का कवि मधुप के कवि के सम्पर्क में आकर वासना से अछूता रहा हो। मैं सुधा को स्वीकार नहीं कर सकता।'

मेरा विश्वसनीय कथन भी दिनेश को मोड़ने में असमर्थ रहा। मुझे यह कहना पड़ा 'दिनेश तुमने फ्रायड का नाम सुना होगा। उसने बताया है कि बाप का बेटी से, मां का बेटे से भी वासनात्मक सम्बन्ध होता है। इस प्रकार तुम गहराई में जाओगे तो जिन्दा नहीं रह सकोगे। किसी राजकुमार ने अपनी विवाहिता को इसलिए त्याग दिया कि उसने अपने विवाह से पहले किसी अन्य राजकुमार की प्रशंसा सुनी थी। यह कोई दलील है? कौन किसको जानता है? पश्चिम में एक एक स्त्री चार चार पति बदलती है और एक एक पुरुष चार चार पत्नियां। उनका भी जीवन चल रहा है। यह तो भारतीय नारी है कि हर प्रकार के पति को चाहे वह कोढ़ी ही हो निभाती है और जीवनभर उसका साथ देती है।

दिनेश मेरी दलीलों से फिर प्रभावित नहीं हुआ। वह कहने लगा 'भारतीय नारी की तारीफ करते करते भारत के कवि लेखक दार्शनिक और राजनीतिज्ञ अघाते ही नहीं। मैं आपको यह कहता हूँ कि भारत के नब्बे प्रतिशत शिक्षित पुरुष जो किसी भी दृष्टि से कम नहीं कहे जा सकते अपने घर में अनपढ़ और फूहड़ औरतों को निभा रहे हैं और एक भी शिक्षित महिला नहीं मिलेगी जो अनपढ़ और फूहड़ पति को निभा सके। मैं तो भारतीय पुरुष की तारीफ करता हूँ।

मैं दलील में तुमसे जीत नहीं सका' मैंने कहा, किन्तु मैं इतना अवश्य कहूँगा कि अशिक्षित औरतें भी ऐसी मिलेंगी जो शिक्षितों से कितनी ही अधिक शिष्ट और सुशील हैं।

यह तो नैसर्गिक गुण और कुछ घरेलू संस्कारों का प्रभाव होता है। शिक्षा तो केवल साधन का काम करती है।' दिनेश ने स्वीकार किया।

इतना कहकर दिनेश कुछ समय के लिए मौन हो गया। मेरे लिए भी कोई विषय नहीं रहा। मैंने पूछा, 'तो आपने पत्र डाल दिया। कब डाला?

'कल जब मंडी गया था।' वह बोला।

मंडी गए थे कल?' मैंने पूछा।

हाँ, हाँ जाना पड़ा।' दिनेश बोला, 'कल पिताजी मुझे ले गए।'

क्यों?' मैंने उत्सुकता से पूछा।

दिनेश ने गम्भीर होकर कहा, 'कल मुझे पिताजी ने बुलाया। उन्होंने मुझे समझाया। उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बताया।

मैंने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा आपने क्या जवाब दिया कर

दिया ?' दिनेश ने कहना शुरू किया, पिताजी बातों ही बातों मे मडी ले गए। चलने से पहले कोई जिक्र नही किया। मुझे जीप मे बैठने का आदेश दिया। पुलिस का कास्टेबल हमारे साथ जरूर था। जब हमने मडी म प्रवेश किया पिताजी ने ड्राइवर से थाने चलने को कहा। हम थाने म पहुच गए। थानेदार बैठा था। उसने मेरे बयान लिखकर तैयार कर रक्खे थे। मैने आनाकानी की। पिताजी ने अपनी प्रतिष्ठा की बात फिर दोहराई। थानेदार ने अपनी बेबसी जाहिर की। मैंने हस्ताक्षर कर दिए।'

मुझे दिनेश के व्यक्तित्व पर आश्चर्य हुआ। मैंने कहा जहा तक तुम्हारे और श्योलाल के झगड़े का प्रश्न है मुझे कुछ भी नही कहना चाहिए। मुझे दोनो ही घरो मे समान रूप से आदर मिलता है किन्तु मैं इतना ही पूछना चाहता हूँ कि जो कुछ हुआ तुम्हारी अनिच्छा से हुआ ?

म तो ऐसा ही मानता हूँ।' दिनेश बोला।

दिनेश कुछ देर चुप रहकर फिर बोला मैं आते समय रामसिंह स भी मिल आया। रामसिंह बहुत कमजोर हो रहा है। वह पीला पड गया है। चेहरे पर मुर्दनगी छायी हुई है। रामसिंह ने मुझसे कहा, भाई दिनेश जो कुछ हुआ उसके लिए म ही दोषी हूँ। मेरा भाग्य मुझे यहाँ ले आया। म सबका क्षमा प्रार्थी हूँ। मुझे आशा नही कि मैं कभी आप लोगो के दर्शन कर सकूँगा। रामसिंह फूट फूट कर रोने लगा। वह गदी कोठरी म बन्द है। उसके पेशाब के लिए कोठरी में ही व्यवस्था है। उसके आगे ताला लगा रहता है। पहरेदार चौबीस घंटे उसके आगे खडा रहता है। मुझे तो तरस आ गया उस पर।'

म दिनेश को किसी प्रकार की सम्मति नही दे सका। मैं असमजस

म था कि पुलिस ने ऐसी कार्यवाही क्यों की ? पुलिस श्योलाल से भी पैसे मांग चुकी थी। इधर से पतराम को भी राजी कर लिया।

रिनेश ने आगे की बातों के दौरान यह भी बता दिया कि पुलिस ने आज रामसिंह का चालान पेश कर दिया। वह अब जुडिशल के हवाले हो जायगा। शाम को जब मैं पतराम से मिला तो वह बहुत प्रसन्न था वह पिस्तौल टांगे बाहर गया था। मुझे आश्चर्य हुआ कि ये तथाकथित गांधीवादी अहिंसा के पुजारी क्या हिंसा म विश्वास करने लगे या आत्मरक्षा के विचार से सत्य और अहिंसा को ताक म रख बैठे। मैंने पहला प्रश्न किया—पिस्तौल अभी मोल लिया है क्या ?

पतराम ने मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, इस संसार म क्या नहीं करना पड़ता ?

गांधीवादी तो हिंसा म विश्वास ही नहीं करते। मैंने मजाक म कहा।

पतराम ने मुझे अपने साथ खींचते हुए कहा, यह तो गांधी जी का ही आत्मबल था कि वे बिना किसी सुरक्षा साधना के आग में कूद पड़ते थे और उसको शान्त कर देते थे। आज के गांधीवादी तो नाममात्र के है।'

'आपको इसका क्या आवश्यकता पड़ गई ?' मैंने पूछा, 'इस खद्दर के चोले पर यह शोभायमान नहीं दे रहा।

'भाई, उसने कहा यह तो दुश्मनों का बचाव है। श्योलाल की पार्टी मुझे मारना चाहता है। बल्कि मैं ही उनका दुश्मन बचा हूँ।'

मैंने कहा 'गांधीजी तो मन की हिंसा को भी दूर हटाते थे।

उनका मत था कि मन की हिंसा दूर करने पर दुश्मन के दिल से भी हिंसा दूर हो जाती है। आप अपना हृदय कलुषित रखो ही क्या ? दुश्मन अपने आप पिघल जायगा।

आज इस व्यावहारिक जगत मे सम्भव है क्या ?' पतराम बोला।

मैने कहा, 'गाधीजी की अहिंसा से कौनसी अहिंसा अधिक व्यावहारिक हो सकती है। उन्होंने समार की सबसे बडी सत्ता अहिंसा से फैक दी। आप यह साधारण सा काम नहीं कर सकते ?'

उनके पीछे उनका तप और साधना थी' पतराम बोला।

मैने कहा उनका स्वप्न था कि ऐसा पचायती राज बने जो सत्य और अहिंसा पर आधारित हो जिससे न्याय को समानता मिले और पारस्परिक सहयोग बढे जिससे ऐसे समाज का निर्माण हो कि राज्य की आवश्यकता ही नही रहे और देख हम यह रहे है कि न्याय इतना विकृत हो गया है कि जो कुछ हमारे पास था वह भी हम खो बैठे।'

पतराम मेरी बात पर गम्भीर होकर मौन हो गया। थोडी देर चुप रहने पर वह बोला, प्रश्न यहाँ गाधीजी और गाधीवाद का नहीं। प्रश्न प्रतिष्ठा का है। आज मैं अपनी बात छोड दूँ तो समाज की दृष्टि म यह मेरी पराजय होगी। म अपनी हार स्वीकार करना नही चाहता। मैं जानता हूँ कि मेरा कोई नुकसान नहीं हुआ। नुकसान तो श्योलाल का हुआ है। किन्तु प्रश्न हार और जीत का है। म अपनी बात कैसे छोड दूँ ?'

इसका तात्पय यह हुआ कि हम अपने पूर्वजो की कमाई खो बैठे और साथ म गाधीजी का भी। मैंने कहा।

म था कि पुलिस ने ऐसी कार्यवाही क्यों की ? पुलिस श्योलाल से भी पसे माग चुकी थी । इधर से पतराम को भी राजी कर लिया ।

िनेश ने आगे की बातो के दौरान यह भी बता दिया कि पुलिस ने आज रामसिंह का चालान पेश कर ि्या । वह अब जुडिशल के हवाले हो जायेगा । शाम को जब म पतराम से मिला तो वह बहुत प्रसन्न था वह पिस्तोल टागे बाहर खा था । मुझे आश्चय हुआ कि ये तथाकथित गाधीवादी अहिसा के पुजारी कब। हिसा म विश्वास करने लगे या आत्मरक्षा के विचार से सत्य और अहिसा को ताक म रख बठे । मैंने पहला प्रश्न किया—पिस्तौल अभी मोल लिया है क्या ?

पतराम ने मेरे कधे पर हाथ रखते हुए कहा, इस ससार म क्या नही करना पडता ?

गाधीवा्ी तो हिसा म विश्वास ही नही करते । मैने मजाक मे कहा ।

पतराम ने मुझे अपन साथ खीचते हुए कहा यह तो गाधी जी का ही आत्मबल था कि वे बिना किसी सुरक्षा साधना के आग मे कू पडत थे और उसको शान्त कर देते थे । आज के गाधीवा्ी तो नाममात्र क है ।

'आपको इसकी क्या आवश्यकता पड गई ? मने पूछा 'इस शहर के चोन पर यहग्नाभाममान नही दे रहा ।

भाई उसने कहा 'यह ता दुश्मनी का बचाव है । श्योलाल की पार्टी मुझे मारना चाहती है । क्योंक म ही उनका दुश्मन बचा हूँ ।'

मने कहा गाधीजी तो मन की हिंसा को भी दूर हटाते थे ।

प्रसन्नता

उनका मत था कि मन की हिंसा दूर करने पर दुश्मन के दिल से भी हिंसा दूर हो जाती है। आप अपना हृदय कलुषित रक्खो ही क्यों ? दुश्मन अपने आप पिघल जायगा।'

आज इस व्यावहारिक जगत म सम्भव है क्या ?' पतराम बोला।

मैंने कहा, 'गाधीजी की अहिंसा से कौनसी अहिंसा अधिक व्यावहारिक हो सकती है। उन्होंने ससार की सबसे बडी सत्ता अहिंसा से फेंक दी। आप यह साधारण सा काम नही कर सकते ?'

उनके पीछे उनका तप और साधना थी' पतराम बोला।

मने कहा उनका स्वप्न था कि ऐसा पचायती राज बने जो सत्य और अहिंसा पर आधारित हो जिससे न्याय की समानता मिले और पारस्परिक सहयोग बढे जिससे ऐसे समाज का निर्माण हो कि राज्य की आवश्यकता हो नही रहे और देख हम यह रहे हैं कि न्याय इतना विकृत हो गया है कि जो कुछ हमारे पास था वह भी हम खो बैठे।'

पतराम मेरी बात पर गम्भीर होकर मौन हो गया। थोडी देर चुप रहने पर वह बोला प्रश्न यहाँ गाधीजी और गाधीवाद का नहीं। प्रश्न प्रतिष्ठा का है। आज मैं अपनी बात छोड दूँ तो समाज की दृष्टि मे यह मेरी पराजय होगी। म अपनी हार स्वीकार करना नही चाहता। मैं जानता हूँ कि मेरा कोई नुकसान नही हुआ। नुकसान तो श्योलाल का हुआ है। किन्तु प्रश्न हार और जीत का है। मैं अपनी बात क्यो छोड दूँ ?'

इसका तात्पर्य यह हुआ कि हम अपने पूर्वजो की कमाई खो बठे और साथ म गाधीजी का भी। मैंने कहा।

२५

'फसल तो बडी अच्छी खडी है। माजी बोली। श्यालाल न प्रसन्नमुद्रा म कहा मेहनत भी तो लगी है। सारी रात खेत मे ही लगाता हूँ। किसी भी पशु को नही घुसने देता। चन के खित्तन बढिया फल है देखा माँ। माजी ने भस को नीरते हुए कहा बेटा, महनत का फल तो मीठा होता है। परमात्मा करे, रामसिंह भी आ जाये। उनको ओर से अभी कोई गवाह नही गया न ?

नही मा अब तक तो नही लेकिन एक खतरा है। वह तो पूरा होगा ही। श्योलाल बोला।

माजी बोली वह तो देखा जायगा। उस कमहीन थानेदार ने खराब किया। तू तो कहता था न वह मरा दोस्त है। पसा भी खा गया और मुकद्दमा भी बिगाड दिया।

श्योलाल ने कहा माँ आजकल दुनिया की स्थिति भी बडी विचित्र है। पहले जमाने मे अपनायत होती थी। अपनायत क आगे पसा कोई चीज नही थी। अपनायत स बढकर पसा हो गया और जमाने की खराबी म क्या कसर रह गई कि पसा भी हजम और काम भी पूरा नही। खर। देखा जायगा।

प्रेमलता

माजी ने एक लम्बी सास ली और बोली, 'वेश, सब कुछ परमात्मा पर है। वह खुश है तो सब खुश हैं। उसी का ध्यान रखना चाहिए। बुरे दिन भी एक साथ आते है। तरे बाप का यही घर था क्या ? यही पतराम तर बाप के आगे नाक रगडता था पच्चानवें छ्यानवें क अकाला म उसकी मा ओढो वे भी दिन थ, सच कहती हूँ, अपने घर की हालत पर रोती थी और दुनिया भर की बातें बनाकर सर बाजरो ल जाया करती थी। आज वही आदमी दुश्मन बन गया। वह एक बार यहाँ आए तो उसको सुनाऊ । मीयो की जमीन लेकर बना फिरता है। खैर! भगवान ता देखता है। इस हरीसिंह को क्या सूझी ? घर का बेटा भी अपना नहीं दूसरा को क्या कहू ? यह कह कर माजी ने एक लम्बी सांस ली और भैंस का दूध दूहन चली गई।

थोडा ही देर बाद माजी लौट आई और खाली बाल्टी रखते हुए बोली, दयोलाल भैंस तो बीमार है। बेटा दूध नहीं दिया।'

क्या बात हो गइ मा ? दयोलाल बोला।

किसी खेत म गई है चने खाये है आफरा है बाया हो गई। माजी एक ही सास म कह गई।

तू मिट्टी का तेल तो सु घा दयालाल बोला मैं मोतीराम को लाता हू। वह कुछ बताएगा।

दयोलाल यह कहकर बाहर निकल गया। माजी ने मिट्टी के तेल का फोआ लिया और उसे सु घाने लगी।

माजी की यह भैंस तीजाए (तीसरी बार ब्याई हुई)थी। इनके पहल दो भैंसें और थी। एक भैंस हरीसिंह को दे दी गई। अब इनके पास

दो भरी रह गई । भरों दोनो ही दण्डी थी । इस भैस का दूध अधिक था। इससे इस घर का गुजारा चलता था । बेचने पर ८००–९०० रु० से कम की नही थी ।

मांजी के मिट्टी व तेल का भैस के रोग पर कोई असर नही था । तब हरीराम की सलाह से बाजरे को हराने का काढ़ा तयार किया गया किन्तु भैस ठीक स्थिति में नही आ पाई ।

वायुमडल म अन्य दिनो की अपेक्षा शीतलता अधिक थी । आकाश म बादल भी नजर आ रहे थे । मांजी को कुछ बूदा बूदी की भी आशका हुई । हवा से सर्दी भी बढ़ने की सम्भावना था । मांजी ने भैस र ऊपर बोरी का पाल डाल दिया और अन्दर ऐसे स्थान पर उसको बाध दिया जहाँ हवा का असर न हो ।

श्योलाल की बहू और बच्चो ने तो अपनी रुचि के अनुसार खिचड़ी खा ली । दूध नही था इसलिए कुछ घी और शक्कर डालकर गुजारा कर लिया । मांजी ने एक ग्रास मुह म लिया और उसे पानी स निगल कर खड़ी हो गई । भैस का दर्द उसके गले म अटक गया । वह फिर उसको सम्हालने गई । भैस की स्थिति और खराब हो गई । आफरा बढ़ता रहा । भैस लेट गई ।

हरीराम ने दूसरा काढा बतलाया । माजी तयार करने लगी । श्योलाल की भी प्रतीक्षा थी किन्तु वह नही आया ।

रात ने भयानक रूप धारण कर लिया । पश्चिम म बिजली चमकने लगी । माजी ने काढा दिया और भैस कुछ उगाली निकालने लगी । माजी को थोडी शान्ति मिली । वह सर्दी का पूरा इतजाम करने घर म आ गई । मैने पूछा, माजी, भैस कैसी है ?

'भैंस तो ठीक मालूम हो रही है किन्तु श्योलाल नहीं आया।' माजी बोली।

माजी अपने बुढ़ापे के लक्षणानुसार 'राम का नाम लेकर लेट गई। मुझे भी बैठने के लिए कहा। माजी को चैन नहीं मिला। वह एक बार फिर भैंस को सम्हालने चली गई। माजी ने आकर संतोष प्रकट किया।

श्योलाल के विलम्ब की क्षणिक चिंता से माँजी पहले तो कहती रही 'श्योलाल नहीं आया। किन्तु श्योलाल की भ्रान्त के अनुसार वह फिर निश्चिन्त हो गई और आराम से लेट गई। माजी ने कहा, बेटा जमाना कितना बदल गया है। मैं जब छोटी थी उस समय की दुनियाँ म और आज की दुनियाँ मे बडा अन्तर है। बागड म अब भी वही ढग है। मेरी छोटी का ही विवाह हो गया था। मैं पहली बार ससुराल म आई तब मुझे कुछ भी ज्ञान नहीं था। न सास ससुर का ख्याल था न पति पत्नी का। भोला भाला जमाना होता था वह। न रेल थी, न मोटर, न साइकिल। ऊँट मे ही आने जाने का इन्तजाम था। मेरे पिता मेरे साथ आए थे। वापिस जब हम जाने लगे तो बडी तकलीफ उठानी पडी। तूने बागड देखा है बेटा ?'

मैने कहा हा चलती गाडी स।'

माँजी ने अपनी कहानी शुरु की, 'हाँ तो हम रवाना हो गए। भयकर गर्मी थी। शाम को ढलते दिन म गर्मी कम हो गई थी' खाना पीना हमने इसी घर म कर लिया था। कुछ ही समय बाद आकाश मे हल्के हल्के बादल छाने लगे। सफर कम होने के कारण हमने पानी नहीं लिया था। यह हमारी गलती थी। मेरे श्वसुर ने कहा भी किन्तु मेरे

पिताजी ने कहा कि काई दूर तो है नही इतनी क्या जरूरत है। हम चलते रहे। मर पीहर के बीच में बडे बडे रेत के टाले आते है। हम कभी धोरो के ऊपर चढते और कभी नीचे उतरते। इस प्रकार हम चलते जा रह थे। हमारा ऊँट बडा सीधा और समझदार था। दिन छिप चुका था। थोडा थोडा अँधेरा होने लगा। मरे पिताजी ने अपना कोई पुराना गान शुरु कर दिया जिसकी कडिया मुझ अब याद नही। इतने म पिताजी को कुछ भ्रम हुआ कि ऊट रास्ता छोड गया। इस प्रदेश म रेतील रास्ते एसे होते है कि जब कुछ आदमी या पशु चलत है तो बन जाते है और नही चलत तो हवा के तेज झोको स मिट जाते है।

मैंने बीच म रोकते हुए कहा, माजी जीवन भी ऐसा ही है। बडे बडे आदमी इसम रास्त बना जाते है। उन पर जब तक आदमी चलत है तब तक तो वे रहते हैं और यदि कोई हवा का तेज झोका आ गया तो व उनको मिटा देते हैं। हा, माजी आग चलो।'

माजी फिर आगे बढी 'पिताजी कहने लगे कि शायद ऊँट रास्ता भूल गया। व नीचे उतरे और ऊँट की मोरी पकड कर ठीक रास्ता लेने की नियत से उन्होंने वह राह छोड दिया। वास्तव म ऊट ठीक राह पर चल रहा था। अधरे मे पिताजी ठीक अनुमान नहीं लगा सके। वे ऊँट सहित एक धोरे पर चढे। म ऊपर चढी हुई थी। व उस धोरे पर चलते चलत फिर ऊँट सहित नीचे उतर गए। सुनसान रात्रि थी। कही पक्षी तक की आवाज नहीं थी। पिताजी ऊँट को लिए ऊबड खाबड वीरान जगल म भटकने लगे। कहा रास्ता नही मिला। आकाश मे बादलों के स्थान पर आंधी चलने लगी और नभ का रूप विकराल बन गया। आस

पास के मोटे मोटे वक्ष एक भयकर आवाज करने लगे। मेरे पिताजी को तारा का ज्ञान था किन्तु तारे भी कही दिखाई नही दे रहे थे। पिताजी निराश होकर एक धोरे पर फिर ठहर गए। ऊँट को बिठला दिया। मुझे भी नीचे उतार दिया। पिताजी बोले, बेटी ध्यान से सुन, कही आवाज सुनती है ?' हम दोनो थोडी देर के लिए चुप हो गए। दूर क्षितिज मे एक आवाज सुनी। वह कुत्तो के भोकने की आवाज थी। इसके अतिरिक्त आधी की सूसाट भरी आवाज इसके अतिरिक्त कुछ भी सुनने म नही आ रहा था। मैंने कहा, 'बहुत दूर कुत्तो के भोकने की धीमी धीमी आवाज आ रही है।' पिताजी ने भी कान लगाए। उनको भी कुछ आभास हुआ। पिताजी ने मुझे फिर ऊँट पर चढने का आदेश दिया। हम उसी ओर चल पडे जिधर से वह आवाज आई, किन्तु रास्ता नहीं था। मुझे प्यास लग चुकी थी। पिताजी ने बीच ही मे कहा, 'क्यो बेटी, प्यास तो नही लगी ?'

'थोडी थोडी लगी है। मैंने कहा।

उन्होने कुछ फोग (मरुभूमि का एक छोटा वक्ष) के हरे पत्ते तोडे मुझे दिए और कुछ खुद ने चबा लिए। उनकी प्यास बढ चुकी थी जैसा कि उन्होने बाद मे बतलाया। कुछ दूर चलने पर उनको रास्ता भी मिल गया। वे रास्ते पर चलने लगे। उनको कुछ धीरज मिला। आँधी की गति और तेज हो गई। किन्तु दुर्भाग्य से वह रास्ता भी आगे जाकर रुक गया। हम फिर निरुद्देश्य विचरने लगे। कुत्तों की आवाज भी मौन हो गई। पिताजी फिर निराश हो गए। मेरी प्यास तीव्र हो गई। पिताजी की हालत मेरे से भी गम्भीर थी। पिताजी बोले, रात जगल म

बितानी होगी। शायद आधी रात बीत गई है। उन्होंने फिर पूछा, 'तेरी प्यास का क्या हाल है ?' मैंने कह दिया 'प्यास बहुत तेज लग रही है पिताजी।' कितना महत्व था उस समय पानी का ! अभाव में ही किसी चीज की कीमत आँकी जाती है। पिताजी ने फिर हिम्मत की। ऊँट पर मुझे चढ़ाया और खुद भी चढ़ बैठे। एक छोटी सी डंडी (रास्ता) पर ऊँट को छोड़ दिया। उनके दिमाग में आया कि ऊँट कभी रास्ता नहीं छोड़ता। आज सभी कुछ इसी पर छोड़ दिया जाय। रेगिस्तान में मीलों तक गाँव नहीं आते। रास्ता भूलने पर अनेकों प्यास से तड़फ कर मर जाते हैं। हमारी मौत में कोई संदेह नहीं था। प्यास का भ्रम होने पर प्यास अधिक सताती है और आदमी निराशा में तड़फ तड़फ कर मर जाता है। यही स्थिति हमारी थी। पिताजी की थोड़ी सी आशा रह गई थी और यह उनकी अंतिम घड़ी हो रही थी। ऊँट धीरे धीरे चलने लगा। ईश्वर की ऐसी अनुकम्पा हुई कि थोड़ा ही देर में हम कुछ भैंसें नजर आई। रात को भैंस और पाव में अंतर नहीं दिखाई देता। पिताजी नीचे उतर कर पास गए तो भैंस ने पूँछ हिला कर अपने अस्तित्व का आभास कराया। हमें कुछ ढाढ़स बंधा कि है तो गाँव ही पास कोई होगा। थोड़ा देर में कुछ गाँव की बाड़ नजर आई और एक कुत्ते के भौंकने की आवाज भी सुनाई दी। हम पूरा विश्वास हो गया। प्यास स्वयं ही मिटती नजर आई। हम गाँव में चले गए। एक अनजान घर में घुसे। घर वालों को जगाया। कहानी सुनाने से पहले पेट भर कर पानी पिया। यह गाँव हमारा नहीं था किन्तु उस समय वह कितना हमारा था यह हमारी आत्मा ही जानती है।

प्रेमलता

माजी ने एक गहरी सास के साथ यह कहानी समाप्त की। मैंने माजी की कहानी मे मनुष्य की विवशता से अवश्य द्रवीभूत हुआ किन्तु उसका प्रसग समझ मे नही आया। माजी ने थोड़ी देर बाद कहा, 'बेटा, मैंने यह कहानी इसलिए कहा कि आदमी कितना कमजोर है? वह अपने जीवन मे रास्ता भूल जाता है और उसके परिणाम भयकर होते हैं किन्तु रास्ता भुलाने वाला भी परमात्मा और उसको रास्ता दिखाने वाला भी परमात्मा। जीवन म मने कभी दुख नहीं देखा। मने या तो उस दिन दुख देखा या अब देख रही हूँ। हम रास्ता भूले हुए है भटके हुए हैं। हम उबारने वाला ही परमात्मा है। हे ईश्वर! तेरी ही माया है।

यह कहकर माजी अपने आसू पोछने लगी। आसू दुख को हल्का कर देते हैं।

श्योलाल नही आया। यह कहकर माजी फिर भैंस को सम्हालने चली गई।

आकाश म बादलो की गडगडाहट शुरु हो गई। चकाचौंध करने वाली बिजली तडकने लगी। मोटी मोटी बूँदें गिरने लगी। माजी भागती हुई अन्दर आई। अफसोस से कहने लगी 'भैंस तो नही बचगी। आफरा बडा तकडा है। श्योलाल भी नही आया। इतनी देर कैसे हो गई?

बूदें और तेज हो गई। छोटे छोटे ओले पड़ने शुरु हो गए। बिजली की रोशनी म साफ दिखाई दे रहे थे। माजी बहू और बच्चे सब देखने लगे। फिर जोर जोर स बडे बडे ओले ही बरसने लगे। कुछ ही क्षणो म आगन ओलो स सफेद हो गया। माजी ने दुख के साथ कहा, भगवान् की क्या मर्जी है! फसल भरी खडी है। काटने वाली हो रही है। सारा

प्रेमलता

नष्ट हो गई होगी।' किन्तु ओला की वर्षा बन्द नहीं हुई। ओले और बडे बडे ओले। 'हाय राम' कह कर बहू लेट गई। बच्चे प्रसन्न थे। उनको इससे उत्पन्न होने वाले नुकसान का आभास नही था।

मैं अपने कमरे मे चला गया था। बच्चे सो चुके थे। बहू भी खर्राटे लेने लग गई। हरीराम को हरी के नाम के अतिरिक्त चिन्ता ही क्या थी, किन्तु माजी रात भर भैस के चारो ओर चक्कर काटती रही। ओले गिरने के बाद तेज तीखी ठंडी हवा चलने लगी। माजी बोरी ओढे हुई थी और घूम रही थी। वर्षा शान्त हो चुकी थी। माजी के दिन की दुनिया को पढने वाला माजी के अलावा कोई नही था। दयोलाल रात भर नहीं आया।

सुबह जब मै उठा मालूम हुआ कि भैस मर चुकी थी। दयोलाल सुबह जब आया तब भैंस को मरी हुई देखकर तो दुख हुआ ही किन्तु माजी को खाट पर पडी देखकर और भी अधिक चिन्ता बढी। दद की चोट से दयालाल का कलेजा अधिक कठोर बनता जा रहा था और इस कठोरता का द्योतक था उसका लाह की तरह का सिकुडता हुआ काला शरीर तथा अश्रुहीन धँसती हुई काली आँखें। पुरुष के पुरुषत्व का यही रूप होता है।

माजी ने भैस की मौत की खबर सुनाई तो दयोलाल ने ओलो से फसलो के विनाश की बात बताई। इस प्रतिक्रिया स्वरूप दोनो के चेहरे देखने लायक थे। ईश्वर के सहारे की बात कहकर दयालाल ने माजी के हाथ की नब्ज देखी। शरीर गरम तवे की तरह जल रहा था। दयालाल ने कहा, रात भर घूमती रही होगी। तेरी आस्था है न। भैस को मरना था तू उसे रोक सकती थी? मानीराम को ढूंढने के लिए मुझे दूसरे गाँव जाना

पडा। मौसम खराब होने से रुकना पडा, आ नहीं सका। वह क्या कर लेता ? मौत के आगे कौनसे वद्य होते है ? बूटी की बू टो नही।' माजी को चाय पिलाने का आदेश देकर स्वय वद्य के पास चला गया।

श्योलाल की परिस्थितियों के साथ समझौता न॰ो हो सका। समय के विकराल दात श्योलाल के परिवार को निगलने को तुले हुए थे। श्योलाल के पास ऐसी कोई शक्ति नहीं थी जो इस विवशता से निकाल सके। जहाँ भी हाथ डालना था वहाँ सोना मिट्टी हो जाती थी। कहते है कि पाप का परिणाम बुरा होता है। समाज की निगाह म श्यालाल ने कोई एसा दुष्कम नही किया, परमात्मा का माप-दण्ड कोई दूसरा हो तो बात दूसरी है। किन्तु समाज के नियम अपने होते हैं और परमात्मा क अपने। समाज अपने नियमा के उल्लघन करने पर दण्डित करता है और ईश्वर अपने। ईश्वर के नियम विशेष देह रूप तक सीमित नही रहत होंगे। उनका सम्बन्ध आत्मा से होता है जो विभिन्न रूप धारण करती रहती हा। सम्भवत ईश्वर अपना विधान इसी प्रकार का रखता है। इस विधान के अनुसार ही श्योलाल किसी दण्ड का भागी हा सकता हागा।

काल म आपसे (मधुप जी) सम्पक रहा। किन्तु मधुपजी ने एक रहस्योद घाटन किया है जो मुझे दहलाने वाला है। उन्होंने मुझे बताया कि वे आपसे दिल्ली मे मिले और उन्होंने मेरे बारे म कुछ बतलाया। उनका मत है कि आपने मेरे पति को उन बातो का विवरण दिया होगा और स्थिति म इतना बिगाड आया।

प्रकाशजी आप नारी हृदय को समझने का प्रयत्न करें। नारी का सवस्व उसका पति होता है। मैंने भूल की है। मेरी वह भूल नारी के पूण विकसित रूप का भूल नही है। जब मैंने भूल की वह मेरा कुमारी रूप था। प्रेम क्या है? उसकी कितनी महत्ता है? इस सम्बन्ध मे म पूण अनजान थी। वह मेरे भोलेपन का आवेग था और म उसम बह गई। मरे विचारो के अपरिपक्व रूप ने अनजाने म ऊबड खाबड राह पकड ली तो मेरी उस भूल के इतने दुष्परिणाम नहीं होने चाहिए थे जितने हो रहे हैं। म मधुपजी को भी इसलिए दोष नही देना चाहती, क्योंकि भूल मेरी ओर से थी। पुरुष नारी को उपभोग की वस्तु मानता है। म जब उनके उप भोग के लिए अपने आपको प्रस्तुत कर रही थी तब वे चूकते ही क्या? उनकी स्त्री न निश्चित रूप से नारी धम निभाया।

मैं अपने पति को प्यार करती हूँ। केवल नारी धम के नाते नही, किन्तु वास्तव म मुझे उनसे प्रेम है। यदि वे मुझे छोड रहे हैं तो मैं अपने सवप्रिय की सौगन्ध खाकर कहती हूँ कि मैं उनकी मूर्ति की पूजा करके अपना जीवनयापन करूँगी।

आपने यदि उनको कुछ बतला दिया है तो यह आपका ही कत्तव्य हो जाता है कि आप मुझे इस मकम्भाव से उबारें। यदि आपने

२६

जब मैंने लिफाफा खोला तो सुधा का पत्र देखकर आश्चर्य हुआ मैंने पत्र पढ़ना शुरु किया --

श्रीयुत् प्रकाश जी,

आप शायद मेरा पत्र देखकर आश्चर्य चकित होगे। मुझे विवश होकर पत्र डालना पड़ा। मेरे पति तथा आपके मित्र का पत्र मुझे मिला। मैंने इससे पूर्व दो पत्र उनको डाले और मुझे आज उनका पत्र मिला। पत्र पढ़कर मुझे निराशा हुई।

आपको शायद ज्ञात होगा कि मैंने अपनी पुस्तक प्रेम लता प्रकाशनार्थ भेज रक्खी है। आपको यह मालूम होगा ही कि मधुप जी मुझे इस कार्य मे पूर्ण सहयोग दे रहे है। मेरे पास मधुप जी के पत्र भी आते रहते हैं। अभी अभी मुझे एक पत्र मिला। मैंने अपनी स्थिति का पूर्ण विवरण देकर उनको अवगत कराया। मैंने यह भी बतला दिया कि मेरे पति को आपसे (मधुप जी) बड़ी चिढ है। इसका कारण मैंने उनको केवल यही बतलाया कि मैं कविता करती हूँ और मेरा अपने यौवन के प्रारम्भिक

काल मे आपसे (मधुप जी) सम्पर्क रहा। किन्तु मधुपजी ने एक रहस्योद्घाटन किया है जो मुझे दहलाने वाला है। उन्होंने मुझे बताया कि वे आपसे दिल्ली म मिले और उन्होंने मेरे बारे मे कुछ बतलाया। उनका मत है कि आपने मेरे पति को उन बातो का विवरण दिया होगा और स्थिति म इतना बिगाड आया।

प्रकाशजी आप नारी हृदय को समझने का प्रयत्न करें। नारी का सवस्व उसका पति होता है। मैंने भूल की है। मेरी वह भूल नारी के पूर्ण विकसित रूप का भूल नही है। जब मैंने भूल की वह मेरा कुमारी रूप था। प्रेम क्या है ? उसकी कितनी महत्ता है ? इस सम्बन्ध मे मैं पूर्ण अनजान थी। वह मेरे भोलेपन का आवेग था और म उसम बह गई। मेरे विचारो के अपरिपक्व रूप ने अनजाने में ऊबड खाबड राह पकड ली तो मेरी उस भूल के इतने दुष्परिणाम नहीं होने चाहिए थे जितने हो रहे हैं। म मधुपजी को भी इसलिए दोष नहीं देना चाहती, क्योकि भूल मेरी ओर से थी। पुरुष नारी को उपभोग की वस्तु मानता है। मैं जब उनके उपभोग के लिए अपने आपको प्रस्तुत कर रही थी तब वे चूकते ही क्या ? उनकी स्त्री न निश्चित रूप से नारी धर्म निभाया।

मैं अपने पति को प्यार करती हूँ। केवल नारी धर्म के नाते नही, किन्तु वास्तव में मुझे उनसे प्रेम है। यदि वे मुझे छोड रहे हैं तो म अपने सर्वप्रिय की सौगन्ध खाकर कहती हूँ कि मैं उनकी मूर्ति की पूजा करके अपना जीवनयापन करूँगी।

आपने यदि उनको कुछ बतला दिया है तो यह आपका ही कर्तव्य हो जाता है कि आप मुझे इस सङ्कटकाल से उबारें। यदि आपने

प्रेमलता

कुछ नहीं बतलाया तो आपको नारी हित को ध्यान में रखकर बात नहीं बनलानी होगी। इसके परिणाम मेरे लिए क्या हो सकते हैं यह आप जानते ही हैं। मेरा यह धर्म नहीं था कि आपको पत्र डालूँ किन्तु परिस्थितियों ने मुझे विवश कर दिया।

आप मुझे उपरोक्त पते से पत्र लिखें और मेरे पत्र को अभी जलाकर राख कर देवें। आपसे नारी की माँग यह है।

आपकी एक विवश बहन,

सुधा

पत्र को घूर घूर कर मैंने उसी समय अग्नि के हवाले कर दिया। मैंने नारी के प्रति अपना कर्तव्य निभा दिया। मुझे सुधा की विवशता पर सहानुभूति था ही वह और अधिक बढ़ गई। मैंने अपनी विगत घटनाओं पर सिंहावलोकन किया। मुझे कहीं भी त्रुटि नहीं दिखाई दी।

मैंने तुरन्त अपनी कलम उठाई और सुधा को एक पत्र लिख दिया —

विवश नारी,

मैंने ऐसी कोई त्रुटि नहीं की है और न ही करूँगा जिससे तुम्हारे भविष्य पर कुप्रभाव पड़े। धन्यवाद!

तुम्हारा शुभाकांक्षी,

प्रकाश

पत्र डालने के विचार से जब मैं सीढ़ी से नीचे उतरा तो मुझे जो समाचार मिला वह शुभ नहीं था। माजी की हालत खराब है' श्यामलाल ने कहा। मैंने मन में सोचा कि पत्र ~~~ माजी

दूँगा। मैं अविलम्ब पत्र डालकर वापिस आया तो समाचार मिल गया कि माजी ने अपना जीवन त्याग दिया। माजी का शव बाहर आगन मे लिटा दिया गया। श्योलाल फूट फूट कर रोने लगा। बच्चे बिलबिलाने लगे। पुष्पा के बाद माजी भी गई और इस घर का सबसे बडा प्रकाश बुझ गया। श्योलाल भी मंत्रणा का एक मात्र सहारा चला गया। घर का मार्गदर्शन लुप्त हो गया।

मुझे पुष्पा याद आ गई। एक दिन इस आगन मे वह भी इसी प्रकार लिटाई गई थी और तभी से इस घर के दुर्भाग्य का सूत्रपात हुआ था। आज माजी भी गई। यह मौत है जो सभी को ले जाती है। इस जीवन के क्रम में एकमात्र भयावही घटना अमीर और गरीब सबके लिए समान, प्रकृति का एकमात्र आधिपत्य इस वैभव और ऐश्वर्य पर करारा व्यंग्य असाध्य दर्दो का अन्तिम आश्रय दार्शनिक के लिए नवजीवन का जागरण, प्राणवाना के लिए एक क्षणिक वैराग्य और फिर वही जीवन की भागदौड, पट भरने के प्रयत्न, अर्थ एकत्रित करने के प्रयास झूठ सच, छल, कपट बेईमानी, धोखा, निरंतर बेचनी से दिन रात, केवल जीवन के लिए और अन्त में यह मौत सब कुछ यही इसी धरातल पर। लोग कुछ दिन बात करते हैं अच्छे की अच्छाई और बुरे की बुराई और फिर भुलावट। अपनी चिन्ता से भी मुक्त नही होता इन्सान। किसको फुरसत है गये हुओं को याद करने की? बडे से बडे चले गए और जा रहे हैं और यही सृष्टि का क्रम है और इसी प्रकार चलता रहेगा। पृथ्वी गोल है ये ग्रह भी गोल हैं और यह जीवन भी गोल है। यहाँ किसी का आदि नहीं, किसी का अन्त नहीं।

माजी का धूमधाम से अन्तिम सस्कार सम्पन्न हुआ। वृद्ध की

मौत गुणी की बात मानी जाती है। गाँव के लगभग सभी लोग सम्मिलित थे। श्मशान म अच्छी खासी भीड थी। मरने के बाद माँजी के गुण चौगुने रूप म सामने आए। उसी दिन महमानो की भीड लग गई। मृत्यु भोज का व्यय हरीसिंह और दयोलाल म बट गया। इस खर्चे के भुगतान म दयोलाल की बहू बिना गहना के हो गई।

घर गृहस्थी म विचार विमर्श के लिए माँजी का स्थान दयोलाल की बहू ने ल लिया। दयोलाल और उसकी बहू के सामने भविष्य की सारी तस्वीर थी। खेत सारी खेती नष्ट कर ही चुके थे केवल बीस मन अनाज पल्ले पडा। दयोलाल सोच रहा था कि यह अनाज तो केवल दो चार महीने चलगा। बच्चो के लिए दूध की समस्या की पूर्ति माँजी की मृत्यु क तुरन्त बाद करना पडी। महमानों की आवभगत मौत क दूध से पार पडने वाली नहीं थी। इसके लिए दयोलाल को वह राशि खर्च करनी पडी जो मुकद्दम क लिए रखी थी। मुकद्दमा चल ही रहा था। वकील की फीस आने जाने का खर्चा, रामसिंह की रोटी, जल-पानी को खिलाना पिलाना आदि इतना था कि दयोलाल को सोचने क लिए बाध्य होना पडा। दयोलाल का यह चिन्ता मानी जा रही थी।

मुकदमे की स्थिति भी बडी विकट था। प्रतिपक्षी वकील इस

देगा और अपने मुकद्दम को ठीक राह देन के लिए पैसो के अलावा कोई साधन नहीं था। पतराम के आदमी तो अडिग थे किन्तु वे भी श्योलाल को सताते ही थ। उनके सामने श्योलाल को झुकना पडता था और वे भी इस अवसर का लाभ उठाते थे। इससे भी श्योलाल का आर्थिक हानि ही होती थी। इस प्रकार कुल मिला कर श्योलाल का ढाचा बुरी तरह डग मगा गया।

एक दिन श्योलाल ने घर वाली स कहा अपने नोहरे म एक कोठा बना लवें।

इस तगी मे मकान कैसे बनेगा ?' घर वाली बोली। 'कोठा ता बनाना होगा और अपनी सारी तगी दूर हो जायगी।' श्योलाल बोला।

'कोठा बनाने स तगी कैसे दूर होगी ? घर वाली ने ना समझी के भाव म कहा।

श्योलाल बाला, 'यह मकान बेचना हागा।'

श्योलाल की बहू न सलाह दी अच्छा है आप अपने पिताजी स पूछ लीजिए।

श्योलाल का अपनी बहू की बात अनुकूल लगी। वह अपने पिता हरीराम के पास गया। उसने अपने पिता स कहा, पिताजी आपसे राय लेने आया हूँ।

हरीराम न 'राम भज राम भज की अपनी सदा की रट के साथ कहा, 'हा बेटा, बोल।

घर म पसा नहीं रहा। श्योलाल बोला 'उधार कहीं मिलता नही।

हरीराम बोला, 'लक्ष्मी बडी चंचल होती है बेटा। वह किसी के पास स्थिर नही रहती। घर का काम चलना चाहिए।

'घर का काम मुश्किल हो रहा है पिताजी।' श्योलाल बोला और उसने सारी स्थिति का पूरा विवरण दे दिया।

सारी बात को हरीराम ध्यान से सुन गया और फिर माला फेरता हुआ बोला, 'तो इसका मतलब यह हुआ कि तू अपना घर बेचना चाहता है।'

'और कोई चारा नहीं है पिताजी।' श्योलाल बोला।

हरीराम का पारा चढ गया। वह बोला तुझे मालूम नही है कि यह जमीन और घर कैसे बने है ? तू इनको बेचना चाहता है। जमीन किसान की जिन्दगी है। जमीन गई तो किसान की जिन्दगी गई। घर आदमी की इज्जत है। तूने जमीन बेच दी तो जिन्दगी बेच दी और अब घर बेच रहा है तो अपनी इज्जत बेच रहा है। तूने जिन्दगी बेची मैं चुप रहा। अब इज्जत बेचना चाहता है। मैं चुप नहीं रहूँगा। घर मेरा है तेरा नही। तू चाहता है कि मैं इसको छोडकर चला जाऊँगा। तेरे साथ मारा मारा घूमूँगा। तू मेरी मिट्टी पलीत करना चाहता है। मै यह नही होने दूँगा।'

श्योलाल के बात समझ म नहीं आई। वह बोला, 'पिताजी, इज्जत रहेगी कैसे ? वह तो वैसे ही जा रही है। पैसा नही होगा तो मुकदमा बिगड जायगा। रामसिंह को कैद हो जायगी। वकील की फीस देनी है। पुलिस वालों को राजी रखना है। ओला से खेती नष्ट हो ही गई। जो कुछ बचा था वह सारा लग चुका है।

हरीराम शान्त नहीं रह सका। वह अपनी बात पर अटल रहते हुए बोला, मन समझा कि ये छोकरे घर बसा लगे लेकिन घर तो उजड रहा है। तुझे क्या जरूरत थी यह झमेट करने की। इज्जत से रोटी मिल रही थी। फिर चला तू मुकद्मे बाजी म। अरे, एक हैवान के साथ सभी हैवान हो जाते है क्या ? वह पतराम जो दाने दान के लिए तरस रहा था मैने उस भूखे को रोटी दी थी। वह मेरी बात नही मानता क्या। वह पुराने दिन नही भूल सकता। आदमी नमक खाकर नीचे देखता है और जूत खाकर ऊपर। मैंने उसको अपना नमक खिलाया है। मैं नही समझता कि वह मेरा विरोध कैसे करता है ?'

श्यामलाल अपनी विवशता को कैसे प्रकट करता ? वह अपने पिता की सामर्थ्य को समझता था किन्तु वह सामर्थ्य इन बदलती परिस्थितियो म मूल्य हीन हो चुकी थी। श्यामलाल ने अपनी प्रतिष्ठा अपने क्षेत्र म बनाई थी उसका रूप कुछ और था और हरीराम ने अपनी प्रतिष्ठा जिन परिस्थितियो म बनाई थी वह समय अब बदल चुका था। इसीलिए श्यामलाल ने अपने पिता की बात का उचित मूल्यांकन नही किया था। अपने बाप के केवल अस्तित्व की इज्जत रखने के लिए ही उसने अपने बाप से बात की थी। उसे यह ज्ञात नही था कि इस शान्त जल मे भी बवडर आ सकता था। यह विरोध ही नहीं था किन्तु एक ऐसी अड़चन थी जिसका समाधान नही मिल रहा था। बाप का खुले आम विरोध करना और उसकी बात को महत्त्व न देना भी श्यामलाल नहीं चाहता था। वह चाहता था कि बाप केवल हां कह दे। किन्तु यह हाँ पिता के मुँह से कैसे निकाली जाय यह उसकी समझ से बाहर थी। अत वह इतना ही बोला 'तो पिताजी, क्या करूँ ?'

हरीराम ने उसी स्वर मे कहा, क्या करे ? यह भी कोई समस्या है। नेतागिरी करते है। मोटी मोटी बातें करते हैं। सरपच बन गए बस बादशाह बन गए। न घर की आन न परिवार की आन और न अपने माता पिता की आन। ऊपर का एक थोथा दिखावा। यह दुनियाँ सब जानती है। इसान हैवान हो गया है। वह सभ्यता की चमक दमक से अपनी कालिमा को ढकना चाहता है। लेकिन यह रग कच्चा है, जल्दी उतर जायगा। तू अपने आपको इसान मानता है और इसानियत पर चलना चाहता है तो हैवान से डरता क्या है ? तू उससे डरता है तो तू अभी पक्का इसान नही है। असली इसान वह है जिसको देखकर हैवान अपने हथियार डाल दे। वह तुम्हारा गाँधी नोआखाली म गया तो हैवान भाग खडा हुआ। कौनसा हथियार था उसके पास ? दुनियाँ ने आज तक वसा सम्मान नहीं दिया। वह धनराम, क्या कर रहा है वह ? मेरे बेटे रामसिह ने क्या बिगाडा उसका ? बरबाद हुआ तो हमारा घर हुआ। बेगुनाह बहन मरी तो उसकी मरी और बदला ले रहा है धनराम। वह उजाडना चाहता है तुझे ?

बूढे का शरीर कापने लगा। उसके कमजोर हाथ हिलने लगे और उसकी माला डगमगाने लगी।

बूढा खाट स खडा हो गया और दयालाल का हाथ पकड कर बोला, 'चल म चलता हूँ तेरे साथ। क्या करता है वह ?'

दयालाल पिता के क्रोध का सामना करन म अपन आपको असमर्थ अनुभव कर रहा था। वह विरोध नहीं करना चाहता था कि तु यह हठ भी बडा विचित्र था। स्कूल क बच्चों की सी बात थोडी हो थी कि आमना सामना हुआ और निपटारा हो गया। वह बठा बठा ही बोला

धाप चाहते हो कि म वहाँ जाकर अपनी नाक रगड़ूँ ।'

हरीराम का क्रोध कुछ शान्त हुआ किन्तु भावनाओं मे परिवतन के भाव उसके चेहरे पर नहीं आए। उसने कुछ धयपूण शब्दों मे कहा, 'बेटा, इन्सान इन्सानियत का साम्राज्य चाहता है और हैवान हैवानियत का। इन्सान अपना राज कायम करने के लिए हैवान को बदलता है। उसकी प्रतिष्ठा यही है कि इन्सानियत जीते। वह अधिक से अधिक इन्सान बनायेगा। पतराम बुरा नहीं है। कोई भी आदमी बुरा नहीं होता। उसका शतान जागता है तो वह शतान बन जाता है और यदि शैतान दब जाता है तो इन्सान जागता है। मने दुनियाँ देखी है। एक का शैतान जागता है तो दूसरे का भी इन्सान दब जाता है। उसके शतान ने तेरे शैतान को जगा दिया है। तू अपना इन्सान जगा। उसका इन्सान जरूर जागेगा और फिर इन्सान ही जीतेगा। तुझे वहाँ जाने में शम आती है। तेरी प्रतिष्ठा घटती है। यही तेरा शैतान है। तू इसको मार और मेरे साथ चल।

× × ×

श्योलाल और हरीराम पतराम की कोठी के समीप पहुँच गए। जब वे काठी के अहाते मे घुसे, एक जोर का धमाका सुनाई दिया। यह शायद पिस्तौल या बन्दूक के चलने की आवाज थी। श्योलाल थोडा झिझका किन्तु हरीराम ने उसे रुकने नहीं दिया। 'इन्सान इन धमाकों से नहीं डरता, श्योलाल। इन्सान का शरीर मिटने से इन्सान नहीं मिटता यह कहकर हरीराम श्योलाल के साथ आगे चल पडा। भीतर प्रवेश करने से पहले भीतर से कोलाहल की भी आवाज आई। यह आवाज स्त्री की थी। श्योलाल और हरीराम दोनों ने एक साथ कोठी मे प्रवेश किया।

इन्होने वहा एक विचित्र दृश्य देखा । पतराम नीचे मुह किए कुर्सी पर बैठा था । पतराम के बहू के हाथ मे पिस्तौल था । सामने था दिनेश और उसके सामने थी सुधा जिसके गोद मे बच्ची थी । हरीराम और श्योलाल को देखकर भी पतराम का मुँह ऊँचा नही हुआ । वातावरण एकदम शात हो गया । दोना इस रहस्य को नही समझ सके । आखिर पतराम की बहू ने मौन भग किया 'आइये, देखिए इनका दिमाग खराब हो गया है । ईश्वर ने मुझे कुछ नही दिया । केवल यह दिनेश है जिसको मैं अपना बेटा मानती हूँ । यह मेरा बेटा ही है । यह नाराज हुआ । फिर भी मेरे दिल म कोई फरक नहीं था । अपनी बहू को भी इसने निकाल दिया । खैर ! आज सुबह से ये इसके पीछे लगे थे । बयान दे दे, बयान दे दे ।' क्या बयान है इसके ? मैं नही समझी । एक महीने से इन्होने नाक म दम कर रक्खा है । मैं बीमार रहती ही ह । इनको मेरी परवाह थोडी ही थी । म आई गई करती रही । आज ये दोनो जोर जोर से बोलने लगे । आखिर इन्होने अपनी पिस्तोल सम्भाल ली । जब ये कमरे म लेने गए तब ही मुझे शक हो गया । मैं भी इसके पीछे पीछे आ गई । इन्होने एकदम इसम कारतूस डाल लिया । इतने मे यह सुधा भी आ गई और दिनश के आगे खडी हो गई । मैंने झटके से पिस्तोल इनके हाथ से छीन लिया और गोली चल पडी । ईश्वर की कृपा ऐसी हुई कि गोली छत पर लगी । देखिए, इनकी करतूत । मेरे जीवन के यही दो सूरज और चाँद है । इनको सदा के लिए मिटा रहे थे ये । इतना कहकर पतराम की बहू फूट फूट कर रोने लगी ।

पतराम ने अपनी आँखें ऊँची की और हरीराम के परो पर गिर

या।पतराम की आँखों से आँसू की दो बूँदें गिर पड़ी। 'माफ कर दो मुझे' तराम की आवाज थी। दयालाल ने पतराम को उठाकर अपने गले लगा या।

िनेश ने जब यह कहानी समाप्त की, सुधा भी वहां आ पहुँची। सकी गोद में बच्ची थी और हाथ में थी एक पुस्तक। मैंने बच्ची को नेश की गोद में देते हुए कहा दिनेश अब यह सुधा ही नहीं जननी है नेश, जननी के इस पुष्प को अंगीकार करो।

हवा ने सुधा की पुस्तक 'प्रेमलता' के दो पन्ने उलट दिए। तीसरे ठ पर लिखा था—

भेंट, पुष्पा को।

दिनेश की आँखें डबडबा आई। ये स्नेहसिक्त आंसू पिता के थे। नों की आँखें मिलीं और मुस्कराने लगा।

कुछ दिनों के बाद ही मेरा स्थानान्तरण हो गया। मेरी विदाई के मय दयोलाल और पतराम पुष्पा अतिथि गृह से एक साथ मुझे विदाई ने आए थे। रामसिंह का उसी दिन समाचार आया था कि वह कश्मीर नेफा मोर्चे पर चला गया।

वर्षों से इन प्राणियों से सम्पर्क छूट गया है। समाचार मिलते रहते हैं कि वह बगीचा आज फूलों से सुरभित है। उस समय भेंट में प्राप्त ।मलता अब भी मेरे पास पड़ी है। उसमें एक कविता मुझे बड़ी प्यारी गती है 'नारी, तुम पूजनीय हो क्योंकि तुम जननी हो मानव की। ● ● ●